# साप्ताहिक विधान (लघु)

## ( ग्रहारिष्ट निवारक विधान )

रचयिता :

**प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज**

कृति : साप्ताहिक विधान (लघु)

कृतिकार : प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण : प्रथम 2022, प्रतियाँ : 1000

संकलन : मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोगी : आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी
क्षुल्लिका श्री वात्सल्यभारती माताजी

संपादन : ब्र. ज्योति दीदी – मो.: 9829076085
ब्र. आस्था दीदी – मो.: 9660996425
ब्र. सपना दीदी – मो.: 9829127533

संयोजन : ब्र. आरती दीदी – मो.: 8700876822

प्राप्ति स्थल : 1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, मो.: 9413336017
2. श्री महेन्द्र कुमार जैन, सैक्टर–3 रोहिणी, मो.: 9810570747
3. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी, मो.: 09416888879

पुण्यार्जक :

# विषय सूची


1. नवग्रह शांति के लिये मंत्रजाप 04
2. भक्ति की महिमा 05
3. अंतस् की भावना 06
4. विनय पाठ ( लघु ) 07
5. मंगल पाठ 08
6. मंगल विधान 09
7. पूजा प्रतिज्ञा पाठ 10
8. परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ 11
9. श्री देव शास्त्र गुरु पूजन 12
10. मूलनायक सहित समुच्चय पूजा 16
11. श्री पद्मप्रभु विधान 21
12. श्री पार्श्वनाथ विधान 40
13. श्री चन्द्रप्रभ विधान 60
14. श्री वासुपूज्य विधान 76
15. श्री शांतिनाथ विधान 95
16. श्रीआदिनाथ विधान 111
17. श्री पुष्पदंतनाथ विधान 128
18. श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान 144
19. श्री नेमिनाथ विधान 163
20. श्री महावीर स्वामी पूजा विधान 185
21. लघु णमोकार मंत्र विधान 201
22. श्री लोकमंगल पूजन विधान ( लघु ) 217
23. 24 तीर्थंकर विधान ( लघु ) 231
24. आचार्य श्री विशद सागर जी महाराज पूजन 250
25. समुच्चय महा अर्घ 254
26. शांतिपाठ 255

# नवग्रह शांति के लिये मंत्रजाप

1. सूर्य – ॐ णमो सिद्धाणं।
2. चन्द्र – ॐ णमो अरिहंताणं।
3. मंगल – ॐ णमो सिद्धाणं।
4. बुध – ॐ णमो उवज्झायाणं।
5. बृहस्पति – ॐ णमो आइरियाणं।
6. शुक्र – ॐ णमो अरिहंताणं।
7. शनि – ॐ णमो लोए सव्व साहूणं।
8. केतु – ॐ णमो सिद्धाणं।
9. केतु-राहू – ॐ णमो अरिहंताणं, ॐ णमो सिद्धाणं ॐ णमो आइरियाणं, ॐ णमो उवज्झायाणं ॐ णमो लोए सव्व साहूणं।

---

प्रस्तुत पुस्तक में सप्ताह के सात दिनों में कौनसी पूजा विधान कौन से वार को करना है उसी क्रम से दिया है पुण्य का कोष भरने, पापों का क्षय करते हेतु अधिकाधिक समय प्रभु गुणगान में व्यतीत करें। इसी भावना के साथ प्रभु एवं गुरु चरणों में शत्-शत् नमन।

**– मुनि विशाल सागर**

# भक्ति की महिमा

**नवदेव पूज्यं लोके, पुण्य वर्धन हेतवे।**
**तेषाः आराधनाः कुर्यात्, विशद शैव प्रदायकः॥**

नवदेव लोक में पूज्य माने गये हैं जो पुण्य वृद्धि में हेतु हैं उनकी आराधना विशद मोक्ष प्रदायी है जो अवश्य करने योग्य है। अनादि निधन जैन धर्म में भक्ति को मुक्ति का साधन माना गया है। मुक्ति के दो मार्ग कहे गये हैं – 1 तप मार्ग, 2 भक्ति मार्ग।

वर्तमान के दौर में व्यक्ति स्वयं को दुखी और असहाय मान रहा है इस स्थिति में लोगों के द्वारा प्रतिदिनि के आराध्य जिन निश्चित किए हैं उनके अनुसार लघु विधान करना चाहते हैं उनकी भावनाओं को देखते हुए लघु विधानों की रचना की गई जो लोगों को पसन्द आएगी एवं पूजा भक्ति करके पुण्यार्जन करते हुए विशद जीवन को मंगलमय बना सके इस भावना से प्रस्तुत है यह साप्ताहिक विधान संग्रह जो गुरुवर के आशीर्वाद का प्रसाद है। संघस्थ ब्र. आरती दीदी ने पुस्तक के कंपोजिंग में सहयोग प्रदान किया उनको हमारा मंगलमय आशीर्वाद।

ॐ नमः

**आचार्य विशद सागर**

कौशाम्बी, 4–5–2021

# अंतस् की भावना

**गुरुवर की कृपा जग में सबसे निराली।**
**होली यही, दशहरा यही है दिवाली।।**

भारत एक ऐसा देश है जहाँ हमेशा एक से बढ़कर एक तपोनिष्ठ साधु–संत, ऋषि– महर्षि एवं महापुरुष हुए हैं जिन्होंने भारतीय सांस्कृतिक एवं आचरणात्मक नैतिक मूल्यों की अजस्र धारा निरन्तर प्रवाहित की है। जिनमें अवगाहन कर अनेकों जीवों ने अपने जीवन को सफल बनाया है। ऐसे ही संत–मुनियों में अद्वितीय है परम पूज्य आचार्य श्री विशद सागर की पावन वाणी **सत्यं–शिवं–सुन्दरं** की विराट अभिव्यक्ति तथा मुक्तिद्वार खोलने में सर्वथा सक्षम है।

समस्त लोककल्याण की भावना से युक्त कविहृदय, **क्षमामूर्ति, वात्सल्यरत्नाकर, परमज्ञानी, महायोगी** जो देश की माटी की गरिमा बढ़ा रहे हैं ऐसे अभिवंदनीय, विश्व–वंदनीय गुरुवर के श्री चरणों में कोटिशः नमोस्तु–3

आचार्य श्री के चरणों में अंतिम मनोभावना–

**तेरी छत्रछाया गुरुवर मेरे सिर पर हो।**
**मेरा अंतिम मरण समाधि तेरे दर पर हो।।**

– **ब्र. आरती दीदी**

(संघस्थ–आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज)

# विनय पाठ (लघु)

(दोहा)

पूजा विधि से पूर्व यह, पढ़ें विनय से पाठ।
धन्य जिनेश्वर देवजी, कर्म नशाए आठ।।1।।
शिव वनिता के ईश तुम, पाए केवल ज्ञान।
अनन्त चतुष्टय धारते, देते शिव सोपान।।2।।
पीड़ा हारी लोक में, भव-दधि नाशनहार।
ज्ञायक हो त्रयलोक के, शिवपद के दातार।।3।।
धर्मामृत दायक प्रभो !, तुम हो एक जिनेन्द्र।
चरण कमल में आपके, झुकते विनत शतेन्द्र।।4।।
भविजन को भवसिन्धु में, एक आप आधार।
कर्म बन्ध का जीव के, करने वाले क्षार।।5।।
चरण कमल तव पूजते, विघ्न रोग हों नाश।
भवि जीवों को मोक्ष पथ, करते आप प्रकाश।।6।।
यह जग स्वारथ से भरा, सदा बढ़ाए राग।
दर्श ज्ञान दे आपका, जग को विशद विराग।।7।।
एक शरण तुम लोक में, करते भव से पार।
अतः भक्त बन के प्रभो !, आया तुमरे द्वार।।8।।

# मंगल पाठ

**मंगल अर्हत् सिद्ध जिन, आचार्योपाध्याय संत।**
**धर्मागम की अर्चना, से हो भव का अंत।।1।।**
**मंगल जिनगृह बिम्ब जिन, भक्ती के आधार।**
**जिनकी अर्चा कर मिले, मोक्ष महल का द्वार।।10।।**

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

# अथ पूजा पीठिका

**ॐ जय जय जय। नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।**
**णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,**
**णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।**

ॐ ह्रीं अनादिमूल मंत्रेभ्योनमः। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

**चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो, धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहन्ता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो, धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि शरणं पव्वज्जामि, अरिहंते शरणं पव्वज्जामि, सिद्धे शरणं पव्वज्जामि, साहू शरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं, धम्मं शरणं पव्वज्जामि।**

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

# मंगल विधान

**शुद्धाशुद्ध अवस्था में कोई, णमोकार को ध्याये।**
**पूर्ण अमंगल नशे जीव का, मंगलमय हो जाए।**
**सब पापों का नाशी है जो, मंगल प्रथम कहाए।**
**विघ्न प्रलय विषनिर्विष शाकिनि, बाधा ना रह पाए।**

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

# अर्घ्यावली

**जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल साथ।**
**अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले, पूज रहे जिन नाथ।।**

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान निर्वाण पंच कल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधूभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टाधिक सहस्त्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं श्री द्वादशांगवाणी प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं ढाईद्वीप स्थित त्रिऊन नव कोटि मुनि चरणकमलेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।5।।

# ''पूजा प्रतिज्ञा पाठ''

**अनेकांत स्याद्वाद के धारी, अनन्त चतुष्टय विद्यावान।**
**मूल संघ में श्रद्धालू जन, का करने वाले कल्याण।**
**तीन लोक के ज्ञाता दृष्टा, जग मंगलकारी भगवान।**
**भाव शुद्धि पाने हे स्वामी !, करता हूँ प्रभु का गुणगान।।1।।**
**निज स्वभाव विभाव प्रकाशक, श्री जिनेन्द्र हैं क्षेम निधान।**
**तीन लोकवर्ती द्रव्यों के, विस्तृत ज्ञानी हे भगवान !**
**हे अर्हन्त ! अष्ट द्रव्यों का, पाया मैंने आलम्बन।**
**होकर के एकाग्रचित्त मैं, पुण्यादिक का करूँ हवन।।2।।**

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलि क्षिपामि।

# ''स्वस्ति मंगल पाठ''

**ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनेश।**
**चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजूँ तीर्थेश।।**
**विमलानन्त धर्म शांती जिन, कुन्थु अरह मल्ली दें श्रेय।**
**मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वीर के पद में स्वस्ति करेय।।**

इति श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर स्वस्ति मंगल विधानं
पुष्पांजलिं क्षिपामि।

# "परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ"

**ऋषिवर ज्ञान ध्यान तप करके, हो जाते हैं ऋद्धीवान।**
**मूलभेद हैं आठ ऋद्धि के, चौंसठ उत्तर भेद महान।।**
**बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, जिनको पाके ऋद्धीवान।**
**निस्पृह होकर करें साधना, 'विशद' करें स्व पर कल्याण।।1।।**
**ऋद्धि विक्रिया ग्यारह भेदों, वाले साधू ऋद्धीवान।**
**नौं भेदों युत चारण ऋद्धी, धारी साधू रहे महान।।**
**तप ऋद्धी के भेद सात हैं, तप करते साधू गुणवान।**
**मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारी साधू रहे प्रधान।।2।।**
**भेद आठ औषधि ऋद्धि के, जिनके धारी सर्व ऋशीष।**
**रस ऋद्धी के भेद कहे छह, रसास्वाद शुभ पाए मुनीश।।**
**ऋद्धि अक्षीण महानस एवं, ऋद्धि महालय धर ऋषिराज।**
**जिनकी अर्चा कर हो जाते, सफल सभी के सारे काज।।3।।**

।। इति परमर्षि–स्वस्ति–मंगल–विधानं ।।

**आप्तेन विशदो धर्मः, परोपकृतये शताम्।**
**गम्भीर ध्वनिनाऽ भाषिः, वर्ण मुक्तेन् निस्पृहम्।।**

अर्थ – आप्त ने अपनी गम्भीर वाणी से निर्मल और जीवों के कल्याण हेतु धर्म का स्वरूप भव्य जीवों के कल्याण हेतु कहा है।

# श्री देव शास्त्र गुरु पूजन

स्थापना

**देव-शास्त्र-गुरु पद नमन, विद्यमान तीर्थेश।**
**सिद्ध प्रभु निर्वाण भू, पूज रहे अवशेष।।**

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु, विद्यमान विंशति जिन:, अनन्तानन्त सिद्ध, निर्वाण क्षेत्र समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चाल-छन्द:)

**जल के यह कलश भराए, त्रय रोग नशाने आए।**
**हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।1।।**

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नम: जलं निर्व. स्वाहा।

**शुभ गंध बनाकर लाए, भवताप नशाने आए।**
**हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।2।।**

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नम: चंदनं निर्व. स्वाहा।

**अक्षत हम यहाँ चढ़ाएँ, अक्षय पदवी शुभ पाएँ।**
**हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।3।।**

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नम: अक्षतं निर्व. स्वाहा।

**सुरभित ये पुष्प चढ़ाएँ, रुज काम से मुक्ती पाएँ।**
**हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।4।।**

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नम: पुष्पं निर्व. स्वाहा।

पावन नैवेद्य चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।5।।
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।
घृत का ये दीप जलाएँ, अज्ञान से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।6।।
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः दीपं निर्व. स्वाहा।
अग्नी में धूप जलाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।7।।
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः धूपं निर्व. स्वाहा।
ताजे फल यहाँ चढ़ाएँ, शुभ मोक्ष महाफल पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।8।।
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः फलं निर्व. स्वाहा।
पावन ये अर्घ्य चढ़ाएँ, हम पद अनर्घ्य प्रगटाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।9।।
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
दोहा- शांती धारा कर मिले, मन में शांति अपार।
अतः भाव से आज हम, देते शांती धार।।
।। शांतये शांतिधारा ।।
दोहा- पुष्पांजलि करते यहाँ,लिए पुष्प यह हाथ।
देव शास्त्र गुरु पद युगल, झुका रहे हम माथ।।
।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

# अर्घ्यावली

(दोहा)

**दोष अठारह से रहित, प्रभु छियालिस गुणवान।**
**देव श्री अर्हन्त का, करते हम गुणगान।।1।।**

ॐ ह्रीं षट् चत्त्वारिंशत् गुण विभूषित अष्टादश दोष रहित श्री अरिहंत सिद्ध जिनेन्द्राय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**श्री जिन के सर्वांग से, खिरे दिव्य ध्वनि श्रेष्ठ।**
**द्वादशांग मय पूजते, लेकर अर्घ्य यथेष्ठ।।2।।**

ॐ ह्रीं श्रीजिन मुखोद्भूत सरस्वती देव्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**विषयाशा त्यागी रहे, ज्ञान ध्यान तपवान।**
**संगारम्भ विहीन पद, करें विशद गुणगान।।3।।**

ॐ ह्रीं श्री आचार्य उपाध्याय साधु परमेष्ठी चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**बीस विदेहों में रहें, विहरमान तीर्थेश।**
**भाव सहित हम पूजते, लेकर अर्घ्य विशेष।।4।।**

ॐ ह्रीं श्री विहरमान विंशति तीर्थंकरेभ्यो नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अष्ट कर्म को नाशकर, के होते हैं सिद्ध।**
**पूज रहे हम भाव से, जो हैं जगत् प्रसिद्ध।।5।।**

ॐ ह्रीं श्री अनन्तानन्त सिद्धेभ्यो नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तीन लोक में जो रहे, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।**
**जिनकी अर्चा भाव से, करते यहाँ महान।।6।।**

ॐ ह्रीं सर्व निर्वाण क्षेत्रेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

# जयमाला

**दोहा - देव-शास्त्र-गुरु के चरण, वन्दन करें त्रिकाल।**
**'विशद' भाव से आज हम, गाते हैं जयमाल।।**

(तामरस-छन्द)

**जय-जय-जय अरहंत नमस्ते, मुक्ति वधू के कंत नमस्ते।**
**कर्म घातिया नाश नमस्ते, केवलज्ञान प्रकाश नमस्ते।।1।।**
**जगती पति जगदीश नमस्ते, सिद्ध शिला के ईश नमस्ते।**
**वीतराग जिनदेव नमस्ते, चरणों विशद सदैव नमस्ते।।2।।**
**विद्यमान तीर्थेश नमस्ते, श्री जिनेन्द्र अवशेष नमस्ते।**
**जिनवाणी ॐकार नमस्ते, जैनागम शुभकार नमस्ते।।3।।**
**वीतराग जिन संत नमस्ते, सर्वसाधु निर्ग्रन्थ नमस्ते।**
**अकृत्रिम जिनबिम्ब नमस्ते, कृत्रिम जिन प्रतिबिम्ब नमस्ते।।4।।**
**दर्श ज्ञान चारित्र नमस्ते, धर्म क्षमादि पवित्र नमस्ते।**
**तीर्थ क्षेत्र निर्वाण नमस्ते, पावन पंचकल्याण नमस्ते।।5।।**
**अतिशय क्षेत्र विशाल नमस्ते, जिन तीर्थेश त्रिकाल नमस्ते।**
**शाश्वत तीरथराज नमस्ते, 'विशद' पूजते आज नमस्ते।।6।।**

**दोहा – अर्हतादि नव देवता, जिनवाणी जिन संत।**
**पूज रहे हम भाव से, पाने भव का अंत।।**

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**दोहा – देव-शास्त्र-गुरु पूजते, भाव सहित जो लोग।**
**ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य पा, पावें शिव का योग।।**

।। इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)।।

# मूलनायक सहित समुच्चय पूजा

स्थापना (दोहा)

**देव शास्त्र गुरु देव नव,विद्यमान जिन सिद्ध।**
**कृत्रिमा-कृत्रिम बिम्ब जिन, भू निर्वाण प्रसिद्ध।।**
**सहस्त्रनाम दशधर्म शुभ, रत्नत्रय णमोकार।**
**सोलह कारण का हृदय, आह्वानन् शत बार।।**

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व देव शास्त्र गुरु, नवदेवता, तीस चौबीसी विद्यमान विंशति जिन, पंचमेरु, नन्दीश्वर, त्रिलोक सम्बन्धी, कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, सहस्त्रनाम, सोलह कारण, दशलक्षण, रत्नत्रय, णमोकार, निर्वाण क्षेत्रादि समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(सखी-छन्द:)

**यह निर्मल नीर चढ़ाएँ, जन्मादिक रुज विनशाएँ।**
**देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।1।।**

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय जलं निर्व.स्वाहा।

**सुरभित यह गंध चढ़ाएँ, भव सागर से तिर जाएँ।**
**देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।2।।**

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय चंदनं निर्व.स्वाहा।

**अक्षत के पुंज चढ़ाएँ, शाश्वत अक्षय पद पाएँ।**
**देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।3।।**

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय अक्षतान् निर्व.स्वाहा।

**पुष्पित हम पुष्प चढ़ाएँ, कामादिक दोष नशाएँ।**
**देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।4।।**

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय पुष्पं निर्व.स्वाहा।

**चरु यह रसदार चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।**
**देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।5।।**

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

**रत्नोंमय दीप जलाएँ, हम मोह तिमिर विनशाएँ।**
**देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।6।।**

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय दीपं निर्व.स्वाहा।

**सुरभित यह धूप जलाएँ, कर्मों से मुक्ती पाएँ।**
**देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।7।।**

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय धूपं निर्व.स्वाहा।

**फल ताजे शिव फलदायी, हम चढ़ा रहे हैं भाई।**
**देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।8।।**

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय फलं निर्व.स्वाहा।

**यह पावन अर्घ्य चढ़ाएँ, अनुपम अनर्घ्य पद पाएँ।**
**देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।9।।**

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

**दोहा – शांती पाने के लिए, देते शांती धार।**
**हमको भी निज सम करो, कर दो यह उपकार।।**

(शांतये शांतिधारा)

**दोहा – पुष्पांजलि करते यहाँ, लेकर पावन फूल।**
**विशद भावना है यही, कर्म होंय निर्मूल।।**

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

# जयमाला

**दोहा – जैन धर्म जयवंत है, तीनों लोक त्रिकाल।**
**गाते जैनाराध्य की, भाव सहित जयमाल।।**

(ज्ञानोदय छन्द)

**अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन।**
**जैन धर्म जिन चैत्य जिनालय, जैनागम का है अर्चन।।1।।**
**भरतैरावत ढाई द्वीप में, तीन काल के जिन तीर्थेश।**
**पंच विदेहों के तीर्थंकर, पूज रहे हम यहाँ विशेष।।2।।**
**स्वर्ग लोक में और ज्योतिषी, देवों के जो रहे विमान।**
**भावन व्यन्तर के गेहों में, रहे जिनालय महति महान।।3।।**
**मध्य लोक में मेरु कुलाचल, गिरि विजयार्ध है इष्वाकार।**
**रजताचल मानुषोत्तर गिरि तरु, नन्दीश्वर हैं मंगलकार।।4।।**
**रुचक सुकुण्डल गिरि पे जिनगृह, सिद्ध क्षेत्र जो हैं निर्वाण।**
**सहस्त्रकूट शुभ समवशरण जिन, मानस्तंभ हैं पूज्य महान।।5।।**
**उत्तम क्षमा मार्दव आदिक, बतलाए दश धर्म विशेष।**
**रत्नत्रय युत धर्म ऋद्धियाँ, सहसनाम पावें तीर्थेश।।6।।**

**दोहा – सोलह कारण भावना, और अठाई पर्व।**
**पंच कल्याणक आदि हम, पूज रहें हैं सर्व।।**

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक 1008 श्री ...........सहित वर्तमान भूत भविष्यत सम्बन्धी पंच भरत, पंच ऐरावत, पंच विदेह क्षेत्रावस्थित सर्व तीर्थंकर, नवदेवता, मध्य ऊर्ध्व एवं अधोलोक, नन्दीश्वर, पंचमेरु सम्बन्धित कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, गर्भ जन्म तप केवलज्ञान निर्वाण भूमि, तीर्थ क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, दशलक्षण, सोलहकारण, रत्नत्रयादि धर्म, ढाई द्वीप स्थित तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिवरेभ्यो सम्पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा - जिनाराध्य को पूजकर, पाना शिव सोपान।
यही भावना है विशद, पाएँ पद निर्वाण।।

(इत्याशीर्वाद: पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

# देव–शास्त्र–गुरु की आरती

(तर्ज - ॐ जय देव.....)

ॐ जय देव शास्त्र गुरुवर, स्वामी देव शास्त्र गुरुवर।
आरती करें तुम्हारी-2, दीपक शुभ लेकर।।
ॐ जय देव शास्त्र।। टेक।।

प्रथम आरती देवश्री जो, अर्हत् कहलाए-स्वामी...।
सिद्ध श्री लोकाग्र निवासी-2, परम शुद्ध गाए।।
ॐ जय..... ।।1।।

जिनवाणी कल्याणी है जो, जग माता गाई-स्वामी...।
पढ़ें सुने ध्याने वाले की-2, बुद्धि बढ़े भाई।।
ॐ जय..... ।।2।।

आचार्योपाध्याय साधु दिगम्बर, गुरुवर कहलाए-स्वामी...।
मोक्ष मार्ग के राही अनुपम, गुरुवर ये गाए।।
ॐ जय..... ।।3।।

देव शास्त्र गुरु की जो प्राणी, आरति यह गाए-स्वामी...।
'विशद' सौख्य पाके इस जग के-2, शिव पथ अपनाए।।
ॐ जय..... ।।4।।

# श्री पद्मप्रभु विधान

## माण्डला

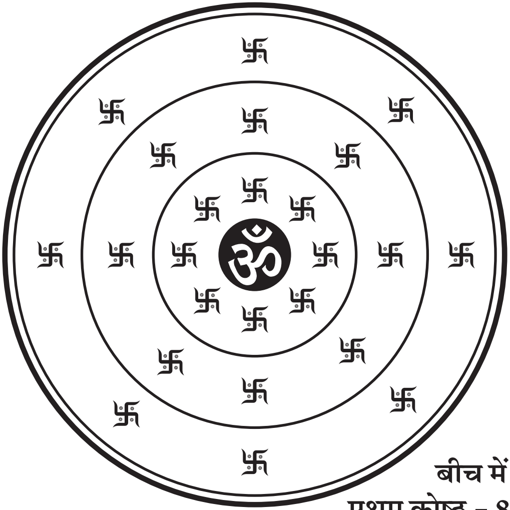


बीच में – ॐ
प्रथम कोष्ठ – 8 अर्घ्य
द्वितीय कोष्ठ – 8 अर्घ्य
तृतीय कोष्ठ – 8 अर्घ्य
कुल – 24 अर्घ्य

रचयिता :

प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

# पद्मप्रभु स्तवन

कौशाम्बी नगरे जातः, सुसीमा नन्दनो जिनः।
पद्म चिन्ह पदं ज्ञेयं, पद्मप्रभ जिनेश्वरं।।1।।

(छन्द इन्द्रवज्रा)

श्री देव देवो पदपुंडरीकः, श्रियं विधत्तात्सुख शांति रूपम्।
यं प्राप्य भव्या अति दुर्लभं तं, गच्छन्ति पारं भवदुःख वार्धेः।।2।।

संसार सौख्याय जलांजली यो, दत्त्वा च त्यक्त्वा सुख राज्य भोगम्।
कृत्त्वा तपस्-तीव्रतरं प्रदीप्तं, कर्माणि चोद्पद्य जगाम प्रमोक्षम्।।3।।

नक्षत्रवृंदैः समुपास्यमानः, विभ्राजते पूर्णकलः शशीव।
धर्मामृतैः सिंचति भव्यजीवान्, पद्मजिनं पद्मप्रभ स्तुवे तं।।4।।

अनन्त संसार पारं पराणां, विध्वंसकं सौख्यकरं नराणां।
श्री पद्मनाथं करुणा निधानं, वन्देऽहमष्टापद सन्निभाय।।5।।

वंदितोसि साधु वृन्द, पूज्यपादः सुरासुरैः।
'विशद' ज्ञान परिप्राप्य, पद्मप्रभ सुपूजिताः।।6।।

# श्री पद्मप्रभु पूजा विधान

स्थापना

**भूतप्रेत शाकिन डाकिन की, बाधाओं का हो अवशान।**
**वृद्धी हो व्यापार में धन की, होय क्लेश का पूर्ण निदान।।**
**वृद्धी होय ज्ञान में अतिशय, शांतीमय होवे परिवार।**
**सेवा मिले नौकरी इच्छित, विघ्न पूर्णतः होवें छार।।**

**दोहा - पद्मप्रभ का कर रहे, भाव सहित गुणगान।**
**मनोकामना पूर्ण हो, करते हम आह्वान।।**

ॐ ह्रीं सर्व आधि व्याधि विनाशक लोकोपकारी श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(ज्ञानोदय-छन्दः)

**जल तन की प्यास बुझाता है, चेतन की प्यास न बुझ पाए।**
**है विशद ज्ञान की प्यास मुझे, वह ज्ञान प्रकट अब हो जाए।।**
**जो जल में कमल समान रहे, श्री पद्म प्रभु है जिन का नाम।**
**भाव सहित जिन अर्चा करके, करते बारम्बार प्रणाम।।1।।**

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**संसार ताप में जले सदा, घेरे रहती हैं चिन्ताएँ।**
**अब पूज रहे हम गंध बना, उनसे अब हम मुक्ती पाएँ।।**

जो जल में कमल समान रहे, श्री पद्म प्रभु है जिन का नाम।
भाव सहित जिन अर्चा करके, करते बारम्बार प्रणाम।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

मन को भाती है उज्ज्वलता, पर कर्म किए हमने काले।
जिन पूजा आतम धवल करे, टूटें सब कर्मों के जाले।।
जो जल में कमल समान रहे, श्री पद्म प्रभु है जिन का नाम।
भाव सहित जिन अर्चा करके, करते बारम्बार प्रणाम।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मदहोश करे पावन मन को, चेतन जागृत ना होती है।
पुष्पों की गंध नाशिका को, सुख दे कर्मों को खोती है।।
जो जल में कमल समान रहे, श्री पद्म प्रभु है जिन का नाम।
भाव सहित जिन अर्चा करके, करते बारम्बार प्रणाम।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

खाने पीने की चाह सदा, जीवों के मन में रहती है।
जिन पूजा करके तृप्ती हो, माँ जिनवाणी यह कहती है।।
जो जल में कमल समान रहे, श्री पद्म प्रभु है जिन का नाम।
भाव सहित जिन अर्चा करके, करते बारम्बार प्रणाम।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उजयारे रवि शशि बिजली के, ये सब ही तम को हरते हैं।
भव दीप जला पूजा करके, चैतन्य प्रकाशित करते हैं।।

जो जल में कमल समान रहे, श्री पद्म प्रभु है जिन का नाम।
भाव सहित जिन अर्चा करके, करते बारम्बार प्रणाम।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जड़ कर्म कर्म के हितकारी, कर्मों का जोर चलाते हैं।
चेतन जागृत जब हो जाए, तो कर्मों से बच जाते हैं।।
जो जल में कमल समान रहे, श्री पद्म प्रभु है जिन का नाम।
भाव सहित जिन अर्चा करके, करते बारम्बार प्रणाम।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम पूजा करते चाह लिए, निस्वार्थ भक्ति ना होती है।
हो मुक्ती पद की चाह विशद, जो सर्व दुखों को खोती है।।
जो जल में कमल समान रहे, श्री पद्म प्रभु है जिन का नाम।
भाव सहित जिन अर्चा करके, करते बारम्बार प्रणाम।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं अष्ट कर्म सब दुखदायी, उनसे सम्बन्ध बनाए हैं।
अब मुक्ती पाने को उनसे, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।
जो जल में कमल समान रहे, श्री पद्म प्रभु है जिन का नाम।
भाव सहित जिन अर्चा करके, करते बारम्बार प्रणाम।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दोहा – शांती धारा दे रहे, विनय भाव के साथ।**
**विशद भावना भा रहे, बनें श्री के नाथ।।**

(शान्तये शान्तिधारा)

**दोहा – पुष्पांजलि करते यहाँ, पाने मुक्ती धाम।**
**होवे पूरी कामना, करते चरण प्रणाम।।**

(दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

# पंचकल्याणक के अर्घ्य

चौपाई

**गर्भ चिन्ह माँ के उर आये, देव रत्न वृष्टी करवाए।**
**माघ कृष्ण षष्ठी शुभ गाई, उत्सव देव किए सुखदायी।।1।।**

ॐ ह्रीं माघकृष्णा षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कार्तिक शुक्ल त्रयोदशि पाए, सुर नर इन्द्र सभी हर्षाए।**
**जन्मोत्सव मिल इन्द्र मनाए, आनन्दोत्सव श्रेष्ठ कराए।।2।।**

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्ला त्रयोदश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कार्तिक सुदि तेरस शुभकारी, संयम धार हुए अनगारी।**
**मन में प्रभु वैराग्य जगाए, जग जंजाल छोड़ वन आए।।3।।**

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ला त्रयोदश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चैत शुक्ल की पूनम पाए, विशद ज्ञान प्रभु जी प्रगटाए।**
**धर्म देशना आप सुनाए, इस जग को सत्पथ दिखलाए।।4।।**

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला पूर्णिमायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**फाल्गुन शुक्ल चतुर्थी भाई, के दिन प्रभु ने मुक्ती पाई।**
**अपने सारे कर्म नशाए, तज संसार वास शिव पाए।।5।।**

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्ण चतुर्थ्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

# जयमाला

**दोहा - पद्म प्रभु भगवान का, गाए जो यशगान।**
**पाए जग के सौख्य वह, अन्त होय कल्याण।।**

(नयनमालिनी-छन्द)

**पदमप्रभु जिनराज नमस्ते, सिद्ध शिला के ताज नमस्ते।**
**तीर्थंकर अखलेश नमस्ते, वीतराग परमेश नमस्ते।।**
**नगर कौशाम्बी रत्न बरसते, नर नारी मन खूब हरसते।**
**गर्भ पूर्व छह माह नमस्ते, प्रभु करुणा की छाँह नमस्ते।।**
**श्रीधर नृप के द्वार नमस्ते, हुए मंगलाचार नमस्ते।**
**जन्मे श्री जिनदेव नमस्ते, स्वर्ग से आये देव नमस्ते।।**
**मात सुसीमा श्रेष्ठ नमस्ते, गर्भ में आए यथेष्ठ नमस्ते।**
**संगारम्भ विहीन नमस्ते, निज गुणमय स्वाधीन नमस्ते।।**

ग्रैवेयक अवतार नमस्ते, कुगति अशुभ क्षयकार नमस्ते।
मनुज सुगति शुभकार नमस्ते, उत्तम संयम धार नमस्ते।।
चउ आराधन वान नमस्ते, किए कर्म की हान नमस्ते।
अष्टम भू अधिराज नमस्ते, अष्ट गुणों के ताज नमस्ते।।
केवल ब्रह्म प्रकाश नमस्ते, सर्व चराचर भास नमस्ते।
मुक्ति रमापति वीर नमस्ते, हर्त्ता भव भय धीर नमस्ते।

दोहा – पद्म समान हैं जिन प्रभु, पद्मप्रभु है नाम।
हमको भी निज सम करो, शत्-शत् बार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – पद्मप्रभु के चरण की, भक्ति करूँ कर जोड़।
हरी भरी खुशहाल हो, धरती चारों ओर।।

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

# प्रथम वलयः

दोहा – बीजाक्षर जग पूज्य हैं, प्रातिहार्य संयुक्त।
भाव सहित ध्यायें विशद, हों कर्मों से मुक्त।।

।। अथ प्रथम वलयोस्परि पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

## अष्ट प्रातिहार्य बीजाक्षर

चाल छन्द

हं बीजाक्षर मन भाए, स्व वर्ग में प्राणी ध्याये।
निज आतम ध्यान लगाए, श्री जिन की महिमा गाए।।1।।

ॐ ह्रीं ह्म्ल्व्र्यूं बीज मंडित श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**भं बीजाक्षर मनहारी, स्व वर्ग युक्त शुभकारी।**
**निज आतम ध्यान लगाए, श्री जिन की महिमा गाए।।2।।**
ॐ ह्रीं भ्म्ल्व्र्यूं बीज मंडित श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
**मं बीजाक्षर शुभ जानो, स्व वर्ग युक्त शुभ मानो।**
**निज आतम ध्यान लगाए, श्री जिन की महिमा गाए।।3।।**
ॐ ह्रीं म्म्ल्व्र्यूं बीज मंडित श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
**रं पिण्डाक्षर को ध्यायें, निज में निज गुण प्रगटाएँ।**
**निज आतम ध्यान लगाए, श्री जिन की महिमा गाए।।4।।**
ॐ ह्रीं र्म्ल्व्र्यूं बीज मंडित श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
**घं पिण्डाक्षर शुभ ध्याए, स्व वर्ग युक्त मन भाए।**
**निज आतम ध्यान लगाए, श्री जिन की महिमा गाए।।5।।**
ॐ ह्रीं घ्म्ल्व्र्यूं बीज मंडित श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
**झं पिण्डाक्षर अतिशायी, स्व वर्ग युक्त शुभ भाई।**
**निज आतम ध्यान लगाए, श्री जिन की महिमा गाए।।6।।**
ॐ ह्रीं झ्म्ल्व्र्यूं बीज मंडित श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
**सं बीजाक्षर शुभकारी, स्व वर्ग युक्त शिवकारी।**
**निज आतम ध्यान लगाए, श्री जिन की महिमा गाए।।7।।**
ॐ ह्रीं स्म्ल्व्र्यूं बीज मंडित श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
**खं बीजाक्षर शिवदायी, स्ववर्ग में ध्याएँ भाई।**
**निज आतम ध्यान लगाए, श्री जिन की महिमा गाए।।8।।**
ॐ ह्रीं ख्म्ल्व्र्यूं बीज मंडित श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**हं बीजाक्षरादिक गाए, वसु स्व वर्णों में ध्याये।**
**निज आतम ध्यान लगाए, श्री जिन की महिमा गाए।।9।।**

ॐ ह्रीं अष्ट प्रातिहार्य युक्त अष्ट बीज मण्डित सर्वविघ्न विनाशक श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

# द्वितिय वलयः

**दोहा – अष्ट कर्म को नाश कर, कार्य करें सब सिद्ध।**
**पाने को हम आठ गुण, पूजें जगत प्रसिद्ध।।**

।। अथ द्वितिय वलयोस्परि पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

## अष्टकर्म रहित अष्टगुण युक्त श्री जिन

चौपाई

**प्रभु ज्ञानावरणी नाशे, फिर केवल ज्ञान प्रकाशे।**
**हम जिन पद पूज रचाएँ, फिर शिव पदवी को पाएँ।।1।।**

ॐ ह्रीं केवलज्ञान गुण सहित श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**प्रभु दर्शनावरण विनाशे, फिर केवल दर्श प्रकाशे।**
**हम जिन पद पूज रचाएँ, फिर शिव पदवी को पाएँ।।2।।**

ॐ ह्रीं केवलदर्शन गुण सहित श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**प्रभु वेदनीय के नाशी, सुख अव्याबाध प्रकाशी।**
**हम जिन पद पूज रचाएँ, फिर शिव पदवी को पाएँ।।3।।**

ॐ ह्रीं अव्याबाध गुण सहित श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**प्रभु मोहनीय के नाशी, हैं सुख अनन्त के वासी।**
**हम जिन पद पूज रचाएँ, फिर शिव पदवी को पाएँ।।4।।**

ॐ ह्रीं अनन्तसुख गुण सहित श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**प्रभु आयू कर्म विनाशे, गुण अवगाहनत्व प्रकाशे।**
**हम जिन पद पूज रचाएँ, फिर शिव पदवी को पाएँ।।5।।**

ॐ ह्रीं अवगाहनत्व गुण सहित श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**हैं नाम कर्म के नाशी, सूक्ष्मत्व सुगुण के वासी।**
**हम जिन पद पूज रचाएँ, फिर शिव पदवी को पाएँ।।6।।**

ॐ ह्रीं सूक्ष्मत्व गुण युक्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**प्रभु गोत्र कर्म विनशाए, अवगाहन गुण प्रगटाए।**
**हम जिन पद पूज रचाएँ, फिर शिव पदवी को पाएँ।।7।।**

ॐ ह्रीं अगुरु-लघुत्व गुणयुक्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**प्रभु अन्तराय के नाशी, हैं बल अनन्त के वासी।**
**हम जिन पद पूज रचाएँ, फिर शिव पदवी को पाएँ।।8।।**

ॐ ह्रीं वीर्यानन्त गुण युक्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**प्रभु अष्ट कर्म विनशाए, जो सुगुण अष्ट प्रगटाए।**
**हम जिन पद पूज रचाएँ, फिर शिव पदवी को पाएँ।।9।।**

ॐ ह्रीं अष्ट कर्म विनाशकाय सम्यक्त्वादि अष्ट सिद्ध गुण समन्विताय पद्मप्रभु जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

# तृतिय वलयः

**सोरठा – सर्व विघ्न हों दूर, श्री जिन की अर्चा किए।**
**सुख मय हो भरपूर, जीवन शांतीमय बने।।**

।। अथ तृतिय वलयोस्परि पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

## अरिष्ट निवारक श्री जिन के अर्घ्य

चौपाई

**मन वच तन के पड़े हैं फेरे, अतः कर्म रहते हैं घेरे।**
**भाव सहित हम प्रभु को ध्याएँ, विघ्नों को जो दूर भगाएँ।।1।।**

ॐ ह्रीं संसार दुःख नाशक श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**कर्मोदय ने हमको घेरा, दरिद्रता ने डाला डेरा।**
**भाव सहित हम प्रभु को ध्याएँ, विपदाओं से मुक्ती पाएँ।।2।।**

ॐ ह्रीं सर्व दरिद्रता नाशक श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**कर्मोदय में खोटे आएँ, जलोदरादिक रोग सताएँ।**
**भाव सहित हम प्रभु को ध्याएँ, विपदाओं से मुक्ती पाएँ।।3।।**

ॐ ह्रीं जलोदरादिक रोग नाशक श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

**टी.बी. शुगर आदि बीमारी, सदा सताए सबको भारी।**
**भाव सहित हम प्रभु को ध्याएँ, विपदाओं से मुक्ती पाएँ।।4।।**

ॐ ह्रीं क्षयरोग-शुगर-कैंसारादि सर्व भयंकर रोगनाशक
श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**नेत्र कर्ण के रोग कहाए, भारी उनसे सदा सताए।**
**भाव सहित हम प्रभु को ध्याएँ, विपदाओं से मुक्ती पाएँ।।5।।**

ॐ ह्रीं नेत्र कर्णादि सर्व रोग नाशक श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वात्त पित्त ज्वर आदिक भाई, रहे लोक में ये दुखदायी।**
**भाव सहित हम प्रभु को ध्याएँ, विपदाओं से मुक्ती पाएँ।।6।।**

ॐ ह्रीं वात, पित्त, कफ, जलोदर, उदरादि सर्व रोग नाशक श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जल थल नभचर प्राणी भाई, कृत उपसर्ग रहे दुखदायी।**
**भाव सहित हम प्रभु को ध्याएँ, विपदाओं से मुक्ती पाएँ।।7।।**

ॐ ह्रीं तिर्यंच कृत उपद्रव नाशक श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पिता पुत्र भाई जो गाए, राग द्वेष कर सभी सताए।**
**भाव सहित हम प्रभु को ध्याएँ, विपदाओं से मुक्ती पाएँ।।8।।**

ॐ ह्रीं कुटुम्ब दु:ख क्लेश नाशक श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**विघ्न विनाशी हैं जिन स्वामी, तीन लोक में अन्तर्यामी।**
**भाव सहित हम प्रभु को ध्याएँ, विपदाओं से मुक्ती पाएँ।।9।।**

ॐ ह्रीं सर्वविघ्नविनाशक श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जाप्य :- ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ देवाय नमः मम सर्वकार्य
सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

# जयमाला

दोहा – पद्म प्रभ जिन पद युगल, वन्दन मेरा त्रिकाल।
भव क्रन्दन हो नाश मम, गाते हैं जयमाल।

(ताटक छन्द)

जय पद्मप्रभ जिन चंद वरं, जय ज्ञान पयोदधि पूर्ण करं।
भव सागर तारक पोत वरं, जय अष्ट कर्म मद–चूर करं।।1।।
दुख गिरि के भंजक वज्र समं, तुम तन मन रंजन हे निरुपम !।
तव समवशरण शुभकार परं, असि कर्म विनाशन सुष्ठु सरं।।2।।
जहाँ अष्ट भूमियाँ स्थित हैं, जो कनक स्वर्णमय निर्मित हैं।
जहाँ नील सुमणि की पीठ रही, जो चूड़ी सदृश गोल कही।।3।।
जहाँ तोरण द्वार सु राजत हैं, जहँ मानस्तंभ विराजत हैं।
शुभ चैत्य भूमि पहली गाई, जिन चैत्यों संयुत बतलाई।।4।।
है भूमि खातिका में खाई, जहाँ चित्र शोभते अतिशाई।
है लता भूमि अतिशयकारी, जहाँ फूल खिले हों मनहारी।।5।।
उपवन भू में वन चार कहे, जिन चैत्य वृक्ष में शोभ रहे।
ध्वज भूमी में ध्वज फहराएँ, मानो जिनकी महिमा गाएँ।।6।।
सुर वृक्ष भूमि शुभ फलदाई, जिनबिम्ब रहें जहाँ अतिशायी।
है भवन भूमि अतिशय प्यारी, जो सोहे अनुपम मनहारी।।7।।
फिर आगे अष्टम भूमि रही, जो द्वादश सभा संयुक्त कही।
है गंध कुटी रचना विशेष, जहाँ अधर शोभते हैं जिनेश।।8।।

शुभ दिव्य देशना हो महान, नत हो गणधर झेलें प्रधान।
ॐकार मयी जो है विशेष, जो हरण हार जग का क्लेश।।9।।

दोहा – जल में रहें जल से विशद, भिन्न रूप मनहार।
पद्मप्रभु संसार में, रहे स्वयं अविकार।।

ॐ ह्रीं सर्वविघ्नविनाशक श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – पद्म चिन्ह से शोभते, रंग है पद्म समान।
पूज्य हुए संसार में, करते हम गुणगान।।

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

# श्री पद्मप्रभु चालीसा

दोहा – अर्हत्-सिद्धाचार्य गुरु, उपाध्याय जिन संत।
जिनकी अर्चा कर मिले, भवसागर का अंत।।
तीर्थंकर श्री पद्मप्रभु, का करके शुभ ध्यान।
चालीसा पढ़ते विशद, पाने पद निर्वाण।।

चौपाई

जय श्री पद्म प्रभु गुणधारी, आप जगत में मंगलकारी।।1।।
पिता धरण के राजदुलारे, मात सुसीमा के हो प्यारे।।2।।
कौशाम्बी नगरी शुभकारी, जन्मे जिस भू पे त्रिपुरारी।।3।।
ढाई शतक धनु ऊँचे गाये, लाल वर्ण सुन्दर तन पाये।।4।।

छठवें तीर्थंकर कहलाए, पंच कल्याणक इन्द्र मनाए।।5।।
चार घातिया कर्म नशाए, तत्क्षण केवल ज्ञान जगाए।।6।।
हो सर्वज्ञ ज्ञान प्रगटाया, सद् उपदेश जगत ने पाया।।7।।
छियालिस मूल गुणों के धारी, आप हुए जग-जन हितकारी।।8।।
धनद इन्द्र वहाँ पर आया, सुन्दर समवशरण बनवाया।।9।।
द्वादश धर्म सभा अति प्यारी, धनपति इन्द्र रचा मनहारी।।10।।
जन्म जात बैरी जहाँ आए, बैर छोड़ मैत्री अपनाए।।11।।
तीस हजार तीन लख जानो, समवशरण में साधू मानो।।12।।
बीस हजार चार लख भाई, आर्यिकाओं की संख्या गाई।।13।।
एक सौ दश गणधर बतलाए, वज्र चँमर पहले कहलाए।।14।।
सुर-नर पशु त्रय गति के प्राणी, आकर सुनते हैं जिनवाणी।।15।।
कोई सद् श्रद्धान जगाते, कोई देश व्रतों को पाते।।16।।
कोई मुनि की दीक्षा पाते, कोई केवल ज्ञान जगाते।।17।।
क्षायिक नव लब्धी के धारी, पाके होते शिव भरतारी।।18।।
अपने सारे कर्म नशाते, फिर वे शिव पदवी को पाते।।19।।
प्रभु सम्मेद शिखर को आए, मोहन कूट से शिव पद पाए।।20।।
दुखिया दर पे दुःख मिटावें, निर्धन धन इच्छित फल पावें।।21।।
नाम आपका संकट हारी, ध्यान जाप है मंगलकारी।।22।।
भूत प्रेत व्यन्तर बाधाएँ, शाकिन डाकिन की पीड़ाएँ।।23।।
पर कृत मंत्र तन्त्र दुखकारी, मिट जाती है पीड़ा सारी।।24।।
कर्म असाता उदय में आए, कोई असाध्य बीमारी पाए।।25।।

केन्सर हृदय रोग हो भारी, फैली हो दुर्दम दुर्भारी।।26।।
जल वृष्टी हो प्रलय मचाए, या दुष्काल भयानक आए।।27।।
ज्ञान योग में बाधा आए, विद्याभ्यास भी ना हो पाए।।28।।
यश मिलते-मिलते रह जाए, रविग्रह पीड़ा सतत सताए।।29।।
किया परिश्रम निष्फल जाए, रोजगार भी ना चल पाए।।30।।
राजा मंत्री आदि सतावें, कर्मचारी भी दुख पहुचावें।।31।।
पद्मप्रभु पद पूज रचावें, भाव सहित चालीसा गावें।।32।।
सब कष्टों से मुक्ती पावें, सुख शांती सौभाग्य जगावें।।33।।
वास्तु दोष की हों बाधाएँ, ज्योतिष आदिक की पीड़ाएँ।।34।।
सुर-नर पशु कृत बैर कहाए, उनसे पूजा मुक्ति दिलाए।।35।।
यात्रा वाहन कृत बैर कहाए, उनसे पूजा मुक्ति दिलाए।।36।।
अनायास ही यदि सताएँ, नाश होय जिन प्रभु को ध्याएँ।।37।।
जगह जगह जिन मंदिर जानो, नगरी में जिन मंदिर मानो।।38।।
बाड़ा के पद्मप्रभु गाए, अतिशय जो कई एक दिखाए।।39।।
पद्मप्रभु हैं संकटहारी, जिनके पद में ढोक हमारी।।40।।

दोहा - चालीसा चालीस दिन, पढ़ें पढ़ाएँ जीव,
पद्मप्रभु के चरण में, जागे पुण्य अतीव।
रोग-शोक दुख दूर हों, और पाप का नाश,
जीवन हो सुख शांतिमय, विशद पूर्ण हो आश।।

जाप्य :- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय नमः।

# आरती

ॐ जय पदम् प्रभु देवा !, स्वामि पदम् प्रभु देवा।
तीर्थंकर श्री पदम्प्रभु की, करते हम सेवा।।
ॐ जय पदम्प्रभु देवा।। टेक।।
माघ कृष्ण षष्ठी को माँ के,
गर्भ में प्रभु आए-स्वामी गर्भ में प्रभु आए।
कार्तिक सुदि तेरस को-2,जन्म आप पाए।।.... ।।1 ।।
मात सुसीमा धरण सेन नृप,
के गृह में आए-स्वामी के गृह में आए।
कौशाम्बी नगरी अनुपम शुभ-2, पावन कहलाए।।.... ।।2 ।।
गजबन्धन को देख प्रभुजी,
मन वैराग्य लिए- स्वामी मन वैराग्य लिए।
कार्तिक सुदि तेरस को-2, दीक्षा ग्रहण किए।।.... ।।3 ।।
चैत्र शुक्ल पूनम को,
विशद ज्ञान पाए-स्वामी विशद ज्ञान पाए।
समोशरण तब देव वहाँ पर-2, पावन बनवाए।।.... ।।4 ।।
फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी,
गिरि सम्मेद गये-स्वामी गिरि सम्मेद गये।
मोहन कूट से प्रभु जी-2, सारे कर्म क्षये।।.... ।।5 ।।

**जन्म मरण दुख हर्त्ता,**
**पाप हरो मेरे-स्वामी पाप हरो मेरे।**
**शिव पदवी हम पाएँ-2, कटें कर्म घेरे।।।.... ।।6।।**
**दीप जलाकर पावन,**
**आरति को लाए-स्वामी आरति को लाए।**
**कृपा प्राप्त करने को-2, भक्त विशद आए।।।.... ।।7।।**
**ॐ जय पदम् प्रभु देवा, स्वामि पदम् प्रभु देवा।**
**तीर्थंकर श्री पदम्प्रभु की, करते हम सेवा।।**
**ॐ जय पदम् प्रभु देवा।।टेक।।**

# प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये श्री विमलसागराचार्या जातास्तत शिष्य श्री भरत सागराचार्य श्री विराग सागराचार्या जातास्तत् शिष्य आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य-खण्डे भारतदेशे उत्तराखंड प्रान्ते हरिद्वार स्थित 1008 श्री आदिनाथ दि. जैन मंदिर मध्ये अद्य वीर निर्वाण सम्वत् 2545 वि.सं. 2076 मासोत्तम मासे भाद्रपद मासे शुक्लपक्षे बारसतिथि दिन शुक्रवासरे श्री पद्मप्रभु मण्डल विधान रचना समाप्ति इति शुभं भूयात्।

# श्री पार्श्वनाथ विधान

## माण्डला

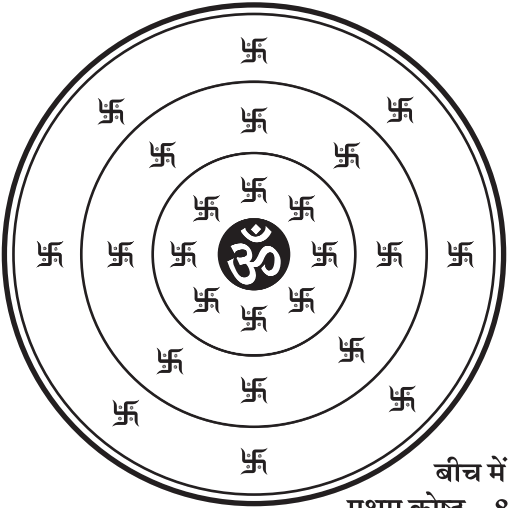

बीच में – ॐ
प्रथम कोष्ठ – 8 अर्घ्य
द्वितीय कोष्ठ – 8 अर्घ्य
तृतीय कोष्ठ – 8 अर्घ्य
कुल – 24 अर्घ्य

रचयिता :

प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

# श्री पार्श्वनाथ स्तवन

(अनुष्टुप छन्द)

विश्वसेनसुतः पार्श्वः, 'विशदज्ञान' धारकाः।
सर्वंसहा मतिर्-मे स्यात्, तावद्यावत् शिवो न हि।।1।।

(उपजाति छन्द)

परीषहैर् - वातकृतैस्तदासौ महामनाधीर - गंभीरपार्श्वः।
अकम्पचित्तः कनकाचलो वै ! तं पार्श्वनाथं त्रिविधं प्रवंदे।।2।।
पुण्यप्रभावाद् विचलासनाच्च, यातः फणीन्द्रश्चकितः सभार्यः।
फणातपत्रै-रुपसर्गकाले, भक्तिं व्यधात् यस्य नमोऽस्तु तस्मै।।3।।
श्रीपार्श्वनाथः स्वपरात्मविज्ञः, श्रेणीं श्रितः स्वात्मजशुक्लयोगैः।
घातीनिहत्वा जगदेकसूर्यः, कैवल्यमाप्नोत् तमहं स्तवीमि।।4।।
माणिक्य-गारुत्-मणिरत्नगर्भैः, वैडूर्य मुक्तामणि हीरकाद्यैः।
शक्राज्ञया वृत्तसभां जिनस्य, आकाशमध्ये व्यतनोद् धनेशः।।5।।
श्रीपार्श्वनाथस्य नमोऽस्तु तुभ्यं, त्रैलोक्यनाथाय नमोऽस्तु तुभ्यं।
अभीप्सतार्थाद नमोस्तु तुभ्यं, त्रैलोक्य नाथाय नमोस्तु तुभ्यं।।6।।

(अनुष्टुप छन्द)

जित्त्वा महोपसर्गान्यो, ज्योतिर्-देव कृतान् भुवि।
पार्श्वनाथं नमस्यामि, विश्व विघ्नौघ-शान्तये।।7।।

# श्री पार्श्वनाथ पूजा विधान (लघु)

स्थापना

**हे पार्श्व प्रभो ! हे पार्श्व प्रभो !, हे पार्श्व प्रभो करुणाधारी।**
**हे विघ्न विनाशक शांतीकर, महिमा महान मंगलकारी।।**
**हम भाव सहित ध्याते उर में, हे प्रभो ! हृदय में आ जाओ।**
**हम भक्त आपके अज्ञानी, ना हमें प्रभु जी विसराओ।।**

**दोहा - भवसागर में डूबते, हमको दो आधार।**
**आह्वानन् करते हृदय, हे जिन ! बारम्बार।।**

ॐ ह्रीं सर्व संकटहारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(ज्ञानोदय-छन्दः)

**हो कर्म के फल से जन्म मरण, पर असमय मरण कहे खोटे।**
**निज मात स्वजन के आँसू बरसे, सागर पड़े बड़े छोटे।।**
**जन्म मरण की पीड़ा हरने, पार्श्वप्रभु को ध्याते हैं।**
**तीन योग से श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।1।।**

ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**हो तकरार भयंकर जलते, आपस में प्राणी जिससे।**
**है भवाताप अन्तर उर में, भव-भव में जलते हैं इससे।।**

**जन्म मरण की पीड़ा हरने, पार्श्वप्रभु को ध्याते हैं।**
**तीन योग से श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।2।।**

ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

**क्षण भंगुर संयोग जगत् के, उनको हमने निज माना।**
**हम मुट्ठी बाँध के आये हैं पर, हाथ पसारे ही जाना।।**
**जन्म मरण की पीड़ा हरने, पार्श्वप्रभु को ध्याते हैं।**
**तीन योग से श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।3।।**

ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

**काँटों से जो बचते हैं वे, फूल कभी ना पाते हैं।**
**सम्यक् जो पुरुषार्थ करें ना, मोक्ष कभी ना जाते हैं।।**
**जन्म मरण की पीड़ा हरने, पार्श्वप्रभु को ध्याते हैं।**
**तीन योग से श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।4।।**

ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**मौज उड़ाते भोजन कर ज्यों, अगर बुराई त्यों खोयें।**
**रोग व्याधियाँ पाप नशें सब, बीज पुण्य के हम बोयें।।**
**जन्म मरण की पीड़ा हरने, पार्श्वप्रभु को हम ध्याते हैं।**
**तीन योग से श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।5।।**

ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दीप जलाकर आरति करके, रात अंधेरी ना हटती।**
**पर श्रद्धा के दीप जलाएँ, कर्मों की होवे घटती।।**

**जन्म मरण की पीड़ा हरने, पार्श्वप्रभु को ध्याते हैं।**
**तीन योग से श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।6।।**

ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

**जलकर धूप जगत महकाए, दुर्गन्धी का नाश करे।**
**आतम सौरभ में जो खोए, सिद्धशिला पर वास करे।।**
**जन्म मरण की पीड़ा हरने, पार्श्वप्रभु को ध्याते हैं।**
**तीन योग से श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।7।।**

ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**हम बदलेंगे युग बदलेगा, हर मुश्किल का हल पाएँ।**
**जो भी जैसा आज करेंगे, कल वैसा ही फल पाएँ।।**
**जन्म मरण की पीड़ा हरने, पार्श्वप्रभु को ध्याते हैं।**
**तीन योग से श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।8।।**

ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाया, जिसका कोई मूल्य नहीं।**
**अटक रहे हैं जो कीमत में, वे पाते ना ठौर कहीं।।**
**जन्म मरण की पीड़ा हरने, पार्श्वप्रभु को ध्याते हैं।**
**तीन योग से श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।9।।**

ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – शांतिप्रदायक लोक में, जिनवर शांतीकार।
जिनके चरणों में विशद, देते शांतीधार।।

(शान्तये शान्तिधारा)

दोहा – राही मुक्ती मार्ग के, मुक्ती के दातार।
पुष्पांजलि करते चरण, नत हो बारम्बार।।

(दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

# पंचकल्याणक के अर्घ्य

(दोहा-छन्द)

**वैशाख कृष्ण द्वितिया प्रभू, पाए गर्भ कल्याण।**
**चय हो अच्युत स्वर्ग से, भूपर किए प्रयाण।।1।।**

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पौष कृष्ण एकादशी, जन्मे पारस नाथ।**
**सुर नरेन्द्र देवेन्द्र सब, चरण झुकाएँ माथ।।2।।**

ॐ ह्रीं पौष वदी ग्यारस जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पौष कृष्ण एकादशी, छोड़ दिया परिवार।**
**संयम धारण कर बने, पार्श्व प्रभू अनगार।।3।।**

ॐ ह्रीं पौष वदी ग्यारस तपकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चैत कृष्ण वदि चौथ को, पाए केवल ज्ञान।**
**समवशरण रचना किए, आके देव प्रधान।।4।।**

ॐ ह्रीं चैत्रवदी चतुर्थी केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**श्रावण शुक्ला सप्तमी, करके आतम ध्यान।**
**कर्म नाश करके प्रभू, पाए पद निर्वाण।।5।।**

ॐ ह्रीं सावनसुदी सप्तमी मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

# जयमाला

**दोहा – पाप नरक का मूल है, पुण्य की जड़ पाताल।**
**शिवपद राही पार्श्व जिन, की गाते जयमाल।।**

तर्ज – श्री सिद्धचक्र का पाठ......

**श्री पार्श्वनाथ भगवान, करें गुणगान, सभी मिल भाई ।**
**जीवों को शांति प्रदायी।।टेक।।**
**जिनवर जग में हितकारी हैं, जो अतिशय करुणाधारी हैं।**
**जिनकी महिमा इस जग में है हितदायी।।**
**जीवों को शांति प्रदायी।।1।।**
**जो पार्श्वनाथ जिन को ध्याये, उसकी हर बाधा टल जाए।**
**जिन अर्चा कर, जीवों ने मुक्ती पाई।।**
**जीवों को शांति प्रदायी।।2।।**

हो भूत प्रेत की बाधाएँ, कोई शोक व्याधियाँ जो आएँ।
ज्वर कुष्ट रोग आदिक भी जाय नशाई।।
जीवों को शांति प्रदायी।।3।।
जो करे परिश्रम भी भारी, मेहनत बेकार जाए सारी।
जिन अर्चा करके पाय सफलता भाई।।
जीवों को शांति प्रदायी।।4।।
जो संक्लेशित हो रहते हैं, आँखों से आँसू बहते हैं।
उन जीवों ने भी अतिशय शांती पाई।।
जीवों को शांति प्रदायी।।5।।
हम भक्त द्वार पर आए हैं, अरदास चरण में लाए हैं।
हे प्रभो! आपकी फैली जग प्रभुताई।।
जीवों को शांति प्रदायी।।6।।

दोहा – नाथ! आपके द्वार पर, होती पूरी आस।
आशा लेकर आए हम, करो पूर्ण अरदास।।

ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – पुष्पांजलि करते चरण, पाने पुष्प पराग।
यही भावना है 'विशद', बुझे राग की आग।।

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

# प्रथम वलयः

**दोहा – शत् इन्द्रों से पूज्य हैं, जग के तारणहार।**
**कल्पतरु के पुष्प ले, पूजें मंगलकार।।**

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

## अष्ट प्रातिहार्य के अर्घ

(शम्भू छन्द)

**शोक रहित हे नाथ ! आपका, तरु अशोक मन भाता है।**
**हं बीजाक्षर पूज रहे हम, अतिशय शांति दिलाता है।।1।।**

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ अशोकतरु सत्प्रातिहार्य मंडिताय अशोकतरु युक्त शोभनपद प्रदाय ह्मल्व्र्यूं बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

**देव पुष्पवृष्टि करते हैं, जो शिव के दर्शायक हैं।**
**भं बीजाक्षर पूज रहे हम, अतिशय शांति प्रदायक है।।2।।**

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ सुरपुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्य मंडिताय सुरपुष्पवृष्टि शोभनपद प्रदाय भ्म्ल्व्र्यूं बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

**दिव्य ध्वनि खिरती है प्रभु की, मोह महातम क्षायक है।**
**मं बीजाक्षर पूज रहे हम, अतिशय शांति प्रदायक है।।3।।**

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ दिव्यध्वनि सत्प्रातिहार्य मंडिताय दिव्यध्वनि शोभनपद प्रदाय म्म्ल्व्र्यूं बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

**चौंसठ चँवर ढौरते हैं सुर, ऋद्धिसिद्धि दर्शायक है।**
**रं बीजाक्षर पूज रहे हम, अतिशय शांति प्रदायक है।।4।।**

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ चामरोज्ज्वल सत्प्रातिहार्य मंडिताय चामरढोरण प्रदाय र्म्ल्व्र्यूं बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

**सप्त भयों से रहित प्रभू का, सिंहासन शिवदायक है।**
**घं बीजाक्षर पूज रहे हम, अतिशय शांति प्रदायक है।।5।।**

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ सिंहासन सत्प्रातिहार्य मंडिताय सिंहासन प्रातिहार्य शोभनपद प्रदाय घ्म्ल्व्र्यूं बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

**भामण्डल शुभ सप्त भवों का, अतिशय जो दर्शायक है।**
**झं बीजाक्षर पूज रहे हम, अतिशय शांति प्रदायक है।।6।।**

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ भामण्डल सत्प्रातिहार्य मंडिताय भामण्डल प्रातिहार्य शोभनपद प्रदाय झ्म्ल्व्र्यूं बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

**धीर मधुर गंभीर दुन्दुभि, नाद भी शांति प्रदायक है।**
**सं बीजाक्षर पूज रहे हम, अतिशय शांति प्रदायक है।।7।।**

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ दुंदुभि सत्प्रातिहार्य मंडिताय दुंदुभिनाद शोभनपद प्रदाय स्म्ल्व्र्यूं बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

**सोहें तीन छत्र प्रभु के सिर, तीन लोक दर्शायक हैं।**
**खं बीजाक्षर पूज रहे हम, अतिशय शांति प्रदायक है।।8।।**

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ छत्रत्रय सत्प्रातिहार्य मंडिताय छत्रत्रय शोभनपद प्रदाय ख्म्ल्व्र्यूं बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

**ह भादिक पिण्डाक्षर पावन, अष्टकर्म के क्षायक हैं।**
**बीजाक्षर वसु पूज रहे हम, अतिशय शांति प्रदायक हैं।।9।।**

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ अष्ट प्रातिहार्य मंडिताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

# द्वितीय वलयः

**दोहा – सिद्धों के गुण आठ हैं, शाश्वत रहे महान।**
**अष्टकर्म को नाशकर, पाएँ शिव सोपान।।**

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

## (सिद्धों के अष्ट गुणों के अर्घ्य)

(छन्द)

**जो ज्ञान प्रकट ना होने दे, वह ज्ञानावरणी कर्म कहा।**
**जो कर्म नाश कर प्रकट करे, वह केवलज्ञान प्रकाश रहा।।1।।**

ॐ ह्रीं ज्ञानावरण कर्म रहित अनंत ज्ञानयुक्त श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

**कर्म दर्शनावरण जहाँ में, दर्शन गुण का घात करे।**
**नाश करे इसका जो साधक, केवल दर्शन प्राप्त करे।।2।।**

ॐ ह्रीं दर्शनावरण कर्म रहित अनंत दर्शन गुण युक्त श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

**यह मोह महा दुखदाई है, इसने जग को भरमाया है।**
**जिनने इसको ठुकराया है, उनने समकित गुण पाया है।।3।।**

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म रहित अनंत सुख युक्त श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

**यह अंतराय है कर्म घातिया, वीर्य सुगुण का नाशी है।**
**उसका घात किए जिन स्वामी, बल अनन्त की राशि है।।4।।**

ॐ ह्रीं अंतराय कर्म रहित अनंत शक्ति युक्त श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

**पुण्यकर्म वेदनीय के नाशी, जो अव्याबाध सुगुण पाए।**
**जो कर्माधीन सुखों को तजकर, निराबाध सुख उपजाए।।5।।**

ॐ ह्रीं वेदनीय कर्म रहित अव्याबाध गुण युक्त श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

**प्रभु आयु कर्म का नाश किए, फिर अवगाहन गुण उपजाए।**
**जो चतुर्गति से मुक्त हुए, अरु इस भव से मुक्ती पाए।।6।।**

ॐ ह्रीं आयुकर्म रहित अवगाहनत्व गुण युक्त श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

**प्रभु गोत्र कर्म का नाश किए, फिर अगुरुलघु गुण उपजाए।**
**जो ऊँच नीच का भेद मैट, सिद्धों के अतिशय सुख पाए।।7।।**

ॐ ह्रीं गोत्र कर्म रहित अगुरुलघुत्व गुण युक्त श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

**प्रभु नामकर्म का नाश किए, गुण शुभ सूक्ष्मत्व जगाए हैं।**
**अविकारी प्रभु हो गए अमूरत, सिद्धशिला को पाए हैं।।8।।**

ॐ ह्रीं नामकर्म रहित सूक्ष्मत्व गुण युक्त श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

**अष्टकर्म के नाशी जिनवर, होते हैं आठों गुणवान।**
**भवि जीवों के लिए लोक में, अतिशयकारी क्षेम निधान।।**

ॐ ह्रीं अष्टकर्म रहित अष्ट गुण युक्त श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

# तृतीय वलयः

**दोहा – शिवपथ के राही बनें, चउ आराधन वान।**
**अर्चा करते भाव से, जिन पद में धर ध्यान।।**

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

## (चार आराधना, चार कषाय रहित जिन के अर्घ्य)

**देव शास्त्र गुरु के प्रति पच्चिस, दोष रहित हो सद् श्रद्धान।**
**यह सम्यक् दर्शन आराधन, करके पाएँ शिव सोपान।।**
**महाराधना किए पूर्व में, अतः जगाए केवलज्ञान।**
**जगत पूज्य फिर हुए लोक में, कहलाए हैं प्रभु भगवान।।1।।**

ॐ ह्रीं दर्शन आराधना प्राप्त श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

**शब्दाचार आदि वसु गुणयुत, ज्ञानाराधन रहा महान।**
**जिसके द्वारा जग के प्राणी, पाते वीतराग विज्ञान।**

**महाराधना किए पूर्व में, अतः जगाए केवलज्ञान।**
**जगत पूज्य फिर हुए लोक में, कहलाए हैं प्रभु भगवान।।2।।**

ॐ ह्रीं ज्ञानाराधना प्राप्त श्रीचिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पंच महाव्रत समिति गुप्तियाँ, तेरह विध चारित्र महान।**
**भावसहित पालन करने से, कर्मों का होवे अवशान।।**
**महाराधना किए पूर्व में, अतः जगाए केवलज्ञान।**
**जगत पूज्य फिर हुए लोक में, कहलाए हैं प्रभु भगवान।।3।।**

ॐ ह्रीं चारित्राराधना प्राप्त श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

**द्वादश विध तप करके होवे, अष्टकर्म का शीघ्र विनाश।**
**तप आराधन करके पाए, श्री जिनवर जी शिवपुर वास।।**
**महाराधना किए पूर्व में, अतः जगाए केवलज्ञान।**
**जगत पूज्य फिर हुए लोक में, कहलाए हैं प्रभु भगवान।।4।।**

ॐ ह्रीं सुतपाराधना प्राप्त श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

**क्रोध कषाय उदय में होते, रह ना पाए सद् श्रद्धान।**
**नाश किए सम्यक्त्व प्रकट हो, पाए प्राणी केवल ज्ञान।।5।।**

ॐ ह्रीं क्रोध कषाय रहिताय श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

**सम्यक्त्वी ना रह पाए जो, जिसके उदय में आए मान।**
**नाश किए सम्यक्त्व प्रकट हो, पाए प्राणी केवल ज्ञान।।6।।**

ॐ ह्रीं मान कषाय रहिताय श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

**रत्नत्रय की घाती माया, होती है कहते विद्वान।**
**नाश किए सम्यक्त्व प्रकट हो, पाए प्राणी केवल ज्ञान।।7।।**

ॐ ह्रीं माया कषाय रहिताय श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

**लोभ कषायवान जो प्राणी, कर ना पाते निज कल्याण।**
**नाश किए सम्यक्त्व प्रकट हो, पाए प्राणी केवल ज्ञान।।8।।**

ॐ ह्रीं लोभ कषाय रहिताय श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

**चार कषाय विनाश करें जो, होवें चउ आराधन वान।**
**मोक्ष मार्ग के राही बनते, प्राप्त करें वे पद निर्वाण।।9।।**

ॐ ह्रीं कषाय रहित आराधना सहित श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

**जाप्य :-** ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः मम सर्व कार्य सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

# जयमाला

**दोहा – ध्यान लगाया आपने, जीते सब उपसर्ग।**
**गुण माला गाते विशद, पाने हम अपवर्ग।।**

(राधेश्याम-छन्द)

**इन्द्र नरेन्द्र महेन्द्र सुरेन्द्र, गणेन्द्र सुमहिमा गाते हैं।**
**जिनवर के पंचकल्याणक में, खुश हो जयकार लगाते हैं।।1।।**
**जब गर्भागम में प्रभु आते, तब रत्न वृष्टि करते भारी।**
**यह तीर्थंकर प्रकृति का फल, इस जग में गाया शुभकारी।।2।।**
**जब जन्म कल्याणक होता है, तब यशोगान सुर करते हैं।**
**तीनों लोकों के जीव सभी, उस समय भाव शुभ करते हैं।।3।।**
**इस जग में रहकर के स्वामी, इस जग में न्यारे रहते हैं।**
**सबसे रहते हैं वह विरक्त, सब उनको अपना कहते हैं।।4।।**
**गुणगान करें सब जीव सदा, यह पुण्य की ही बलिहारी है।**
**जो उभय लोक में जीवों को, होता शुभ मंगलकारी है।।5।।**
**सब कर्म नाश करके स्वामी, मुक्ति पथ पर बढ़ जाते हैं।**
**है शिवनगरी में सिद्धशिला, जिस पर निजधाम बनाते हैं।।6।।**

**दोहा - यह संसार असार है, जान सके ना नाथ !।**
**आज ज्ञान हमको हुआ, अतः झुकाते माथ।।**

ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दोहा - भक्त कई तारे प्रभू, आई हमारी बार।**
**पास बुलालो शीघ्र ही, अब ना करो अवार।।**

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

# श्री पार्श्वनाथ चालीसा

दोहा – चालीसा गाते यहाँ, होके नत अभिराम।
पार्श्वनाथ जिनराज के, पद में करूँ प्रणाम।।

चौपाई

जय–जय पार्श्वनाथ हितकारी, महिमा तुमरी जग में न्यारी।।1।।
तुम हो तीर्थंकर पद धारी, तीन लोक में मंगलकारी।।2।।
काशी नगरी है मनहारी, सुखी जहाँ की जनता सारी।।3।।
राजा अश्वसेन कहलाए, रानी वामा देवी गाए।।4।।
जिनके गृह में जन्मे स्वामी, पार्श्वनाथ जिन अन्तर्यामी।।5।।
देवों ने तब रहस्य रचाया, पाण्डुक वन में न्हवन कराया।।6।।
वन में गये घूमने भाई, तपसी प्रभु को दिया दिखाई।।7।।
पंचाग्नि तप करने वाला, अज्ञानी या भोला भाला।।8।।
तपसी तुम क्यों आग जलाते, हिंसा करके पाप कमाते।।9।।
नाग युगल जलते हैं कारे, मरने वाले हैं बेचारे।।10।।
तपसी ने ले हाथ कुल्हाड़ी, जलने वाली लकड़ी फाड़ी।।11।।
सर्प देख तपस्वी घबराया, प्रभु ने उनको मंत्र सुनाया।।12।।
नाग युगल मृत्यू को पाए, पद्मावती धरणेन्द्र कहाए।।13।।
तपसी मरकर स्वर्ग सिधाया, संवर नाम देव ने पाया।।14।।
प्रभू बाल ब्रह्मचारी गाए, संयम पाकर ध्यान लगाए।।15।।

पौष कृष्ण एकादशि पाए, अहिक्षेत्र में ध्यान लगाए।।16।।
इक दिन देव वहाँ पर आया, उसके मन में बैर समाया।।17।।
किए कई उपसर्ग निराले, मन को कम्पित करने वाले।।18।।
फिर भी ध्यान मग्न थे स्वामी, बनने वाले थे शिवगामी।।19।।
धरणेन्द्र पद्मावती तब आये, प्रभु के पद में शीश झुकाए।।20।।
पद्मावती ने फण फैलाया, उस पर प्रभु जी को बैठाया।।21।।
धरणेन्द्र ने माया दिखलाई, फण का छत्र लगाया भाई।।22।।
चैत कृष्ण की चौथ बताई, विजय हुई समता की भाई।।23।।
प्रभु ने केवलज्ञान जगाया, समवशरण देवेन्द्र रचाया।।24।।
सवा योजन विस्तार बताए, धनुष पचास गंध कुटि पाए।।25।।
दिव्य देशना प्रभू सुनाए, भव्यों को शिवमार्ग दिखाए।।26।।
गणधर दश प्रभु के बतलाए, गणधर प्रथम स्वयंभू गाए।।27।।
गिरि सम्मेद शिखर प्रभु आए, स्वर्ण भद्र शुभ कूट बताए।।28।।
योग निरोध प्रभु जी पाए, एक माह का ध्यान लगाए।।29।।
श्रावण शुक्ल सप्तमी आई, खड्गासन से मुक्ती पाई।।30।।
श्रावक प्रभू के पद में आते, अर्चा करके महिमा गाते।।31।।
भक्ति से जो ढोक लगाते, भोगी भोग सम्पदा पाते।।32।।
पुत्रहीन सुत पाते भाई, दुखिया पाते सुख अधिकाई।।33।।
योगी योग साधना पाते, आत्म ध्यान कर शिवसुख पाते।।34।।
पूजा करते हैं नर-नारी, गीत भजन गाते मनहारी।।35।।
हम भी यह सौभाग्य जगाएँ, बार-बार जिन दर्शन पाएँ।।36।।

पार्श्वप्रभु के अतिशयकारी, तीर्थ बने कई हैं मनहारी।।37।।
'विशद' तीर्थ जो हैं शुभकारी, जिनके पद में ढोक हमारी।।38।।
भव्य जीव जो दर्शन पाते, अतिशयकारी पुण्य कमाते।।39।।
उभयलोक में वे सुख पाते, अनुक्रम से शिव सुख पा जाते।।40।।

दोहा - पाठ करें चालीस दिन, दिन में चालिस बार।
तीन योग से पार्श्व का, पावें सौख्य अपार।।
सुख-शांती सौभाग्य युत, तन हो पूर्ण निरोग।
'विशद' ज्ञान को प्राप्त कर, पावें शिव पद भोग।।

जाप्य - ॐ ह्रीं श्री क्लीं ऐं अर्हं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।

# संसार दशा

इस तन से जब प्राण पखेरू निकल के बाहर जावें।
पत्नी पुत्र सगे सम्बन्धी, कोई बचा न पावें।।1।।
करें विलाप स्वार्थ वश प्राणी, रोवें अश्रु बहावें।
घृत कपूर चन्दन आदिक से, चिता में तुझे जलावें।।2।।
मिट्टी का यह बना पींजड़ा, मिट्टी में मिल जावे।
बालक हो अज्ञान, जवानी पाकर के बौरावे।।3।।
वृद्ध अवस्था में आशाओं, की जो बढ़ती पावे।
काया जर्जर अर्ध मृतक सम, होकर के क्षय जावे।।4।।
अक्ल शक्ल शुभ देह मिली जो, वह भी न रह पावे।
आने जाने वाली श्वासें, जाने कब रुक जावें।।5।।
अतः आत्म हित करो 'विशद' यह, समय बीत न जावे।
कल छोड़ो पल में क्या हो यह, कोई जान न पावे।।6।।

# श्री पार्श्वनाथ की आरती

तर्ज - हम सब उतारें तेरी आरती......

आज करें हम पार्श्वनाथ की, आरती मंगलकारी-2
जिन मंदिर के पार्श्व प्रभु हैं, जग जन के संकटहारी।।
हो जिनवर, हम सब उतारें थारी आरती।।टेक।।
अच्युत स्वर्ग से चयकर स्वामी, माँ के गर्भ में आए-2।
अश्वसेन वामा देवी माँ-2, को प्रभु धन्य बनाए।।
हो जिनवर.........।।1।।
गर्भोत्सव पर काशी नगरी, आके देव सजाए-2।
छह नौ माह रत्न वृष्टी कर-2, नाचे हर्ष मनाए।।
हो जिनवर.........।।2।।
जन्मोत्सव पर मेरु सुगिरि पर, आके न्हवन कराए-2।
सब इन्द्रों ने मिलकर भाई-2, जय जयकार लगाए।।
हो जिनवर.........।।3।।
यह संसार असार जानकर, उत्तम संयम पाए-2।
ज्ञानोत्सव पर समवशरण शुभ-2, आके धनद बनाए।।
हो जिनवर..........।।4।।
शाश्वत तीर्थ की स्वर्ण-भद्र शुभ, कूट से मुक्ती पाए-2।
'विशद' आपकी आरती करने-2, भक्त शरण में आए।।
हो जिनवर.........।।5।।

# श्री चन्द्रप्रभ विधान

## माण्डला

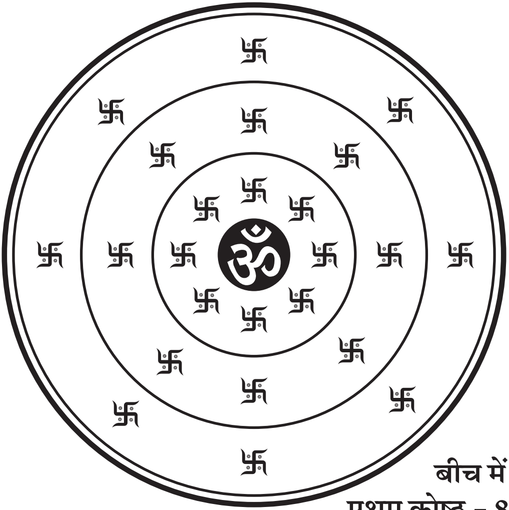

बीच में – ॐ

प्रथम कोष्ठ – 8 अर्घ्य

द्वितीय कोष्ठ – 8 अर्घ्य

तृतीय कोष्ठ – 8 अर्घ्य

कुल – 24 अर्घ्य

रचयिता :

प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

# श्री चन्द्रप्रभ स्तवन

शून्यषट्कैकपूर्वायुः, सार्द्धचापशतोच्छ्रितिः।
महासेनात्मजः पायात्, स जिनश्चंद्रलांछनः।।
(भुजंग-प्रयातं छन्द)

परावर्तनान्य-प्यनंतानि पूर्वं।
कृतानि श्रमोऽभू-दिदानीमतीव।।
त्वमेव प्रभो ! पंचसंसारमुक्तः।
अतः प्रार्थये त्वां श्रृणु त्राहि देव !।।2।।
पुरस्तात् सुभक्त्येरितोऽज्ञोऽपि किंचित्।
ब्रुवे तद्भवेत्केवलं जन्महान्यै।।
स्मृतिस्तेऽप्यनंतानि दुःखानि हंति।
न किं हंति नागान् शिशुः सिंहिकाया।।3।।
प्रभो ! त्वां विलोक्य प्रहृष्टं मनो मे।
ध्वनिर्गद्गदो मोदवाष्पस्रवंत्यौ।।
दृशौ स्तश्च साफल्य-जन्मापि मेऽभूत्।
अतः कुड्मलीकृत्य हस्तौ प्रणौमि।।4।।
शशांकांघ्रिसेव्यः परां शांतिमाप्तः।
भवेद्भव्यजंतोर्भवाग्निप्रशान्त्यै।
यतीनां मनो-ऽम्भोजभास्वान् प्रभुस्तं।
सुचंद्रप्रभं नौमि चंद्रांशुगौरं।।5।।
नमो चन्द्रप्रभं देवं, महासेन सुतं वरं।
नमः तीर्थंकरं पूज्यं, 'विशद' ज्ञान धारिणाः।।6।।

# श्री चन्द्रप्रभु जी पूजन

स्थापना

**दोहा – चन्द्रांकित लक्षण चरण, कांती चन्द्र समान।**
**आह्वानन् करते हृदय, चन्द्रनाथ भगवान।।**

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

**श्री जिन पद में नीर चढ़ाएँ, जन्मादिक हम रोग नशाएँ।**
**चन्द्रप्रभू की महिमा गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।1।।**

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**चन्दन हम गोशीर चढ़ाएँ, भवाताप अपना विनशाएँ।**
**चन्द्रप्रभू की महिमा गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।2।।**

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

**अक्षत से जिन पूज रचाएँ, अक्षय पद हम भी पा जाएँ।**
**चन्द्रप्रभू की महिमा गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।3।।**

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

**सुरभित पुष्प चढ़ा गुण गाएँ, काम रोग हम पूर्ण नशाएँ।**
**चन्द्रप्रभू की महिमा गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।4।।**

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**जिन पद सुचरु चढ़ा गुण गाएँ, क्षुधा रोग से मुक्ती पाएँ।**
**चन्द्रप्रभू की महिमा गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।5।।**

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दीपक रत्नमयी प्रजलाएँ, मोह महातम दूर हटाएँ।**
**चन्द्रप्रभू की महिमा गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।6।।**

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

**धूप अग्नि में यहाँ जलाएँ, अपने सारे कर्म नशाएँ।**
**चन्द्रप्रभू की महिमा गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।7।।**

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**फल से जिनपद पूज रचाएँ, मोक्ष महा फल हम पा जाएँ।**
**चन्द्रप्रभू की महिमा गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।8।।**

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**अष्ट द्रव्य का अर्घ्य सजाएँ, विशद अनर्घ्य सुपदवी पाएँ।**
**चन्द्रप्रभू की महिमा गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।9।।**

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दोहा – महिमा जिनकी है अगम, गरिमा का ना पार।**
**शांती धारा दे रहे, जिन पद बारम्बार।।**

(शांतिमय शांतिधारा)

**दोहा – गुणानन्त के कोष हैं, चन्द्रप्रभ भगवान।**
**पुष्पांजलि करते चरण, करते हम गुणगान।।**

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

# जयमाला

दोहा – चन्दप्रभ पद पूजते, जो भी बालाबाल।
इच्छित फल पावें सदा, गावें यह जयमाल।।

।। विष्णुपद छन्द ।।

चन्द्रप्रभु की महिमा सारे, इस जग ने गाई।
शरणागत बनके लोगों ने, पाई प्रभुताई।।
चन्द्रपुरी में जन्म लिए प्रभु, सुर नर हर्षाए।
मात सुलक्ष्मणा महासेन गृह, विशद हर्ष छाये।।1।।
राज पाट सुख भोग प्राप्त भी, तुम्हें नहीं भाए।
छोड़ चले गृह जाल जानकर, संयम अपनाए।।
निज आतम का ध्यान लगाकर, योग आप धारे।
विशद ज्ञान पाया प्रभु तुमने, नशे कर्म सारे।।2।।
समन्तभद्र मुनिवर ने तुमको, भाव सहित ध्याया।
प्रकट हुए पिण्डी के फटते, प्रभू दर्श पाया।।
अष्टम तीर्थंकर कहलाए, चन्द्र प्रभु स्वामी।
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, मुक्ती पथ गामी।।3।।
तव चरणों में भूत प्रेत की, बाधाएँ जावें।
चरणों की रज माथ लगाते, इच्छित फल पावें।।
दुखिया दर पर आने वाले, दुख खोके जाते।
निर्धन धन की इच्छा करते, इच्छित धन पाते।।4।।

चमत्कार इस सारे जग में, फैला है भाई।
जिसने जो इच्छा की दर पे, वह वस्तू पाई।।
महिमा सुनकर नाथ! आपके, हम दर पे आए।
अर्घ्य चढ़ाने अष्ट द्रव्य का, 'विशद' चरण लाए।।5।।

दोहा – चन्द्र चाँदनी सम रहे, चन्द्र प्रभू भगवान।
जिनकी अर्चा कर 'विशद', पाना शिव सोपान।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – अष्टम तीर्थंकर बने, अष्ट गुणों के ईश।
आठों अंगों को नमित, झुका रहे हम शीश।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

## प्रथम वलयः

दोहा – अरहन्तों के गुण रहे, जग में महति महान।
जिनकी अर्चा को यहाँ, करते हम गुणगान।।

(प्रथम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

जन्म के दश अतिशय प्रगटाए, जगत पूज्यता प्रभु जी पाए।
चन्द्रप्रभु अतिशय के धारी, पूज रहे हम मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं जन्मातिशय प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दश अतिशय प्रभु ज्ञान के पाए, जब प्रभु केवलज्ञान जगाए।
चन्द्रप्रभु अतिशय के धारी, पूज रहे हम मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं ज्ञानातिशय प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**चौदह देवोंकृत कहलाते, महिमा प्रभु जी की बतलाते।**
**चन्द्रप्रभु अतिशय के धारी, पूज रहे हम मंगलकारी।।3।।**

ॐ ह्रीं देवकृतातिशय प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

**दर्शज्ञान सुख वीर्य जगाए, अनन्त चतुष्टय प्रभु प्रगटाए।**
**चन्द्रप्रभु अतिशय के धारी, पूज रहे हम मंगलकारी।।4।।**

ॐ ह्रीं अनन्त चतुष्टय प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

**प्रातिहार्य पाएँ मनहारी, समवशरण में विस्मयकारी।**
**चन्द्रप्रभु अतिशय के धारी, पूज रहे हम मंगलकारी।।5।।**

ॐ ह्रीं प्रातिहार्याष्ट प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**श्रीजिन रहे धर्म दश धारी, इस जग में जो मंगलकारी।**
**चन्द्रप्रभु अतिशय के धारी, पूज रहे हम मंगलकारी।।6।।**

ॐ ह्रीं दश धर्म प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**प्रभु जी दोष अठारह नाशी, होते हैं शिवपुर के वासी।**
**चन्द्रप्रभु अतिशय के धारी, पूज रहे हम मंगलकारी।।7।।**

ॐ ह्रीं अष्टादश दोष निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

**प्रभु जी द्वादश तप शुभ पाएँ, अपने सब जो कर्म नशाएँ।**
**चन्द्रप्रभु अतिशय के धारी, पूज रहे हम मंगलकारी।।8।।**

ॐ ह्रीं द्वादश तप प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**छियालिस मूल गुणों के धारी, हैं अष्टादश दोष निवारी।**
**चन्द्रप्रभु अतिशय के धारी, पूज रहे हम मंगलकारी।।9।।**

ॐ ह्रीं छियालिस मूलगुण सहिताय श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि.स्वाहा।

# द्वितीय वलयः

**दोहा - सिद्धों के गुण आठ हैं, शाश्वत हैं शुभकार।**
**जिनको हम करते यहाँ, वन्दन बारम्बार।।**

द्वितीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(मोतियादाम छन्द)

**नशाए ज्ञानावरणी कर्म, जगाए निज आतम का धर्म।**
**प्रभू जी बने आप तीर्थेश, पूजते जिनके चरण विशेष।।1।।**

ॐ ह्रीं केवलज्ञान प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**दर्शनावरण नशाएँ कर्म, दर्श गुण प्रगटाएँ निज धर्म।**
**प्रभू जी बने आप तीर्थेश, पूजते जिनके चरण विशेष।।2।।**

ॐ ह्रीं केवलदर्शन प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**वेदनीय कीन्हे आप विनाश, सुगुण प्रगटाए अव्याबाध।**
**प्रभू जी बने आप तीर्थेश, पूजते जिनके चरण विशेष।।3।।**

ॐ ह्रीं अव्याबाध गुण प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**मोहनीय का कर के भी नाश, किए प्रभु सुखानन्त में वास।**
**प्रभू जी बने आप तीर्थेश, पूजते जिनके चरण विशेष।।4।।**

ॐ ह्रीं अनन्त सुख प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**आयु का किए नाश भगवान, हुए प्रभु अवगाहन गुणवान।**
**प्रभू जी बने आप तीर्थेश, पूजते जिनके चरण विशेष।।5।।**
ॐ ह्रीं अवगाहनत्वगुण प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
**कर्म प्रभु नाम किए हैं अन्त, सुगुण सूक्ष्मत्व पाए गुणवन्त।**
**प्रभू जी बने आप तीर्थेश, पूजते जिनके चरण विशेष।।6।।**
ॐ ह्रीं सूक्ष्मत्व गुण प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
**गोत्र का नाशे नाम निशान, अगुरु लघु पाए गुण भगवान।**
**प्रभू जी बने आप तीर्थेश, पूजते जिनके चरण विशेष।।7।।**
ॐ ह्रीं अगुरु-लघु गुण प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
**अन्तराय करके कर्म विमुक्त, अनन्तबल प्रगटाए अर्हन्त।**
**प्रभू जी बने आप तीर्थेश, पूजते जिनके चरण विशेष।।8।।**
ॐ ह्रीं अनन्तबल गुण प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
**कर्म आठों प्रभु किए विनाश, किए प्रभु सिद्धशिला पर वास।**
**प्रभू जी बने आप तीर्थेश, पूजते जिनके चरण विशेष।।9।।**
ॐ ह्रीं अष्ट कर्म विनाशनाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि.स्वाहा।

# तृतीय वलयः

**दोहा – प्रातिहार्य धारी कहे, तीर्थंकर भगवान।**
**जिनकी अर्चा कर रहे, अतिशय महिमा वान।।**

तृतीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(मोतियादाम छन्द)

**अशोक तरु तल में जिन भगवान, देशना देते महति महान।**
**प्रातिहार्य समवशरण में देव, रचावें मंगलमयी सदैव।।1।।**

ॐ ह्रीं अर्हं अशोक तरु प्रातिहार्य संयुक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**प्रभू का सिंहासन छविदार, शोभते जिसपे मंगलकार।**
**प्रातिहार्य समवशरण में देव, रचावें मंगलमयी सदैव।।2।।**

ॐ ह्रीं अर्हं सिंहासन प्रातिहार्य संयुक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**शोभते छत्रत्रय शुभकार, शीश पे श्री जिन के मनहार।**
**प्रातिहार्य समवशरण में देव, रचावें मंगलमयी सदैव।।3।।**

ॐ ह्रीं अर्हं छत्रत्रय प्रातिहार्य संयुक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**रहा भामण्डल अतिशयकार, सप्तभव दर्शाए शुभकार।**
**प्रातिहार्य समवशरण में देव, रचावें मंगलमयी सदैव।।4।।**

ॐ ह्रीं अर्हं भामण्डल प्रातिहार्य संयुक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**दिव्य ध्वनि खिरती अपरम्पार, प्रभू की पावन विस्मयकार।**
**प्रातिहार्य समवशरण में देव, रचावें मंगलमयी सदैव।।5।।**

ॐ ह्रीं अर्हं दिव्य ध्वनि प्रातिहार्य संयुक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**दुन्दुभि बाजे बजें अनूप, प्रभू के जय का कहें स्वरूप।**
**प्रातिहार्य समवशरण में देव, रचावें मंगलमयी सदैव।।6।।**

ॐ ह्रीं अर्हं दुन्दुभि प्रातिहार्य संयुक्त श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

**चँवर ढौरें चौंसठ शुभ यक्ष, रहे जो प्रभु भक्ती में दक्ष।**
**प्रातिहार्य समवशरण में देव, रचावें मंगलमयी सदैव।।7।।**

ॐ ह्रीं अर्हं चँवर प्रातिहार्य संयुक्त श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

**पुष्प वृष्टी हो अपरम्पार, करें जो मानो जय-जय कार।**
**प्रातिहार्य समवशरण में देव, रचावें मंगलमयी सदैव।।8।।**

ॐ ह्रीं अर्हं पुष्प वृष्टी प्रातिहार्य संयुक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**प्रातिहार्य पाए दिव्य ललाम, करें सुर नर पशु चरण प्रणाम।**
**प्रातिहार्य समवशरण में देव, रचावें मंगलमयी सदैव।।9।।**

ॐ ह्रीं अर्हं अष्ट प्रातिहार्य संयुक्त श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि.स्वाहा।

**जाप्य :-** ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः मम सर्व कार्य सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

## जयमाला

**दोहा - ऊँचे छह सौ हाथ छवि, उज्ज्वल चन्द्र समान।**
**चन्द्र चिन्ह युत पूजते, चन्द्र नाथ भगवान।।**

(पद्धडि छन्द)

**जय चन्द्र जिनेश्वर सुगुण वान, प्रगटाए तुम कैवल्य ज्ञान।**
**प्रभु स्वयं सिद्ध मंगल स्वरूप, विन्मूरति चिन्मूरत स्वरूप।।1।।**

निरपेक्ष निरामय निराकार, हे जिनवर ! शाश्वत समयसार।
जय दर्शन ज्ञान अनन्त वान, जय सौख्य वीर्य गुणमय प्रधान।।2।।
निज साधन से पाये सुसाध्य, आराधन निज कर हुए अराध्य।
निष्काम स्वयं में रहे पाग, जग से निस्पृह हे वीतराग !।।3।।
निर्दूषण जग भूषण जिनेश, नाशे प्रभु जग के सब क्लेश।
रागादि स्वयं जब किए मंद, कर दिए शिथिल निज कर्म बन्ध।।4।।
झूठी ममता पर की विनाश, निज समता में कीन्हे निवास।
तुम हुए सहज ही निर्विकार, हे नित्य निरंजन ! निराकार।।5।।
लक्ष्मी चरणों की बनी दास, तुम सहज हुए उससे उदास।
अद्‌भुत प्रभुता पाए जिनेश, महिमा फैली जग में विशेष।।6।।
अक्षय अनन्त गुण किए प्राप्त, स्वमेव आप भी बने आप्त।
प्रभु दोष अठारह कर विनाश, स्वभाविक गुण कीन्हे प्रकाश।।7।।

दोहा – कर्मों पर जय प्राप्त कर, हुए आप स्वाधीन।
तव भक्ती में हे प्रभू, रहें सदा ही लीन।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – तव अर्चा करके 'विशद', होवे क्लेश विनाश।
मुक्ती हो संसार से, पूरी होवे आश।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

# श्री चन्द्रप्रभु चालीसा (तिजारा)

दोहा – श्री जिनेन्द्र को नमन कर, जिनवाणी को ध्याय।
वीतराग निर्ग्रन्थ गुरु, के चरणों सिरनाय।।
देहरे के जिन चन्द्र का, चालीसा शुभकार।
'विशद' भाव से गा रहे, पाने सौख्यअपार।।

(चौपाई)

जय श्री चन्द्र प्रभू जिन स्वामी, देहरे वाले शिव पथ गामी।।1।।
शांत छवी मूरत अविकारी, भेष दिगम्बर मुद्रा प्यारी।।2।।
जिनवर नाशा दृष्टिधारी, सर्व जगत में मंगलकारी।।3।।
देवों के जो देव कहाते, सद्भक्तों के कष्ट मिटाते।।4।।
वैजयन्त से चयकर आए, गर्भकल्याण श्री जिन पाए।।5।।
चैत कृष्ण पाँचे शुभकारी, देव रत्न वर्षाए भारी।।6।।
चन्द्रपुरी नगरी कहलाए, महासेन जी राज्य चलाए।।7।।
रही सुलक्ष्मणा जिनकी रानी, जन्मे चन्द्रप्रभू जिन स्वामी।।8।।
पौष वदी ग्यारस कहलाई, सारी जगती हर्ष मनाई।।9।।
जग हितकारी राज्य चलाया, किन्तू जग वैभव ना भाया।।10।।
पौष कृष्ण एकादशि पाए, प्रभु मन में वैराग्य जगाए।।11।।
राग त्याग मुनि दीक्षा धारी, ध्यान किए होके अविकारी।।12।।
फाल्गुण वदी सप्तमी पाए, प्रभु जी केवल ज्ञान जगाए।।13।।

ललित कूट पावन कहलाए, मोक्ष जहाँ से प्रभु जी पाए।।15।।
समंतभद्र मुनि तुम को ध्याए, पिण्डी फटी दर्श तुम पाए।।16।।
अष्टम तीर्थंकर कहलाते, सोम सुग्रह से शांति दिलाते।।17।।
चमत्कार तुम कई दिखलाए, मन से लोग आपको ध्याये।।18।।
राजस्थान प्रान्त है प्यारा, अलवर जिला में नगर तिजारा।।19।।
उत्तर दिश में देहरा जानो, प्रगटे जहाँ चन्द्रप्रभु मानो।।20।।
सावन सुदि दशमी शुभकारी, तिथि हो गई ये मंगलकारी।।21।।
चिन्ह चन्द्रमा का शुभ पाए, नर नारी जयकार लगाए।।22।।
धवल मूर्ति सोहे मनहारी, जो है पावन अतिशयकारी।।23।।
अतिशय तुमने कई दिखाए, जनता दौड़ी-दौड़ी आए।।24।।
कोई चरणों पूज रचाते, कोई पावन आरति गाते।।25।।
कोई विशद विधान रचाते, कोई शुभ चालीसा गाते।।26।।
फाल्गुन सुदी सप्तमी जानो, भारी मेला जुड़ता मानो।।27।।
शशिधर पावन आप कहाए, ज्ञान प्रकाश आप फैलाए।।28।।
कीर्ति आपकी फैली भारी, गुण गाती है दुनिया सारी।।29।।
भूत प्रेत भी जिन्हें सतावें, उनसे प्राणी मुक्ती पावें।।30।।
दुखिया दर पे जो भी आते, उनके सब संकट कट जाते।।31।।
अन्धा दर पे ज्योती पाए, गूंगे का गूंगापन जाए।।32।।
पुत्रहीन दर पे जो आए, पुत्र सौख्य वह प्राणी पाए।।33।।
ज्ञान हीन सद् ज्ञान जगाए, बुद्धि हीन सद् बुद्धी पाए।।34।।

रोगी अपना रोग नशाए, पर कृत मंत्र भयावह जाए।।35।।
लाखों आते यहाँ सवाली, जाएँ नहीं यहाँ से खाली।।36।।
चरणों की रज है सुखकारी, जीवों के सब संकटहारी।।37।।
गंधोदक जो माथ लगावें, अतिशय शांती प्राणी पावें।।38।।
अखण्ड ज्योति का घृत जो लगाते, उनके सब संकट कट जाते।।39।।
'विशद' आपको जो भी ध्याते, वे अपने सौभाग्य जगाते।।40।।

दोहा – चालीसा चालीस दिन, पढ़के चालिस बार।
पढ़ो पढ़ाओ भक्ति से, पाओ शांति अपार।।
रोग शोक दुख दूर हों, और पाप का नाश।
धन सम्पत्ति का लाभ हो, हो शिवपुर में वास।।

**मनोकामनापूर्ण जाप्य :-**

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री देहरे वाले चन्द्रप्रभ

जिनेन्द्राय नमः।

# श्री चन्द्रप्रभु की आरती

ॐ जय चन्द्रप्रभु स्वामी, जय चन्द्रप्रभु स्वामी।
चन्द्रपुरी अवतारी, मुक्ती पथ गामी। ॐ जय...।। टेक।।
महासेन घर जन्मे, धर्म ध्वजाधारी–2।
स्वर्ग मोक्षपदवी के दाता, ऋषिवर अनगारी।।1।। ॐ जय...
आतम ज्ञान जगाएँ, सद् दृष्टी धारी–2।
मोह महामद नाशी, स्व पर उपकारी।।2।। ॐ जय...
पंच महाव्रत प्रभु जी, तुमने जो धारे–2।
समिति गुप्ति के द्वारा, कर्म शत्रु जारे।।3।। ॐ जय...
इन्द्रिय मन को जीता, आतम ध्यान किया–2।
केवल ज्ञान जगाकर, पद निर्वाण लिया।।4।। ॐ जय...
तुमको ध्याने वाला, सुख शांती पावे–2।
'विशद' आरती करके, मन में हर्षावे।।5।। ॐ जय...
प्रभु की महिमा सुनकर, द्वारे हम आये–2।
भाव सहित प्रभु तुमरे, हमने गुण गाये।।6।। ॐ जय...
तुम करुणा के सागर, हम पर कृपा करो–2।
भक्त खड़ा चरणों में, सारे कष्ट हरो।।7।। ॐ जय...
ॐ जय चन्द्रप्रभु स्वामी, जय चन्द्रप्रभु स्वामी–2।
चन्द्रपुरी अवतारी, मुक्ति पथ गामी।। टेक।। ॐ जय..

# श्री वासुपूज्य विधान
## माण्डला

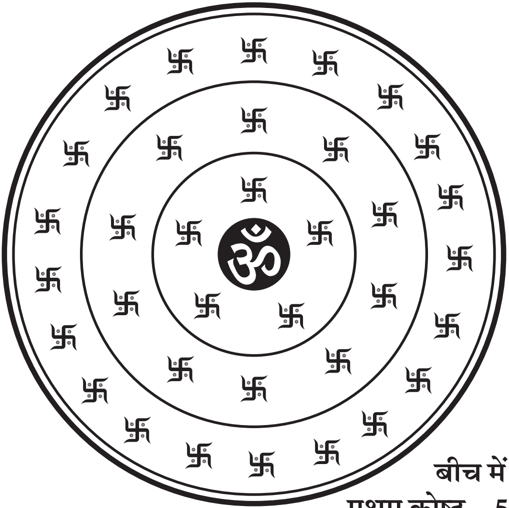


बीच में – ॐ
प्रथम कोष्ठ – 5 अर्घ्य
द्वितीय कोष्ठ – 10 अर्घ्य
तृतीय कोष्ठ – 20 अर्घ्य
कुल – 35 अर्घ्य

रचयिता :

प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

# श्री वासुपूज्य स्तवन

दोहा – वासुपूज्य भगवान शुभ, जग में हुए महान।
मुक्ती पथ का आपने, दिया विशद सोपान।।

(ज्ञानोदय छन्द)

वासुपूज्य के चरण कमल में, वन्दन करते बारम्बार।
केवलज्ञान जगाने वाले, सकल जगत के जाननहार।।
महिमा हम गाते जिनवर की, सर्व कर्म क्षय करने को।
बसो हृदय में मेरे प्रभु जी, दुर्निवार के हरने को।।1।।
प्रथम बालयति तीर्थंकर प्रभु, वासुपूज्य कहलाए महान।
चौवन सागर जिन श्रेयांस के, बाद हुए हैं विश्व प्रधान।।
लाल रंग तन का शुभ पाए, भैंसा जिनकी है पहिचान।
वंश इक्ष्वाकु कश्यप गोत्री, ऊँचे सत्तर धनुष प्रमाण।।2।।
फाल्गुन वदी चतुर्दशि को प्रभु, जन्मे वासुपूज्य भगवान।
लाख बहत्तर वर्ष की आयु, जन्मत ही धारे त्रय ज्ञान।।
वाद्य बजे आनन्दमयी शुभ, जिसकी महिमा अपरम्पार।
ऐरावत ले इन्द्र ने आके, खुश होके बोला जयकार।।3।।
पाण्डु शिला पर न्हवन कराए, होकर के जो भाव विभोर।
इन्द्र बाल ऐरावत पर ले, जाता पाण्डुक वन की ओर।।
शचि से बालक इन्द्र राज ने, लेकर दर्शन किया महान।
पाण्डुक वन में पाण्डु शिला पर, बैठाकर कीन्हा गुणगान।।4।।
एक हजार आठ कलशों से, न्हवन कराया अपरम्पार।
सौ इन्द्रों ने मिलकर बोला, वासुपूज्य का जय जयकार।।
इन्द्रराज ने बालक का शुभ, वासुपूज्य बतलाया नाम।
भक्तिभाव से चरण कमल में, कीन्हा बारम्बार प्रणाम।।5।।

।।पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

# श्री वासुपूज्य विधान

स्थापना

**दोहा – सारे जग से पूज्य हैं, वासुपूज्य भगवान।**
**भाव सहित जिनका हृदय, करते हम आह्वान।।**

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चाल छन्द)

**नीर यह क्षीर सा लाए, रोग त्रय नाश हो जाए।**
**पूज्य वासुपूज्य हैं भाई, रहे जो मोक्ष पददायी।।1।।**
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**चढ़ाने गंध यह लाए, भवातप पूर्ण नश जाए।**
**पूज्य वासुपूज्य हैं भाई, रहे जो मोक्ष पददायी।।2।।**
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

**श्रेष्ठ अक्षत धुवा लाए, चरण की भक्ति को आए।**
**पूज्य वासुपूज्य हैं भाई, रहे जो मोक्ष पददायी।।3।।**
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

**फूल सुरभित चुना लाए, काम रुज पूर्ण नश जाए।**
**पूज्य वासुपूज्य हैं भाई, रहे जो मोक्ष पददायी।।4।।**
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सुचरु ताजे बना लाए, क्षुधा रुज नाश को आए।
पूज्य वासुपूज्य हैं भाई, रहे जो मोक्ष पददायी।।5।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नमय दीप प्रजलाए, मोह तम नाश हो जाए।
पूज्य वासुपूज्य हैं भाई, रहे जो मोक्ष पददायी।।6।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशांगी धूप यह लाए, मुक्ति कर्मों से मिल जाए।
पूज्य वासुपूज्य हैं भाई, रहे जो मोक्ष पददायी।।7।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाने फल सरस लाए, मोक्ष हमको भी मिल जाए।
पूज्य वासुपूज्य हैं भाई, रहे जो मोक्ष पददायी।।8।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाने अर्घ्य यह लाए, विशद शिव प्राप्ति को आए।
पूज्य वासुपूज्य हैं भाई, रहे जो मोक्ष पददायी।।9।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – शांतीधारा दे रहे, मन में शांती धार।
भाते हैं यह भावना, पावन रहें विचार।।

।। शान्तये शान्तिधारा ।।

दोहा – पुष्पांजलिं करते यहाँ, पाने शिव सोपान।
अर्चा का फल पाएँगे, पावन पद निर्वाण।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

# पंचकल्याणक के अर्घ्य

(सखी छन्द)

**षष्ठी अषाढ़ वदि पाए, प्रभु स्वर्ग से चयकर आए।**
**उत्सव सब देव मनाए, जिन गृह आके हर्षाए।।1।।**

ॐ ह्रीं अषाढ़ कृष्ण षष्ठ्यां गर्भ कल्याणक प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**फाल्गुन वदि चौदश आई, चंपापुर जन्मे भाई।**
**जन्मोत्सव इन्द्र मनाए, जिनवर का न्हवन कराए।।2।।**

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण चतुर्दश्यां जन्म कल्याणक प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वदि फाल्गुन चौदश स्वामी, संयम धारे जगनामी।**
**वैराग हृदय में छाया, भोगों से मन अकुलाया।।3।।**

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण चतुर्दश्यां तप कल्याणक प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सुदि द्वितिया माघ निराली, फैलाए ज्ञान की लाली।**
**अज्ञान के मेघ हटाए, केवल रवि जिन प्रकटाए।।4।।**

ॐ ह्रीं माघ शुक्ल द्वितियायां केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सुदि भादों चतुर्दशि जानो, जिनवर शिव पाए मानो।**
**मंदारसुगिरि से स्वामी, जिन बने मोक्ष पथगामी।।5।।**

ॐ ह्रीं भाद्रपद शुक्ल चतुर्दश्यां मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

# जयमाला

दोहा – वसुपूज्य सुत आप हैं, चम्पापुर की शान।
गर्भ जन्म तप ज्ञान शुभ, पाए मोक्ष कल्याण।।

(चौपाई छन्द)

चयकर महाशुक्र से आए, चम्पापुर को धन्य बनाए।
वासुपूज्य भगवान कहाए, भैंसा लक्षण पग में पाए।।1।।
महिमा जिनकी जग ये गाए, प्रथम बाल ब्रह्मचारि कहाए।
अष्ट वर्ष की आयू पाई, अणुव्रतों को पाए भाई।।2।।
चम्पापुर नगरी में स्वामी, पंच कल्याणक पाए नामी।
विमल भावना बारह भाए, मन में तब वैराग्य जगाए।।3।।
पावन महाव्रतों के धारी, पाए रत्नत्रय शुभकारी।
एक वर्ष छद्मस्थ कहाए, निज आतम का ध्यान लगाए।।4।।
हुए आप द्वादश तप धारी, कर्म निर्जरा कीन्हे भारी।
क्षपक श्रेण्यारोहण पाए, कर्म घातिया आप नशाए।।5।।
अनन्त चतुष्टय जो प्रगटाए, छ्यासठ गणधर प्रभु के गाए।
समवशरण आ देव बनाए, प्रभु की जय-जयकार लगाए।।6।।
दिव्य देशना आप सुनाए, जीव ज्ञान दर्शन शुभ पाए।।
श्री जिनवर की महिमा गाते, पद में सादर शिश झुकाते।।7।।

सोरठा– वासुपूज्य भगवान, की महिमा जग में अगम।
करते हम गुणगान, विशद भाव से चरण में।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सोरठा– जग में हुए प्रसिद्ध, केवल ज्ञानी जो हुए।**
**पद पाए प्रभु सिद्ध, अतः पूजते जगत जन।।**

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

# प्रथम वलय

**दोहा – पंच महाव्रत प्राप्त जिन, जग में हुए प्रधान।**
**पुष्पांजलि करते चरण, जिन के महति महान।।**

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

## पंच महाव्रत के अर्घ्य

मोतियादाम छन्द

**महाव्रत रहा अहिंसा जान, जीव की रक्षाकार महान।**
**प्राप्तकर के जो जिन भगवान, करें निज पर का भी कल्याण।।1।।**

ॐ ह्रीं अहिंसा महाव्रत धारकाय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

**सत्यव्रत धारण करें विशेष, अतः प्रभु बनते हैं तीर्थेश।**
**प्राप्तकर के जो जिन भगवान, करें निज पर का भी कल्याण।।2।।**

ॐ ह्रीं सत्य महाव्रत धारकाय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

**प्रभू होते अचौर्य व्रत वान, प्राप्त करते हैं पद निर्वाण।**
**प्राप्तकर के जो जिन भगवान, करें निज पर का भी कल्याण।।3।।**

ॐ ह्रीं अचौर्य महाव्रत धारकाय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

**ब्रह्मचर्य धारी निज में लीन, पालते सहस अठारह शील।**
**प्राप्तकर के जो जिन भगवान, करें निज पर का भी कल्याण।।4।।**
ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्य महाव्रत धारकाय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।
**परिग्रह चौबिस करके त्याग, धारते मन में पूर्ण विराग।**
**प्राप्तकर के जो जिन भगवान, करें निज पर का भी कल्याण।।5।।**
ॐ ह्रीं अपरिग्रह महाव्रत धारकाय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।
**महाव्रत धारी जिन तीर्थेश, सिद्ध पद पाते स्वयं विशेष।**
**प्राप्तकर के जो जिन भगवान, करें निज पर का भी कल्याण।।6।।**
ॐ ह्रीं पंच महाव्रत प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

# द्वितिय वलय

**दोहा – संयम धारण कर हुए, दश धर्मों के ईश।**
**पुष्पांजलि करते यहाँ, धर चरणों में शीश।।**

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

## दश धर्म के अर्घ्य

चौपाई

**क्रोध कषाय को पूर्ण नशाते, उत्तम क्षमा धर्म प्रगटाते।**
**श्री जिनवर की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।1।।**
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमा धर्म धारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
**मद की दम का करें सफाया, जिनने मार्दव धर्म उपाया।**
**श्री जिनवर की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।2।।**
ॐ ह्रीं उत्तममार्दव धर्म धारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

**छोड़ रहे जो मायाचारी, होते वे आर्जव के धारी।**
**श्री जिनवर की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।3।।**
ॐ ह्रीं उत्तमआर्जव धर्म धारक श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
**लोभ नाश जिनका हो जाए, वह ही शौच धर्म प्रगटाए।**
**श्री जिनवर की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।4।।**
ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्म धारक श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
**असत वचन के हैं जो त्यागी, सत्य धर्म धारी बड़भागी।**
**श्री जिनवर की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।5।।**
ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्म धारक श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
**नहीं असंयम जिनको भाए, वह संयम धारी कहलाए।**
**श्री जिनवर की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।6।।**
ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्म धारक श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
**कर्म निर्जरा करने वाले, उत्तम तप धर रहे निराले।**
**श्री जिनवर की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।7।।**
ॐ ह्रीं उत्तम तप धर्म धारक श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
**द्विविध संग से रहित बताए, उत्तम त्याग धर्म धर गाए।**
**श्री जिनवर की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।8।।**
ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्म धारक श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
**किंचित् राग रहित अविकारी, उत्तम आकिंचन व्रत धारी।**
**श्री जिनवर की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।9।।**
ॐ ह्रीं उत्तमआकिंचन धर्म धारक श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

**उत्तम ब्रह्मचर्य व्रतधारी, होते आतम ब्रह्म विहारी।**
**श्री जिनवर की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।10।।**
ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्य धर्म धारक श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
**उत्तम क्षमा आदि जो पाए, वह निश्चय शिवपुर को जाए।**
**श्री जिनवर की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।11।।**
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि धर्म धारक श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि.स्वाहा।

# तृतिय वलय

**दोहा - संकट हारी लोक में, वासुपूज्य भगवान।**
**करते जिनकी अर्चना, पाएँ शांति प्रधान।।**

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

## अनिष्ट निवारक अर्घ्य

(चौपाई छन्द)

**दुःख सहे भव-भव में भारी, प्रभु जी जिसके हैं परिहारी।**
**वासुपूज्य जिनवर को ध्याएँ, अपने सारे कष्ट मिटाएँ।।1।।**
ॐ ह्रीं ''भव-भव उपद्रव नाशक परम सुख शान्ति प्रदायक''
श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
**दुर्भिक्षादि उपद्रव भारी, होय आपदा जो दुखकारी।**
**वासुपूज्य जिनवर को ध्याएँ, अपने सारे कष्ट मिटाएँ।।2।।**
ॐ ह्रीं ''दुर्भिक्षादि अनेक उपद्रव नाशक'' श्री वासुपूज्य
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**स्वजन बन्धु परिवार सताए, जीवन में आकुलता आए।**
**वासुपूज्य जिनवर को ध्याएँ, अपने सारे कष्ट मिटाएँ।।3।।**

ॐ ह्रीं ''बंधुत्व परिवार उपद्रव नाशक'' श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**केन्सर कुष्ट भगन्दर भारी, दुखदायक होवे बीमारी।**
**वासुपूज्य जिनवर को ध्याएँ, अपने सारे कष्ट मिटाएँ।।4।।**

ॐ ह्रीं ''भगन्दर कुष्ट केंसर किडनी आदि सर्व रोग नाशक'' श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शाकिन डाकिन भूत भवानी, आदि सताए हो अज्ञानी।**
**वासुपूज्य जिनवर को ध्याएँ, अपने सारे कष्ट मिटाएँ।।5।।**

ॐ ह्रीं ''भूत प्रेत डाकिनी व्यंतरकृत बाधा नाशक'' श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**रही अविद्या मोहनि कारी, स्तम्भनि है बहु दुखकारी।**
**वासुपूज्य जिनवर को ध्याएँ, अपने सारे कष्ट मिटाएँ।।6।।**

ॐ ह्रीं ''मोहनि स्तंभनि आदि कुविद्या नाशक'' श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**क्रोधादिक जो रही कषाएँ, क्षण क्षण में जो कष्ट दिलाएँ।**
**वासुपूज्य जिनवर को ध्याएँ, अपने सारे कष्ट मिटाएँ।।7।।**

ॐ ह्रीं ''क्रोधादि कषाय नाशक'' श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आयकर आदिक छापामारी, की बाधा के हैं परिहारी।**
**वासुपूज्य जिनवर को ध्याएँ, अपने सारे कष्ट मिटाएँ।।8।।**
ॐ ह्रीं ''आयकर छापामारी आदि कष्ट निवारक'' श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आलस और प्रमाद सताए, शुभ कार्यों में कष्ट दिलाए।**
**वासुपूज्य जिनवर को ध्याएँ, अपने सारे कष्ट मिटाएँ।।9।।**
ॐ ह्रीं ''प्रमाद नाशक'' श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**है संसार दुखों का डेरा, डाले है जीवन में घेरा।**
**वासुपूज्य जिनवर को ध्याएँ, अपने सारे कष्ट मिटाएँ।।10।।**
ॐ ह्रीं ''संसार दुख नाशक'' श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

**अल्प अकाल मृत्यु आ जाए, जिसके कारण दुख बहु पाए।**
**वासुपूज्य जिनवर को ध्याएँ, अपने सारे कष्ट मिटाएँ।।11।।**
ॐ ह्रीं ''अल्प मृत्यु नाशक'' श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

**यह संसार असार कहाए, अतः विरक्ती इससे आए।**
**वासुपूज्य जिनवर को ध्याएँ, अपने सारे कष्ट मिटाएँ।।12।।**
ॐ ह्रीं ''असार संसार नाशक'' श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

(चाल छन्द)

**गृह राज्य भ्रष्ट हो जावें, जो कायरता को पावें।**
**जो वासुपूज्य को ध्याएँ, संकट उनके टल जाएँ।।13।।**
ॐ ह्रीं ''राज्यगृह पद भ्रष्ट उद्भव उपद्रव नाशक'' श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चारों गति भ्रमण नशावें, जो जिन महिमा को गावें।**
**जो वासुपूज्य को ध्याएँ, संकट उनके टल जाएँ।।14।।**

ॐ ह्रीं ''चतुर्गति भ्रमण दुख नाशक'' श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**हो कलह शत्रुता नाशी, श्री जिन पद का विश्वासी।**
**जो वासुपूज्य को ध्याएँ, संकट उनके टल जाएँ।।15।।**

ॐ ह्रीं ''कलह शत्रुता नाशी'' श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

**शुभ कार्य विघ्न के नाशी, होते हैं धर्म प्रकाशी।**
**जो वासुपूज्य को ध्याएँ, संकट उनके टल जाएँ।।16।।**

ॐ ह्रीं ''शुभ कार्य मध्ये विघ्न विनाशक'' श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**उपसर्ग बैर के नाशी, जिन मार्ग के हों विश्वासी।**
**जो वासुपूज्य को ध्याएँ, संकट उनके टल जाएँ।।17।।**

ॐ ह्रीं ''सर्व उपसर्ग तूफान बैर रोग नाशक'' श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कटु हास्य वचन परिहारी, होते जग मंगलकारी।**
**जो वासुपूज्य को ध्याएँ, संकट उनके टल जाएँ।।18।।**

ॐ ह्रीं ''कटु वचन पाप नाशक'' श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

**जो रत्नत्रय शुभ पावें, अन्तिम चारित्र जगावें।**
**जो वासुपूज्य को ध्याएँ, संकट उनके टल जाएँ।।19।।**

ॐ ह्रीं ''यथाख्यात चारित्र प्राप्ताय'' श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

**जिन भक्ति अरिष्ट निवारी, फलदायक है शुभकारी।**
**जो वासुपूज्य को ध्याएँ, संकट उनके टल जाएँ।।20।।**

ॐ ह्रीं "सर्व अरिष्ट निवारक" श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अर्चा कर कष्ट मिटाएँ, अपने सौभाग्य जगाएँ।**
**जो वासुपूज्य को ध्याएँ, संकट उनके टल जाएँ।।21।।**

ॐ ह्रीं "सर्व मंगल ग्रह अरिष्ट निवारक" श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दोहा – गुणविशिष्ट पाए प्रभू, वासुपूज्य भगवान।**
**जिनकी अर्चाकर मिले, हमको शिव सोपान।।**

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

**जाप्य : ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः मम सर्व कार्य सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।**

# समुच्चय जयमाला

**दोहा – वसुपूज्य सुत आप हैं, विजया माँ के लाल।**
**वासुपूज्य भगवान की, गाते हम जयमाल।।**

तर्ज – तेरे पाँच हुए कल्याण.........

**किया तूने जगत उद्धार प्रभु, अब मेरा भी तो उद्धार कर दो।**
**तू सद् ज्ञानी आतम ज्ञानी, हमें भवसागर से पार कर दो।।टेक।।**
**नहीं लोक में तुम सम कोई, औरों का कल्याण करे।**
**नहीं मिला कोई हमको ऐसा, दूर मेरा अज्ञान करे।।**

अब मैं चाहूँ भगवन-भगवन मेरे, मैं ज्ञान सहित आचरण करूँ।
वह दान मुझे आचार कर दो-किया...।।1।।

सता रहे हैं कर्म अनेकों, मोहादिक ने मोह लिया।
सत्पथ पर न बढ़े कभी भी, मिथ्या ने मजबूर किया।।
अब मैं चाहूँ जिनवर-जिनवर, जो रत्नत्रय है धर्म मेरा।
उस धर्म के अब आधार कर दो-किया...।।2।।

भटक रहा अंजान मुसाफिर, मंजिल की शुभ आस लिए।
रफता-रफता बढ़ते आया, दर पे तेरे विश्वास लिए।।
अब मैं चाहूँ भगवन्-भगवन्, तू है दाता ईश्वर सबका।
अब दूर मेरा आगार कर दो-किया..।।3।।

जग को तेरी बहुत जरूरत, तू जग का रखवाला है।
तू है मंदिर, तू है मस्जिद, तू विशद ज्ञान की शाला है।।
अब मैं चाहूँ भगवन्-भगवन्, जो नित्य निरंजन रूप मेरा।
वह निराकार आकार कर दो-किया....।।4।।

जिसने प्रभु जी तुमको ध्याया, उसका कष्ट मिटाया है।
बिन माँगे ही सद्भक्तों ने, मनवांछित फल पाया है।।
अब मै चाहूँ जिनवर-जिनवर, मैं तेरा ही गुणगान करूँ।
उस ज्ञान का मुझको दान कर दो-किया...।।5।।

**दोहा – पंचकल्याणक पाए हैं, चम्पापुर में आन।**
**वासुपूज्य भगवान हैं, जिनशासन की शान।।**

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दोहा – पुष्पांजलि अर्पित करें, 'विशद' भाव के साथ।**
**हमको भी मुक्ती मिले, झुका चरण में माथ।।**

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

# श्री वासुपूज्य भगवान की आरती

**श्री वासुपूज्य भगवान, आज थारी आरती उतारूँ।**
**आरती उतारूँ, थारी मूरत निहारूँ, कर दो भव से पार।।**
**आज थारी.............**
**वसुपूज्य के सुत हो प्यारे, जयावती के राजदुलारे।**
**चम्पापुर महाराज–आज थारी..........।।1।।**
**जन्म के अतिशय तुमने पाए, केवलज्ञान को भी प्रगटाए।**
**देवोंकृत शुभकार–आज थारी.............।।2।।**
**कर्म घातियाँ तुमने नाशे, अनुपम केवल ज्ञान प्रकाशे।**
**शिवपुर के सरताज–आज थारी.............।।3।।**
**अनन्त चतुष्टय तुमने पाए, प्रातिहार्य भी शुभ प्रकटाए।**
**तीर्थंकर जिनराज–आज थारी..............।।4।।**
**हम भी द्वार आपके आए, पद में सादर शीश झुकाए।**
**'विशद' ज्ञान के ताज–आज थारी.................।।5।।**

# श्री वासुपूज्य चालीसा

दोहा – परमेष्ठी जिन पाँच हैं, तीर्थंकर चौबीस।
वासुपूज्य के पद युगल, विनत झुके मम् शीश।।

चौपाई

वासुपूज्य जिनराज कहाए, अपने सारे कर्म नशाए।।1।।
अनुपम केवलज्ञान जगाए, अविनाशी अनुपम पद पाए।।2।।
महाशुक्र से चयकर आए, चम्पापुर नगरी कहलाए।।3।।
पिता वसु नृप अनुपम गाए, जयावती के लाल कहाए।।4।।
अषाढ़ कृष्ण दशमी दिन पाए, इक्ष्वाकु शुभ वंश उपाए।।5।।
गर्भ नक्षत्र शतभिषा गाए, प्रातः काल का समय बताए।।6।।
फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी गाया, जन्म कल्याणक प्रभु ने पाया।।7।।
शुभ नक्षत्र विशाखा गाया, इन्द्र तभी ऐरावत लाया।।8।।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराया, भैंसा चिन्ह पैर में पाया।।9।।
वासुपूज्य तब नाम बताया, हर्ष सभी के मन में छाया।।10।।
लोग सभी जयकार लगाए, सत्तर धनुष ऊँचाई पाए।।11।।
माघ शुक्ल की चौथ बताए, जाति स्मरण प्रभु जी पाए।।12।।
अपराह्न काल का समय बताया, एक उपवास प्रभु ने पाया।।13।।
बाल ब्रह्मचारी कहलाए, लाल वर्ण तन का प्रभु पाए।।14।।
प्रभू मनोहर वन में आए, तरु पाटला का तल पाए।।15।।
राजा छह सौ छह बतलाए, साथ में प्रभु के दीक्षा पाए।।16।।

आयु लाख बहत्तर पाए, उत्तम तप कर कर्म नशाए।।17।।
माघ शुक्ल द्वितीया शुभ पाए, प्रभु जी केवलज्ञान जगाए।।18।।
मिलकर इन्द्र वहाँ पर आए, प्रभु के पद में ढोक लगाए।।19।।
समवशरण सुन्दर बनवाए, साढ़े छह योजन कहलाए।।20।।
गौरी श्रेष्ठ यक्षिणी जानो, सन्मुख यक्ष प्रभु का मानो।।21।।
एक माह पूरव से भाई, योग निरोध किए सुखदायी।।22।।
फाल्गुन कृष्णा पंचमी आई, जिस दिन प्रभु ने मुक्ति पाई।।23।।
शुभ नक्षत्र अश्विनी गाया, अपराह्न काल का समय बताया।।24।।
मुनिवर छह सौ एक कहाए, साथ में प्रभु के मुक्ति पाए।।25।।
छियासठ प्रभु के गणधर गाए, मन्दर उनमें प्रथम कहाए।।26।।
बारह सौ थे पूरब धारी, दश हजार विक्रिया धारी।।27।।
शिक्षक पद के धारी गाए, उन्तालिस हजार दो सौ कहलाए।।28।।
छह हजार थे केवलज्ञानी, छह हजार मनःपर्यय ज्ञानी।।29।।
दश हजार विक्रिया के धारी, ब्यालिस सौ वादी शुभकारी।।30।।
चौवन सौ अवधि ज्ञानी पाए, सहस्त्र बहत्तर सब ऋषि गाए।।31।।
आर्यिकाएँ प्रभु चरणों आईं, एक लाख छह सहस्त्र बताईं।।32।।
वरसेना गणिनी कहलाई, आयु लाख बहत्तर पाई।।33।
एक वर्ष छद्मस्थ बिताए, चम्पापुर से मुक्ती पाए।।34।।
पाँचों कल्याणक शुभ जानो, चम्पापुर से मुक्ती मानो।।35।।
ग्रहारिष्ट मंगल के स्वामी, वासुपूज्य जिन अन्तर्यामी।।36।।

मंगल ग्रह हो पीड़ाकारी, प्रभु का वह बन जाए पुजारी।।37।।
आरती कर चालीसा गाए, ग्रह पीड़ा को शीघ्र नशाए।।38।।
सुख-शांती वह मानव पाए, उसका भाग्य उदय में आए।।39।।
यही भावना 'विशद' हमारी, मुक्ती दो हमको त्रिपुरारी।।40।।

दोहा - चालीसा जो भाव से, पढ़ते दिन चालीस।
पाते सुख शांती विशद, बनते शिवपति ईश।।

**जाप्य :-** ॐ ह्रीं श्री क्लीं ऐं अर्हं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः।

# इष्ट प्रार्थना

भावना भगवान मेरी, यह सुखी संसार हो।
सत्य संयम शील धर, हर जीव का उद्धार हो।।1।।
पाप का परिहार होवे, धर्म का प्रचार हो।
वीर वाणी का विशद, व्यवहार घर-घर बार हो।।2।।
सप्त व्यसन का जहाँ से, हे प्रभू जी ह्रास हो।
शान्ति वा आनन्द में, हर जीव का विश्वास हो।3।।
देव गुरू वाणी में, हर इक जीव का विश्वास हो।
हर बुराई का जहाँ से, पूर्णता अब नाश हो।।4।।
खेद अरु भय शोक हे जिन!, जीव के सब दूर हों।
सौख्य शांती से सभी जन, पूर्णतः भरपूर हों।।5।।
संत श्रावक के हृदय से, मद सदा चकचूर हो।
हो 'विशद' धर्मात्मा हर, नूर का भी नूर हो।।6।।

दोहा- भाए जो यह भावना, मन में श्रद्धा धार।
अल्पकाल में जीव वह, हो जाए भव पार।।

# श्री शांतिनाथ विधान (लघु)

## माण्डला

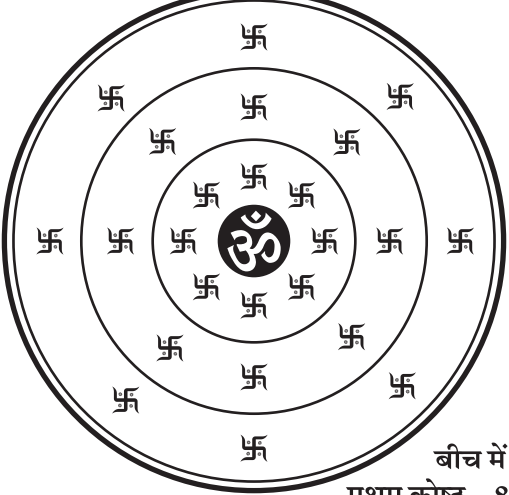


बीच में – ॐ
प्रथम कोष्ठ – 8 अर्घ्य
द्वितीय कोष्ठ – 8 अर्घ्य
तृतीय कोष्ठ – 8 अर्घ्य
कुल – 24 अर्घ्य

रचयिता :

प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

# शान्ति स्तवन

नाना विचित्रं भव दुःख राशि। नाना प्रकारं मोहंध च पाशि।।
पापानि दोषानि हरंति देव !, इह जन्म शरणं तव शांतिनाथ !।।1।।
संसार मध्ये मिथ्यात्व चिंता। मिथ्यात्व मध्ये कर्माणि बंधं।।
ते बंध छेदंति देवाधिदेव !, इह जन्म शरणं तव शांतिनाथ !।।2।।
कामस्य क्रोधं मायाऽतिलोहं। चतुः कषाया इव जीव बंधं।।
ते बंध छेदंति देवाधिदेव !, इह जन्म शरणं तव शांतिनाथ !।।3।।
जातस्य मरणं ध्रूवस्य वचनं। द्यौ शांति जीव बहु जन्म दुःख।।
ते बंध छेदंति देवाधिदेव !, इह जन्म शरणं तव शांतिनाथ !।।4।।
चारित्र हीने नर जन्म मध्ये। सम्यक्त्व रत्नं परिपालयन्ति।
ते बंध छेदंति देवाधिदेव !, इह जन्म शरणं तव शांतिनाथ !।।5।।
मृदु वाक्य हीनं कठिनस्य चिंता। पर जीव निंदा मनसा च बंधं।।
ते बंध छेदंति देवाधिदेव !, इह जन्म शरणं तव शांतिनाथ !।।6।।
पर द्रव्य चोरी पर दार सेवा। हिंसादि कांक्षा अनृत च बंधं।।
ते बंध छेदंति देवाधिदेव !, इह जन्म शरणं तव शांतिनाथ !।।7।।
पुत्राणि मित्राणि कलत्राणि बंधुर्। बहु जन्म मध्ये इहजीव बंधं।।
ते बंध छेदंति देवाधिदेव !, इह जन्म शरणं तव शांतिनाथ !।।8।।

(मालिनी छन्द)

जपति पठति नित्यं शांति नाथादि सिद्धं। स्तवन मृधु गिरायां पाप संतापहतुं।।
शिव सुख निधि पोतं सर्व सत्त्वानुकंपं। गुणमणि सुभद्रं भद्र कार्येषु नित्यं।।9।।

जप तप दाने पठते नित्यं, श्रीगुणभद्र स्वामि वाक्यं ते।
लभते नर स्वर्ग-सुखं, पुनरपि निर्वाण-पंथान्।।

।।इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

# शांति विधान पूजा

स्थापना

**दोहा– पूजा करते आपकी, शांतिनाथ भगवान।**
**हृदय पधारो आन के, करते हैं आह्वान।।**

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(वेसरी छन्द)

**प्रासुक निर्मल नीर चढ़ाते, जन्म जरादिक रोग नशाते।**
**शांतिनाथ की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।1।।**

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**केसर चन्दन यहाँ चढ़ाएँ, भवाताप से मुक्ती पाएँ।**
**शांतिनाथ की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।2।।**

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

**अक्षत यहाँ चढ़ाने लाए, अक्षय पदवी पाने आए।**
**शांतिनाथ की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।3।।**

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

**पूजा में यह पुष्प चढ़ाएँ, काम रोग मेरा नाश जाए।**
**शांतिनाथ की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।4।।**

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**शुभ ताजे नैवेद्य चढ़ाएँ, क्षुधा रोग से मुक्ती पाएँ।**
**शांतिनाथ की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।5।।**

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मणिमय पावन दीप जलाए, मोह अंध मेरा नश जाए।**
**शांतिनाथ की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।6।।**

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

**परम सुगंधित धूप चढ़ाएँ, आठों कर्म नाश हो जाएँ।**
**शांतिनाथ की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।7।।**

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**शुभ ताजे फल यहाँ चढ़ाएँ, मोक्ष महाफल हम भी पाएँ।**
**शांतिनाथ की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।8।।**

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, पद अनर्घ्य पावन हम पाएँ।**
**शांतिनाथ की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।9।।**

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दोहा– शांती धारा कर मिले, मन में शांति अपार।**
**वन्दन करते आपके, पद में बारम्बार।।**

शान्तये शांतिधारा...

**दोहा– पुष्पांजलि करते विशद, पुष्प लिए शुभ हाथ।**
**सुख शांती सौभाग्य हो, पूज रहे पद नाथ !।।**

।। दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

# अर्घ्यावली

**दोहा– शांतिनाथ तव चरण में, वन्दन बारम्बार।**
**पुष्पांजलि करते विशद, पाने भव से पार।।**

मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

## 'अशोक वृक्ष'

।। चाल छन्द ।।

**जो शोक से रहित कहाए, वह तरु अशोक कहलाए।**
**प्रभु प्रातिहार्य के धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।1।।**

ॐ ह्रीं अशोक तरु सत् प्रातिहार्य युक्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## 'सुर पुष्प वृष्टी'

**सुर पुष्प वृष्टि करवाते, मन में अति हर्ष मनाते।**
**प्रभु प्रातिहार्य के धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।2।।**

ॐ ह्रीं सुरपुष्पवृष्टि सत् प्रातिहार्य युक्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## 'दिव्य ध्वनि'

**हो दिव्य ध्वनि शुभकारी, इस जग में मंगलकारी।**
**प्रभु प्रातिहार्य के धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।3।।**

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनि सत् प्रातिहार्य युक्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## ‘चँवर’

**सुर जिन पद चँवर ढुरायें, जो जिन महिमा दर्शायें।**
**प्रभु प्रातिहार्य के धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।4।।**

ॐ ह्रीं चँवर सत् प्रातिहार्य युक्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## ‘सिंहासन’

**हो रत्न जड़ित सिंहासन, जिस पर हो प्रभू का आसन।**
**प्रभु प्रातिहार्य के धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।5।।**

ॐ ह्रीं सिंहासन सत् प्रातिहार्य युक्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## ‘भामण्डल’

**भामण्डल है शुभकारी, होता अति महिमाकारी।**
**प्रभु प्रातिहार्य के धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।6।।**

ॐ ह्रीं भामण्डल सत् प्रातिहार्य युक्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## ‘दुंदुभि’

**दुंदुभि शुभ वाद्य बजायें, सुर नाचें हर्ष मनायें।**
**प्रभु प्रातिहार्य के धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।7।।**

ॐ ह्रीं दुंदुभि सत् प्रातिहार्य युक्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## ‘छत्रत्रय’

**त्रय छत्र शीश पर सोहें, जन-जन के मन को मोहें।**
**प्रभु प्रातिहार्य के धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।8।।**

ॐ ह्रीं छत्रत्रय सत् प्रातिहार्य युक्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

**वसु प्रातिहार्य प्रगटायें, जो अतिशय शांति दिलायें।**
**प्रभु प्रातिहार्य के धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।**

ॐ ह्रीं अष्ट प्रातिहार्य प्रातिहार्य युक्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## ‘सिद्धों के आठ गुण’ ‘अनंत ज्ञान’

।। मोतियादाम छन्द ।।

**नशाए ज्ञानावरणी कर्म, प्रकट कीन्हें हैं आतम धर्म।**
**देशना जिनकी खिरी महान्, होय जग जीवों का कल्याण।।9।।**

ॐ ह्रीं अनन्त ज्ञानगुण प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## ‘अनंत दर्शन’

**दर्शनावरणी किए विनाश, दर्श प्रभु पावन किए प्रकाश।**
**देशना जिनकी खिरी महान, होय जग जीवों का कल्याण।।10।।**

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शन गुणप्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## ‘अनंत सुख’

**मोहनीय कर्म का किए विनाश, किए प्रभु सुख अनन्त में वास।**
**देशना जिनकी खिरी महान्, होय जग जीवों का कल्याण।।11।।**
ॐ ह्रीं अनन्त सुखगुण प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

## ‘अनंत शक्ति’

**अन्तराय कर्म का किए हैं अंत, वीर्य प्रभु पाए आप अनन्त।**
**देशना जिनकी खिरी महान, होय जग जीवों का कल्याण।।12।।**
ॐ ह्रीं अनन्त वीर्यत्वगुण प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

## ‘अव्याबाधत्व’

**वेदनीय का नाशे उन्माद, सुगुण प्रगटाए अव्याबाध।**
**देशना जिनकी खिरी महान्, होय जग जीवों का कल्याण।।13।।**
ॐ ह्रीं अव्याबाधत्व गुण प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

## ‘अवगाहनत्व’

**सुगुण अवगाहन कीन्हें प्राप्त, कर्म आयू के नाशी आप्त।**
**देशना जिनकी खिरी महान्, होय जग जीवों का कल्याण।।14।।**
ॐ ह्रीं अवगाहनत्वगुण प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

## ‘अगुरुलघुत्व’

**अगुरुलघु गुण प्रगटाए देव !, कर्म प्रभु नाशे गोत्र स्वमेव।**
**देशना जिनकी खिरी महान्, होय जग जीवों का कल्याण।।15।।**
ॐ ह्रीं अगुरुलघुत्वगुण प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

## ‘सूक्ष्मत्व’

**सुगुण सूक्ष्मत्व जगाए आप, कर्म प्रभु अपना नाशे नाम।**
**देशना जिनकी खिरी महान्, होय जग जीवों का कल्याण।।16।।**

ॐ ह्रीं सूक्ष्मत्व गुण प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

**अष्ट गुण प्रगटाए जिनराज, पूजते जिनवर के पद आज।**
**देशना जिनकी खिरी महान्, होय जग जीवों का कल्याण।।**

ॐ ह्रीं श्री अष्टगुण प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

## अष्ट ऋद्धियाँ

**‘बुद्धि ऋद्धि’ है बुद्धि प्रदायी, पूज रहे हम जो शिवदायी।**
**शांतिनाथ पद शीश झुकाते, भाव सहित जिन महिमा गाते।।1।।**

ॐ ह्रीं बुद्धि ऋद्धि धारकाय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

**‘ऋद्धि विक्रिया’ महिमाशाली, जग का मंगल करने वाली।**
**शांतिनाथ पद शीश झुकाते, भाव सहित जिन महिमा गाते।।2।।**

ॐ ह्रीं विक्रिया ऋद्धि धारकाय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

**‘सुतप ऋद्धि’ तप वृद्धीकारी, जो है अतिशय कर्म निवारी।**
**शांतिनाथ पद शीश झुकाते, भाव सहित जिन महिमा गाते।।3।।**

ॐ ह्रीं सुतप ऋद्धि धारकाय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

**'चारण ऋद्धी' है अतिशायी, गगन गमन की शक्ति प्रदायी।**
**शांतिनाथ पद शीश झुकाते, भाव सहित जिन महिमा गाते।।4।।**

ॐ ह्रीं चारण ऋद्धि धारकाय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

**'बल ऋद्धी' है पौरुषकारी, विशद योग तीनों जयकारी।**
**शांतिनाथ पद शीश झुकाते, भाव सहित जिन महिमा गाते।।5।।**

ॐ ह्रीं बल ऋद्धि धारकाय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

**'औषध ऋद्धी' जग उपकारी, जग जीवों के कष्ट निवारी।**
**शांतिनाथ पद शीश झुकाते, भाव सहित जिन महिमा गाते।।6।।**

ॐ ह्रीं औषधि ऋद्धि धारकाय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

**'रस ऋद्धी' रस वृद्धीकारी, नीरस करे सरस आहारी।**
**शांतिनाथ पद शीश झुकाते, भाव सहित जिन महिमा गाते।।7।।**

ॐ ह्रीं रस ऋद्धि धारकाय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

**'ऋद्धि अक्षीण' की महिमा न्यारी, द्रव्य क्षेत्र की जो विस्तारी।**
**शांतिनाथ पद शीश झुकाते, भाव सहित जिन महिमा गाते।।8।।**

ॐ ह्रीं अक्षीण ऋद्धि धारकाय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

**बुद्धि विक्रिया चारण ऋद्धी, तप बल रस औषधि अक्षीण।**
**अर्घ्य चढ़ाते हम ऋद्धियाँ, पद भक्ती में होकर के लीन।।9।।**

ॐ ह्रीं अष्ट ऋद्धि धारकाय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

**जाप्य :** ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः मम सर्व
कार्य सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

# जयमाला

दोहा – शांति नाथ भगवान का, जपें निरन्तर नाम।
मंगलमय जयमाल गा, करते चरण प्रणाम।।

(चौपाई)

शान्ति नाथ शांती के दाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।
जो हैं जन-जन के उपकारी, तीन लोक में मंगलकारी।।1।।
सर्वार्थ-सिद्धि से चयकर आये, हस्तिनागपुर धन्य बनाए।
हुई रत्न वृष्टी शुभकारी, तीन लोक में विस्मयकारी।।2।।
इन्द्रराज ऐरावत लाया, प्रभु के पद में शीश झुकाया।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराया, सबने भारी हर्ष मनाया।।3।।
प्रभु ने संयम को अपनाया, तपकर केवलज्ञान जगाया।
दिव्य देशना प्रभू सुनाए, जग को मोक्ष मार्ग दिखलाए।।4।।
बुध ग्रह की बाधा जब आवे, नाना विध के कष्ट दिलावे।
हँसी खुशी में गम आ जाए, भय आकस्मिक उसे सतावे।।5।।
कारोबार मंद पड़ जावे, बार-बार घाटा लग जावे।
श्रम सारा निष्फल हो जावे, दुख पे दुख अति बढ़ता जावे।।6।।
रात दिवस ये चिन्ता लागे, प्रभु भक्ती में मन न लागे।
बन्धू बान्धवाभी मुख मोड़ें, सुत दारा भी रिश्ता छोड़ें।।7।।

भूख प्यास निद्रा नहिं आवे, कैसे दुख की घड़ियाँ जावें।
पाप कर्म की लीला न्यारी, कभी रोग कभी हाहाकारी।।8।।
मस्तक पीड़ा सर्दी खाँसी, होता मति भ्रम सर्व विनाशी।
भक्ति प्रभु की शांति दिलाती, रोग शोक संकट मिटवाती।।9।।
यह विधान जो भक्त रचावें, ग्रह अनुकूल सभी हो जावें।
सुख सम्पत्त गुण यश के दानी, नव निधि चौदह रत्न प्रदानी।।10।।
दीन दरिद्री धन पा जाये, पुत्र हीन सुखकर सुत पाये।
अल्प बुद्धि ज्ञानी बन जाये, रोगी रोग नशे सुख पाये।।11।।
सर्व क्लेश अघ संकट हर्त्ता, शांतिनाथ सब सुख के भर्त्ता।
नाथ ! निरंजन तारण हारे, हम सब के प्रभु आप सहारे।।12।।
मोक्ष महल जब तक ना पाएँ, तब तक तुमको हृदय बसाएँ।
'विशद' भावना रही हमारी, पूर्ण करो तुम हे त्रिपुरारी !।।13।।

दोहा – नाथ ! आपकी भक्ति से, भक्त बने भगवान।
अतः भाव से नित करें, भक्ती सहित गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – श्रद्धा के शुभ पुष्प यह, अर्पित हैं भगवान।
मुक्ती हो संसार से, पाना पद निर्वाण।।

।। दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

# श्री शांतिनाथ चालीसा

दोहा – परमेष्ठी जिन धर्म जिन, आगम मंगलकार।
जिन चैत्यालय चैत्य को, वन्दन बारम्बार।।
जिन मंदिर में शोभते, जिनवर शांतीनाथ।
चालीसा गाते 'विशद', करते हम गुणगान।।

चौपाई

जम्बू द्वीप में क्षेत्र बताया, भरत क्षेत्र अनुपम कहलाया।।1।।
भारत देश रहा शुभकारी, जिसकी महिमा जग से न्यारी।।2।।
नगर हस्तिनापुर के स्वामी, विश्वसेन राजा थे नामी।।3।।
रानी ऐरादेवी पाए, जिनके सुत शांती जिन गाए।।4।।
माँ के गर्भ में प्रभु जब आए, रत्नवृष्टि तब देव कराए।।5।।
भादव कृष्ण सप्तमी जानो, शुभ नक्षत्र भरणी पहिचानो।।6।।
ज्येष्ठ कृष्ण चौदश शुभकारी, मेष राशि जानो मनहारी।।7।।
जन्म प्रभु जी ने जब पाया, देवराज ऐरावत लाया।।8।।
शचि ने प्रभु को गोद उठाया, फिर ऐरावत पर बैठाया।।9।।
पाण्डुक वन अभिषेक कराया, सहस्त्र नेत्र से दर्शन पाया।।10।।
पग में हिरण चिन्ह शुभ गाया, शांतिनाथ तब नाम बताया।।11।।
पंचम चक्रवर्ती कहलाए, कामदेव बारहवें गाए।।12।।
तीर्थंकर सोहलवें जानो, यथा नाम गुणकारी मानो।।13।।
नव निधियों के स्वामी गाये, चौदह रत्न श्रेष्ठ बताए।।14।।
सहस्त्र छियानवे रानी पाए, छह खण्डों पर राज्य चलाए।।15।।

नीतिवन्त हो राज्य चलाया, दुखियों का सब दुःख मिटाया।।16।।
सूर्य वंश के स्वामी गाए, सारे जग में यश फैलाए।।17।।
जाति स्मरण प्रभु को आया, महाव्रतों को प्रभु ने पाया।।18।।
स्वर्गों से लौकान्तिक आये, अनुमोदन कर हर्ष मनाए।।19।।
केशलुंच कर दीक्षा धारी, हुए दिगम्बर मुनि अविकारी।।20।।
एक लाख राजा संग आए, साथ में प्रभु के दीक्षा पाए।।21।।
ज्येष्ठ कृष्ण चौदस तिथि जानो, तपकल्याणक प्रभु का मानो।।22।।
आत्म ध्यान कीन्हें तब स्वामी, किये निर्जरा अन्तर्यामी।।23।।
पौष सुदी दशमी शुभ आई, केवलज्ञान की ज्योति जगाई।।24।।
समवशरण आ देव बनाए, प्रभु की जय-जयकार लगाए।।25।।
दिव्य देशना आप सुनाए, धर्म ध्वजा जग में फहराए।।26।।
छत्तिस गणधर प्रभु जी पाए, प्रथम गणी चक्रायुध गाए।।27।।
यक्ष गरुण जानो तुम भाई, यक्षी श्रेष्ठ मानसी गाई।।28।।
योग निरोध किये जगनामी, गुण अनन्त पाये जिन स्वामी।।29।।
ज्येष्ठ कृष्ण चौदस तिथि जानो, गिरि सम्मेद शिखर से मानो।।30।।
नौ सौ मुनी श्रेष्ठ बतलाए, साथ में प्रभु के मुक्ती पाए।।31।।
महामोक्ष फल तुमने पाया, शिवपुर अपना धाम बनाया।।32।।
कूट कुन्द प्रभ जानो भाई, कायोत्सर्गासन शुभ गाई।।33।।
जग में कई जिनबिम्ब निराले, अतिशय श्रेष्ठ दिखाने वाले।।34।।
श्री जिनवर को जो भी ध्याये, वह अपने सौभाग्य जगाये।।35।।
शान्तिनाथ की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।36।।

भाव सहित जो दर्शन पाते, वे अपने सौभाग्य जगाते।।37।।
सुत के इच्छुक सुत उपजाते, निर्धन जीव सम्पदा पाते।।38।।
रोगी अपने रोग नशाते, अज्ञानी सद्ज्ञान जगाते।।39।।
'विशद' भाव से महिमा गाएँ, हम भी मोक्ष महापद पाएँ।।40।।

दोहा - चालीसा चालीस दिन, पढ़ें सुनें जो लोग।
सुख शांती सौभाग्य का, मिले उन्हें संयोग।।
शांतिनाथ के चरण को, ध्यायें जो गुणवान।
अल्प समय में ही 'विशद', पावें वे निर्वाण।।

# अस्थिर जीवन

तन पिजड़े से प्राण पखेरु, जब बाहर जावें।
स्वजन और परिजन कोई फिर, तुम्हें ना अपनावें।।1।।
रोते-रोते तेरी चिता में, मिलकर आग लगावें।
कंचन काया जलकर तेरी, राख राख हो जावे।।2।।
आशा पल-पल बढ़ती लेकिन, आयू घटती जाए।
काया जर्जर होवें निश दिन, माया बढ़ती जाए।।3।।
आज मिला जो सुन्दर अवशर, कल आए ना आए।
'विशद' जिन्दगी में कल क्या हो, कोई जान न पाए।।4।।
अतः आत्महित कर ले प्राणी, सद्गुरु यह समझावें।
आज सरीखा पावन अवसर फिर आवे न आवें।।5।।

# श्री शान्तिनाथ भगवान की आरती

तर्ज- भक्ति बेकरार है.........

शान्तिनाथ दरबार है, महिमा अपरम्पार है।
जिन मंदिर में शान्तिनाथ की, हो रही जय-जयकार है।।टेक।।
चयकर के सर्वार्थ सिद्धि से, हस्तिनागपुर जन्म लिए-2
विश्वसेन माँ ऐरादेवी, को आकर प्रभु धन्य किए-2।।
शान्ति...।।1।।
चालिस धनुष रही ऊँचाई, स्वर्ण रंग शुभ पाएँ जी-2
एक लाख वर्षों की आयु, चिन्ह हिरण प्रगटाएँ जी-2।।
शान्ति...।।2।।
कामदेव चक्री तीर्थंकर, हुए तीन पद धारी जी-2
जग वैभव सब छोड़ प्रभु जी, हुए आप अनगारी जी-2।।
शान्ति...।।3।।
भादों वदी सप्तमी पावन, गर्भ कल्याण मनाए जी-2
ज्येष्ठ कृष्ण चौदश को सुर-नर, जन्मोत्सव में आए जी-2।।
शान्ति...।।4।।
ज्येष्ठ कृष्ण की चतुर्दशी को, पावन संयम पाए जी।
पौष शुक्ल दशमी को प्रभु जी, केवलज्ञान जगाए जी।।
शान्ति..।।5।।
ज्येष्ठ कृष्ण चौदश को जिनवर, मोक्षमहाफल पाए जी।
कर्म नाशकर 'विशद' पूर्णतः, शिवपुर धाम बनाए जी।।
शांन्ति...।।6।।

# श्री आदिनाथ विधान

## माण्डला

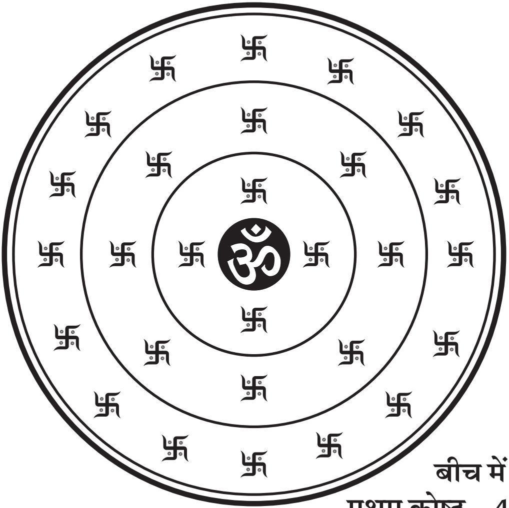

बीच में – ॐ
प्रथम कोष्ठ – 4 अर्घ्य
द्वितीय कोष्ठ – 8 अर्घ्य
तृतीय कोष्ठ – 16 अर्घ्य
कुल – 28 अर्घ्य

रचयिता :

प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

# श्री आदिनाथ स्तवन

(बसंत तिलका छंद)

नाभेय राज कुल मण्डन आदिनाथः।
जातः अयोध्या पुरे मरुदेवि मातुः।।
सिद्धि प्रियाः सकल भव्य हितंकरेभ्यः।
दद्यात वृषं श्री वृषभ जिनराज सम्यक्।।1।।
कैवल्य बोध रवि दीधितिभिः समन्तात्।
दुष्कर्म पंकिल भुवं किल शोषयन यः।।
भव्यस्य चित्त जलज प्रति बोधकारी।
तं जिनेन्द्र सुर नुतं सततं स्तवीमि।।2।।
अष्टापदे विशद बर्फ युते मनोज्ञे।
योगे निरुध्य खलु कर्म वनं ह्यधाक्षीत्।।
लेभे सुमुक्ति ललना - मुपमाव्यतीताम्।
वन्दे त्वनन्त सुख धाम जिनेश तुभ्यं।।3।।
यद् वद् मया भव भवे जिन दुःख-माप्तं।
त्रैलोक्य वित् त्वमपि वेत्सि तदेवसर्वं।।
सर्वेश सम्प्रति भवान् भक्तां यदेव।
कर्तव्य - मस्ति कुरुतां मम तत्प्रमाणं।।4।।
ये त्वां नमंति हृदये दधते स्तवन्ति।
त्वच्छासनैकवचनं च वहंति मूर्ध्ना।।
तेषां सुरा अपि नतिं स्तवनं सुवाच।
कुर्वन्ति नित्यमिह का मनुजस्य वार्ता।।5।।
अकृतानि कृतानीह जिन बिम्बानि सर्वतः।
स्वात्म सौख्य प्रदानि स्यु कुर्युश्च मम मंगलम्।।

# श्री आदिनाथ पूजा विधान

स्थापना

**आदिनाथ भगवान हैं, शिव पद के दातार।**
**आह्वानन् करते हृदय, पाने मुक्ती द्वार।।**

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चौपाई छन्द)

**प्रासुक यह नीर चढ़ाएँ, जल धारा कर हर्षाएँ।**
**हम ऋषभदेव को ध्याएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।।1।।**

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**चन्दन गोशीर घिसाएँ, भवताप से मुक्ती पाएँ।**
**हम ऋषभदेव को ध्याएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।।2।।**

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

**अक्षत जिन चरण चढ़ाएँ, अक्षय पदवी हम पाएँ।**
**हम ऋषभदेव को ध्याएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।।3।।**

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

**सुरभित यह पुष्प चढ़ाएँ, हम कामरोग विनशाएँ।**
**हम ऋषभदेव को ध्याएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।।4।।**

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

चरु ताजे यहाँ चढ़ाएँ, अब क्षुधा से मुक्ति पाएँ।
हम ऋषभदेव को ध्याएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।।5।।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पूजा को दीप जलाएँ, अब आठों कर्म नशाएँ।
हम ऋषभदेव को ध्याएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।।6।।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
अग्नी में धूप जलाएँ, हम मोह तिमिर विनशाएँ।
हम ऋषभदेव को ध्याएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।।7।।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
फल ताजे यहाँ चढ़ाएँ, हम मोक्ष महाफल पाएँ।
हम ऋषभदेव को ध्याएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।।8।।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।
पूजा कर अर्घ्य चढाएँ, अब पद अनर्घ्य पा जाएँ।
हम ऋषभदेव को ध्याएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।।9।।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा – देते शांतीधार, भाव सहित हम भी यहाँ।
पाएँ भवदधि पार, यही भावना भा रहे।।

शान्तये शांतिधारा

सोरठा – पाने शिव सोपान, पुष्पांजलिं करते चरण।
करते हम गुणगान, अतः भाव से हम यहाँ।।

पुष्पांजलि क्षिपेत्

# पंचकल्याणक के अर्घ्य

**आषाढ़ सु द्वितीया गाई, प्रभु गर्भ में आए भाई।**
**हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते।।1।।**

ॐ ह्रीं आषाढ़ कृष्ण द्वितीयां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वदि चैत नमें को स्वामी, जन्मे प्रभु अन्तर्यामी।**
**हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते।।2।।**

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्ण नवम्यां जन्म कल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**नौमी वदि चैत को भाई, जिनवर ने दीक्षा पाई।**
**हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते।।3।।**

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्ण नवम्यां दीक्षा कल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**एकादशि फाल्गुन पाए, प्रभु केवल ज्ञान जगाए।**
**हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते।।4।।**

ॐ ह्रीं फाल्गुन वदि एकादश्यां केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वदि माघ सु चौदश आए, अष्टापद से शिव पाए।**
**हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते।।5।।**

ॐ ह्रीं माघ कृष्ण चर्तुदश्यां मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

# जयमाला

दोहा – ऋषभ देव से देव का, कैसे हो गुणगान।
जयमाला गाते यहाँ, करने को जयगान।।

(पद्धरि छन्द)

जय भोग भूमि का अन्त पाय, जय ऋषभदेव अवतार आय।
जय पिता आपके नाभिराय, जय माता मरुदेवी कहाय।।1।।
जय अवधपुरी नगरी प्रधान, घर-घर में छाया सुयश गान।
सौधर्म इन्द्र तब हर्ष पाय, तव न्हवन मेरु पे जा कराय।।2।।
प्रभु के पद में करके प्रणाम, तव ऋषभनाथ शुभ दिया नाम।
शुभ धनुष पाँच सौ उच्च देह, जन-जन से जिनको रहा नेह।।3।।
लख पूर्व चौरासी उम्र जान, षट्कर्म की शिक्षा दिए मान।
नीलांजना की मृत्यु का योग, पाके छोड़े संसार भोग।।4।।
तब नग्न दिगम्बर भेष धार, निज में निज ध्याये निराकार।
प्रगटाए प्रभु कैवल्य ज्ञान, प्रभु दिव्य देशना दिए जान।।5।।
फिर 'विशद' कर्म का कर विनाश, शिवपुर में जाके किए वास।
अष्टापद पाया मोक्ष थान, जो सिद्धक्षेत्र गाया महान।।6।।
महिमा का जिनकी नहीं पार, संयम धर पाए मोक्ष द्वार।
जो पूज्य हुए जग में महान, देते हैं जग को अभयदान।।7।।

दोहा – गुण गाते हैं भाव से, चरण झुकाते शीश।
अर्चा करते हम 'विशद', पाने को आशीष।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - गुण पाने गुणगान हम, करते मंगलकार।
शिवपद के राही बनें, पाएँ भवदधि पार।।

(इत्याशीर्वादः)

# प्रथम वलयः

दोहा - आराधन आराध कर, किए कर्म का अंत।
वृषभदेव वृष प्राप्त कर, हुए विशद अरहंत।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

## (चार आराधना के अर्घ्य)

(रेखता छन्द)

प्रभु जी पाए सम्यक् दर्श, जगाए मन में अतिशय हर्ष।
हुए प्रभु जी आराधन वान, प्राप्त फिर किए सुपद निर्वाण।।1।।

ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन आराधना युत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राप्त करके प्रभु सम्यक् ज्ञान, जगाए अतिशय केवलज्ञान।
हुए प्रभु जी आराधन वान, प्राप्त फिर किए सुपद निर्वाण।।2।।

ॐ ह्रीं सम्यक् ज्ञान आराधना युत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

प्रभु जी होके चारित वान, किए जो निज आतम का ध्यान।
हुए प्रभु जी आराधन वान, प्राप्त फिर किए सुपद निर्वाण।।3।।

ॐ ह्रीं सम्यक् चारित आराधना युत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**प्रभु जी हो द्वादश तपवान, निर्जरा अनुपम किए प्रधान।**
**हुए प्रभु जी आराधन वान, प्राप्त फिर किए सुपद निर्वाण।।4।।**

ॐ ह्रीं सम्यक् तप आराधना युत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दोहा – सम्यक् दर्शन ज्ञान शुभ, चारित सुतप महान।**
**चउ आराधन कर मिले, शिव पद का सोपान।।5।।**

ॐ ह्रीं चउ आराधना युत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

# द्वितीय वलयः

**दोहा – गुण अतिशय पाएँ प्रभू, दोष रहित भगवान।**
**भव्य जीव करते अतः, भाव सहित गुणगान।।**

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

## जिन गुणावली

(चौपाई)

**जन्म के दश अतिशय प्रभु पाएँ, अतिशय पावन ये प्रगटाएँ।**
**अर्हत् पदवी को प्रभु पाते, अतः जगत में पूजे जाते।।1।।**

ॐ ह्रीं दश जन्मातिशय प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**ज्ञान के अतिशय दश प्रगटाएँ, पावन केवलज्ञान जगाएँ।**
**अर्हत् पदवी को प्रभु पाते, अतः जगत में पूजे जाते।।2।।**

ॐ ह्रीं केवलज्ञान दशातिशय प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चौदह देवों कृत कहलाएँ, अतिशय प्रभु जी ये भी पाएँ।**
**अर्हत् पदवी को प्रभु पाते, अतः जगत में पूजे जाते।।3।।**

ॐ ह्रीं चतुर्दश देवातिशय प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

**होते प्रातिहार्य के धारी, तीन लोक में मंगलकारी।**
**अर्हत् पदवी को प्रभु पाते, अतः जगत में पूजे जाते।।4।।**

ॐ ह्रीं अष्ट प्रातिहार्य युत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**अनन्त चतुष्टय प्रभु जी पाएँ, कर्म घातियाँ आप नशाएँ।**
**अर्हत् पदवी को प्रभु पाते, अतः जगत में पूजे जाते।।5।।**

ॐ ह्रीं अनन्त चतुष्टय युत श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**दोष अठारह रहित कहाए, प्रभु अतिशय महिमा दिखलाए।**
**अर्हत् पदवी को प्रभु पाते, अतः जगत में पूजे जाते।।6।।**

ॐ ह्रीं अष्टादश दोष रहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**कहे प्रभू दश धर्म के धारी, जिनकी महिमा अतिशय कारी।**
**अर्हत् पदवी को प्रभु पाते, अतः जगत में पूजे जाते।।7।।**

ॐ ह्रीं दशधर्म धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**द्वादश अनुप्रेक्षा जो ध्याएँ, अतिशय प्रभु वैराग्य जगाएँ।**
**अर्हत् पदवी को प्रभु पाते, अतः जगत में पूजे जाते।।8।।**

ॐ ह्रीं द्वादश अनुप्रेक्षा भावना युत श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

**प्रभु जी हैं अनुपम गुणधारी, जिनकी महिमा विस्मयकारी।**
**अर्हत् पदवी को प्रभु पाते, अतः जगत में पूजे जाते।।9।।**

ॐ ह्रीं अनुपम गुणधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

# तृतिय वलयः

**दोहा – गुण विशिष्ट पाएँ प्रभू, महिमामयी महान।**
**जिससे हो इस लोक में, जग जन का कल्याण।।**

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

## विशिष्ट गुणावली

(चाल छन्द)

**प्रभु दोष रहित कहलाए, सर्वज्ञ आप्तता पाए।**
**परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।1।।**

ॐ ह्रीं सर्व अपराध नाशन समर्थ श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

**है द्वेष रहित अविकारी, है जग से महिमा न्यारी।**
**परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।2।।**

ॐ ह्रीं समस्तविध उपद्रव नाशन समर्थ श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**प्रभु वीतरागता धारी, निज आतम ब्रह्म विहारी।**
**परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।3।।**

ॐ ह्रीं समस्त विध अनर्थकारक रागभूत विनाशन समर्थ श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मति ज्ञानाज्ञान निवारी, कैवल्य ज्ञान के धारी।**
**परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।4।।**

ॐ ह्रीं समस्त विध दीनता हीनता नाशन समर्थ श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**श्रुत ज्ञानाज्ञान के त्यागी, कहलाए आप विरागी।**
**परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।5।।**

ॐ ह्रीं समस्त विध अज्ञान नाशन समर्थ श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**द्वय अवधि ज्ञान विनिवारी, जगती पति जिन शिवकारी।**
**परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।6।।**

ॐ ह्रीं समस्त विध दुर्घटना नाशन समर्थ श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मन पर्यय ज्ञान भी छोड़े, निज से निज नाता जोड़े।**
**परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।7।।**

ॐ ह्रीं समस्त विध मनोरोग-विकार-विभ्रम नाशन समर्थ श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जो हैं तत्वों के ज्ञाता, इस जग के भाग्य विधाता।**
**परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।8।।**

ॐ ह्रीं सप्त तत्व परमोपदेशक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**जो पुण्य पाप परिहारी, जग-जन के रक्षाकारी।**
**परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।9।।**

ॐ ह्रीं समस्त विध पराभव नाशन समर्थ श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**हैं जीव कई संसारी, इक दूजे के उपकारी।**
**परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।10।।**

ॐ ह्रीं पंचपरावर्तन संसार भ्रमण नाशन समर्थ आराध्य स्वरूप श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जो मुक्त जीव हो जाते, वे सिद्ध बुद्ध कहलाते।**
**परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।11।।**

ॐ ह्रीं आत्म सिद्धि निरोधक कारण विनाशन समर्थ आराध्य स्वरूप श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**त्रस थावर जीव कहाए, जग में सब भ्रमते पाए।**
**परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।12।।**

ॐ ह्रीं संयोग वियोग दुख विनाशन समर्थ आराध्य स्वरूप श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जो भव्य जीव कहलाएँ, वे रत्नत्रय निधि पाएँ।**
**परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।13।।**

ॐ ह्रीं रत्नत्रय आराध्य स्वरूप श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**होते अभव्य जो प्राणी, बहिरातम हो अज्ञानी।**
**परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।14।।**

ॐ ह्रीं निधत्ति निकाचित कर्म विनाशन समर्थ आराध्य स्वरूप श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अन्तर आतम हो ज्ञानी, जो वीतराग विज्ञानी।**
**परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।15।।**

ॐ ह्रीं कुश्रुत श्रद्धा विनाशन समर्थ आराध्य स्वरूप श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जिन सकल निकल द्वय गाए, परमातम विशद कहाए।**
**परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।16।।**

ॐ ह्रीं कपोल कल्पित सिद्धान्त श्रद्धा विनाशन समर्थ आराध्य स्वरूप श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**यह गुण विशेष जिन पावें, अरहंत अतः कहलावें।**
**परमेष्ठी जग हितकारी, जय-जय-जग मंगलकारी।।17।।**

ॐ ह्रीं विशिष्ट गुण धारक कष्ट निवारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जाप्य : ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः मम सर्व कार्य सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।**

# जयमाला

**दोहा - धनुष पाँच सौ उच्चतम, तन है स्वर्ण समान।**
**लख चौरासी पूर्व वय, ऋषभनाथ भगवान।।**

(शम्भू छन्द)

**पंचकल्याणक पाने वाले, तीर्थंकर हैं जगत प्रसिद्ध।**
**कर्म नाशकर अपने सारे, हो जाते हैं वे जिन सिद्ध।।**
**गर्भ कल्याणक में आने के, छह महीने पहले शुभकार।**
**देव रत्न वृष्टी करते हैं, जन्म नगर में मंगलकार।।1।।**
**अष्ट देवियाँ गर्भ का शोधन करती आके भाव विभोर।**
**उत्सव होता है नगरी में, मंगलमय होता चारों ओर।।**
**सोलह स्वप्न देखती माता, जिनकी महिमा अपरम्पार।**
**जन्म समय में इन्द्र चरण में, बोला करते जय जयकार।।2।।**
**पाण्डुक शिला पे न्हवन कराने, ऐरावत ले आता इन्द्र।**
**एक हजार आठ कलशों से, न्हवन करायें सौ सौ इन्द्र।।**

पद युवराज प्राप्त करके जिन, पाते हैं नर भव के भोग।
हो विरक्त दीक्षा पाते हैं, पा करके अनिष्ट संयोग।।3।।
केश लुंच कर महाव्रती हो, करते हैं निज आतम ध्यान।
कर्म निर्जरा करते ज्ञानी, असंख्यात गुणी जिन भगवान।।
कर्म घातियाँ के नाशी जिन, प्रगटाते हैं केवलज्ञान।
समवशरण की रचना करते, स्वर्ग से आके इन्द्र महान।।
दिव्य देशना खिरती प्रभु की, भव्य जीव करते रसपान।
कोई दर्शन ज्ञान जगाकर, चारित पा करते कल्याण।।
अन्त समय में कर्म नाशकर, करते हैं प्रभु मोक्ष प्रयाण।
मोक्ष मार्ग दर्शायक जग में, आदिनाथ जी हुए महान।।5।।

दोहा – राही बनते मोक्ष के, तीर्थंकर भगवान।
जिनसे दर्शन ज्ञान पा, करते निज कल्याण।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा –श्रद्धा से सम्यक्त्व हो, होवे सम्यक् ज्ञान।
सम्यक् चारित हो विशद, जो है शिव सोपान।।

इत्याशीर्वादः

# श्री आदिनाथ चालीसा

दोहा – परमेष्ठी जिन पाँच हैं, मंगल उत्तम चार।
शरण चार की प्राप्ति कर, भवदधि पाऊँ पार।।
आज यहाँ हम भाव से, करते है गुणगान।
चालीसा जिन आदि का, गाते विशद महान।।

चौपाई

लोकालोक अनन्त बताया, जिसका अन्त कहीं न पाया।।1।।
लोक रहा है विस्मयकारी, चौदह राजू है मनहारी।।2।।
ऊर्ध्व लोक ऊर्ध्व में गाया, अधोलोक नीचे बतलाया।।3।।
मध्य लोक है मध्य में भाई, सागर दीप युक्त सुखदायी।।4।।
नगर अयोध्या जन्म लिया है, नाभिराय को धन्य किया है।।5।।
सर्वार्थ-सिद्धि से चय कर आये, मरुदेवी के लाल कहाए।।6।।
चिन्ह बैल का पद में पाया, लोगों ने जयकार लगाया।।7।।
आदिनाथ प्रभु जी कहलाए, प्राणी सादर शीश झुकाए।।8।।
जीवों को षट् कर्म सिखाए, सारे जग के कष्ट मिटाए।।9।।
पद युवराज का पाये भाई, विधि स्वयंवर की बतलाई।।10।।
सुत ने चक्रवर्ति पद पाया, कामदेव सा पुत्र कहाया।।11।।
हुई पुत्रियाँ उनके भाई, कालदोष की यह प्रभुताई।।12।।
ब्राह्मी को श्रुत लिपि सिखाई, ब्राह्मी लिपि अतः कहलाई।।13।।
लघु सुता सुन्दरी कहलाई, अंक ज्ञान की कला सिखाई।।14।।
लाख तिरासी पूरब जानो, काल भोग में बीता मानो।।15।।
इन्द्र के मन में चिंता जागी, प्रभु बने बैठे हैं रागी।।16।।
उसने युक्ति एक लगाई, देवी नृत्य हेतु बुलवाई।।17।।
उससे अतिशय नृत्य कराया, तभी मरण देवी ने पाया।।18।।
दृश्य प्रभु के मन में आया, प्रभु को तब वैराग्य समाया।।19।।
केश लुंच कर दीक्षा धारी, संयम धार हुए अविकारी।।20।।
छह महीने का ध्यान लगाया, चित् का चिंतन प्रभु ने पाया।।21।।
चर्या को प्रभु निकले भाई, विधि किसी ने जान न पाई।।22।।

छह महीने तक प्रभु भटकाए, निराहार प्रभु काल बिताए।।23।।
नृप श्रेयांश को सपना आया, आहार विधि का ज्ञान जगाया।।24।।
अक्षय तृतीया के दिन भाई, चर्या की विधि प्रभु ने पाई।।25।।
भूप ने यह सौभाग्य जगाया, इक्षु रस आहार कराया।।26।।
पंचाश्चर्य हुए तब भाई, ये है प्रभुवर की प्रभुताई।।27।।
प्रभुजी केवलज्ञान जगाए, समवशरण तब देव बनाए।।28।।
प्रातिहार्य अतिशय प्रगटाए, दिव्य ध्वनि तब प्रभु सुनाए।।29।।
बारह योजन का शुभ गाए, गणधर चौरासी प्रभु पाए।।30।।
माघ वदी चौदश कहलाए, अष्टापद से मोक्ष सिधाए।।31।।
मोक्ष मार्ग प्रभु ने दर्शाया, जैनधर्म का ज्ञान कराया।।32।।
योग निरोध प्रभुजी कीन्हें, कर्म नाश सारे कर दीन्हें।।33।।
शिव पदवी को प्रभु ने पाया, सिद्ध शिला स्थान बनाया।।34।।
बने पूर्णतः प्रभु अविकारी, सुख अनन्त पाये त्रिपुरारी।।35।।
हम भी यही भावना भाते, पद में सादर शीश झुकाते।।36।।
जगह-जगह प्रतिमाएँ सोहें, भवि जीवों के मन को मोहें।।37।।
क्षेत्र बने कई अतिशयकारी, सारे जग में मंगलकारी।।38।।
जिस पदवी को तुमने पाया, वह पाने का भाव बनाया।।39।।
तव पूजा का फल हम पाएँ, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ।।40।।

दोहा – चालीसा चालीस दिन, दिन में चालीस बार।
'विशद' भाव से जो पढ़ें, पावें भव से पार।।
रोग शोक पीड़ा मिटे, होवे बहु गुणवान्।
कर्म नाश कर अन्त में, होवे सिद्ध महान।।

# श्री आदिनाथ जी की आरती

आज करें हम आदि प्रभु की, आरती मंगलकारी-2।
रोग-शोक-संताप निवारक-2, पावन मंगलकारी।।
हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती।।टेक।।
भक्तों को हे प्रभू आपने, अतिशय कई दिखाए-2।
दीन-दुखी जो दर पे आए-2, उनके कष्ट मिटाए।।
हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती।।1।।
दूर दूर से आशा लेकर, भक्त यहाँ पर आते-2।
भक्त आपकी आरती करके-2, मन वांछित फल पाते।।
हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती।।2।।
कृपा आपकी पाने को हम, दर पे चल के आए-2।
अर्चा करने 'विशद' भाव से-2, दीप जलाकर लाए।।
हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती।।3।।
हमने सुना है सद्भक्तों के, तुम हो कष्ट निवारी-2।
हम भी द्वार आपके आए-2, आज हमारी बारी।।
हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती।।4।।
दीनानाथ अनाथों के हो, सब पर कृपा दिखाते-2।
अतः भक्त तव चरणों आके-2, सादर शीश झुकाते।।
हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती।।5।।

# श्री पुष्पदंतनाथ विधान

## माण्डला

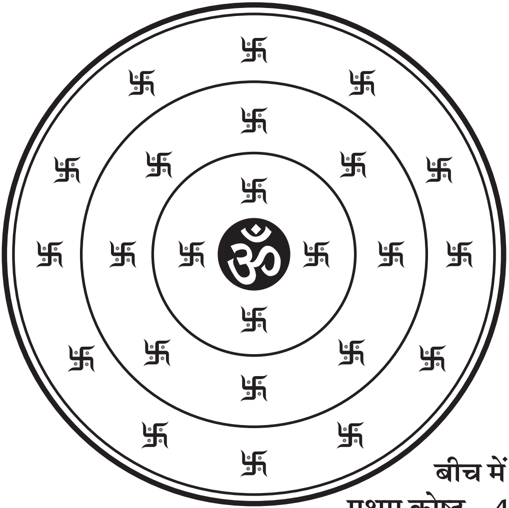

बीच में – ॐ

प्रथम कोष्ठ – 4 अर्घ्य

द्वितीय कोष्ठ – 8 अर्घ्य

तृतीय कोष्ठ – 12 अर्घ्य

कुल – 24 अर्घ्य

रचयिता :

प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

# श्री पुष्पदंतनाथ स्तवन

दोहा – सुविधि बताए मोक्ष की, पुष्पदन्त भगवान।
जिनका हम करते यहाँ, भाव सहित गुणगान।।

सोलह कारण भव्य भावना, पूर्व भवों में भाए हैं।
पावन तीर्थंकर प्रकृति शुभ, पुष्पदन्त जी पाए हैं।।
गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष शुभ, पंचकल्याणक प्रगटाए।
कर्म नाशकर अपने सारे, मोक्ष महापद को पाए।।1।।
मोक्षमार्ग के राही पावन, होकर किए जगत कल्याण।
रत्नत्रय को पाने वाले, पाए आप अलौकिक ज्ञान।।
द्वादश तप को तपने वाले, किए निर्जरा भली प्रकार।
अन्तर्बाह्य परिग्रह त्यागी, होके आप परम अनगार।।2।।
ज्ञान ध्यान तप लीन जिनेश्वर, कर्म घातिया किए विनाश।
ज्ञान दर्शनानन्त वीर्य सुख, का भी प्रभु जी किए प्रकाश।।
समवशरण की रचना करके, इन्द्र किए प्रभु की जयकार।
तीन योग से प्रभु के चरणों, वन्दन कीन्हे बारम्बार।।3।।
प्रभु की दिव्य देशना पावन, ॐकारमय रही महान।।
श्रद्धा ज्ञानाचरण प्राप्त कर, मोक्षमार्ग पर करें गमन।
ऐसे शिव दर्शायक प्रभुपद, करते हम सम्यक अर्चन।।4।।

दोहा – जिनकी महिमा का करें, सुर नर मुनि गुणगान।
तिनकी अर्चा कर विशद, पाएँ शिव सोपान।।

(पुष्पांजलिं क्षिपते)

# श्री पुष्पदंत विधान

स्थापना

**दोहा – पुष्पदंत भगवान का, सुविधिनाथ भी नाम।**
**आह्वानन् करते हृदय, करके चरण प्रणाम।।**

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(रेखता छन्द)

**क्षीर सम देते नीर चढ़ाय, रोग जन्मादिक मम नश जाय।**
**सुविधि जिन की अर्चा शुभकार, करे जो पाए भवदधि पार।।1।।**

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**चढ़ाने लाए गंध बनाय, भवातप पूर्ण नाश हो जाय।**
**सुविधि जिन की अर्चा शुभकार, करे जो पाए भवदधि पार।।2।।**

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

**धवल अक्षत से पूज रचाय, सुपद अक्षत हमको मिल जाय।**
**सुविधि जिन की अर्चा शुभकार, करे जो पाए भवदधि पार।।3।।**

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

**पुष्प सुरभित यह दिए चढ़ाय, काम रुज पूर्ण नाश हो जाए।**
**सुविधि जिन की अर्चा शुभकार, करे जो पाए भवदधि पार।।4।।**

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**सुचरु के लाए थाल भराय, क्षुधा रुज मेरा भी नश जाय।**
**सुविधि जिन की अर्चा शुभकार, करे जो पाए भवदधि पार।।5।।**

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दीप यह घृत का लिया जलाय, मोहतम नाश पूर्ण हो जाय।**
**सुविधि जिन की अर्चा शुभकार, करे जो पाए भवदधि पार।।6।।**

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

**धूप यह लाए सुगन्धीवान, कर्म नश पाएँ शिव सोपान।**
**सुविधि जिन की अर्चा शुभकार, करे जो पाए भवदधि पार।।7।।**

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**सरस फल चढ़ा रहे हम आज, मोक्ष पद का पाने साम्राज्य।**
**सुविधि जिन की अर्चा शुभकार, करे जो पाए भवदधि पार।।8।।**

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**विशद यह चढ़ा रहे हम अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।**
**सुविधि जिन की अर्चा शुभकार, करे जो पाए भवदधि पार।।9।।**

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सोरठा- देते शांती धार, शांती पाने के लिए।**
**कर दो यह उपकार, हमको भी निज सम करो।।**

(शान्तये शान्तिधारा)

**सोरठा- हे त्रिभुवन पति ईश !, पुष्पांजलि करते चरण।**
**पाएँ यह आशीष, शिव पद के राही बने।।**

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

# पंचकल्याणक के अर्घ्य

**फागुन वदि नौमि कहाए, प्रभु सुविधि गर्भ में आए।**
**हम जिन महिमा को गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।1।।**

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा नवम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अगहन सुदि एकम पाए, सुर जन्म कल्याण मनाए।**
**हम जिन महिमा को गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।2।।**

ॐ ह्रीं अगहन शुक्लाप्रतिपदायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अगहन सुदि एकम जानो, प्रभु दीक्षा धारे मानो।**
**हम जिन महिमा को गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।3।।**

ॐ ह्रीं अगहन शुक्लाप्रतिपदायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कार्तिक सुदि दोज बताई, प्रभु जी ने दीक्षा पाई।**
**हम जिन महिमा को गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।4।।**

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ला द्वितीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**भादों सुदि आठें स्वामी, प्रभु हुए मोक्ष पथगामी।**
**हम जिन महिमा को गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।5।।**

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लाऽष्टम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

# जयमाला

दोहा – सुविधि बताए मोक्ष की, पाए केवल ज्ञान।
जयमाला गाते यहाँ, करते हम यशगान।।

(चाल छन्द)

प्रभु प्राणत स्वर्ग से आए, काकन्दी धन्य बनाए।
तीर्थंकर पदवी धारी, इस जग में मंगलकारी।।1।।
जब गर्भ में प्रभु जी आए, सुर रत्न वृष्टि करवाए।
जन्मोत्सव इन्द्र मनाए, मेरू पे न्हवन कराए।।2।।
हैं मगर सुलक्षण धारी, तन श्वेत रंग मनहारी।
लख पूर्व दो आयू पाई, सौ धनुष रही ऊँचाई।।3।।
युवराज सुपद को पाए, कई वर्षों राज्य चलाए।
प्रभु उल्का पतन निहारे, संयम के भाव विचारे।।4।।
प्रभु शाल वृक्ष तल आए, दीक्षाधर ध्यान लगाए।
फिर घाती कर्म नशाए, प्रभु केवल ज्ञान जगाए।।5।।
सुर समवशरण बनवाए, वसु योजन का बतलाए।
गणधर अठासि बतलाए, गणि नायक प्रथम कहलाए।।6।।
प्रभु सुप्रभ कूट पे आए, सम्मेद शिखर कहलाए।
भादों सुदि आठें जानो, शिव पदवी पाए मानो।।7।।

दोहा – मंगलमय मंगल कहे, आप त्रिलोकी नाथ।
अर्चा करते भाव से, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- नाथ ! आपकी भक्ति से, मिला हमें आधार।
'विशद' मोक्ष पद का मिले, हमको प्रभु उपहार ।।
।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

# प्रथम वलयः

दोहा- चउ संज्ञाएँ जीव को, करें सतत् बेहाल।
किए नाश जिन पद नमन, मेरा विशद त्रिकाल ।।
(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

## चतुः संज्ञा विनाशक जिन के अर्घ्य

(शम्भू छन्द)

रत्नत्रय के धारी जिनवर, करते केवल ज्ञान प्रकाश।
आहार संज्ञा का विनाशकर, करते हैं शिवपुर में वास ।।1 ।।
ॐ ह्रीं आहारसंज्ञा रहित श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
निर्भय होके करें साधना, सप्त भयों का करें विनाश।
केवल ज्ञान प्रकट करके जिन, सिद्ध शिला पर करें निवास ।।2 ।।
ॐ ह्रीं भयसंज्ञा रहित श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
कामबली पर विजय प्राप्त कर, मैथुन संज्ञा किए विनाश।
कर्म घातिया नाश किए जिन, पाए हैं शिव पद में वास ।।3 ।।
ॐ ह्रीं मैथुन संज्ञा रहित श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
बाह्याभ्यंतर रहा परिग्रह, पूर्ण रूप से करके त्याग।
परिग्रह संज्ञा नाश किए प्रभु, चेतन गुण में धर अनुराग ।।4 ।।
ॐ ह्रीं परिग्रह संज्ञा रहित श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – चउ संज्ञाएँ नाशकर, हुए असंज्ञ जिनेश।
जिनकी अर्चा भाव से, करते यहाँ विशेष।।5।।

ॐ ह्रीं चतु: संज्ञा नाशक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

# द्वितिय वलय:

दोहा – अष्ट कर्म का नाश कर, पाए शिव सोपान।
गुण पाने जिन सिद्ध के, करते हम गुणगान।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

## अष्ट कर्म निवारक जिन के अर्घ्य

(पद्धरि छन्द)

प्रभु ज्ञानावरणी कर्मनाश, फिर करें ज्ञान केवल प्रकाश।
जिन पुष्पदन्त जग में महान, हम पूज रहे जिन पद प्रधान।।1।।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणी कर्म रहित अनंत ज्ञान युक्त श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन कर्म दर्शनावरण नाश, प्रभु करें दर्श क्षायिक प्रकाश।
जिन पुष्पदन्त जग में महान, हम पूज रहे जिन पद प्रधान।।2।।

ॐ ह्रीं दर्शनावरण कर्म रहित अनंत दर्शन युक्त श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब करें वेदनीय का विनाश, गुण अव्याबाध में करें वास।
जिन पुष्पदन्त जग में महान, हम पूज रहे जिन पद प्रधान।।3।।

ॐ ह्रीं वेदनीय कर्म रहित अव्याबाध गुण युक्त श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**प्रभु मोह कर्म से रहे हीन, जो सुखानन्त में रहें लीन।**
**जिन पुष्पदन्त जग में महान, हम पूज रहे जिन पद प्रधान।।4।।**

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म रहित अनंत सुख युक्त श्री पुष्पदंत
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जिन आयु कर्म का कर विनाश, अवगाहन गुण में करें वास।**
**जिन पुष्पदन्त जग में महान, हम पूज रहे जिन पद प्रधान।।5।।**

ॐ ह्रीं आयु कर्म रहित अवगाहनत्व गुण युक्त श्री पुष्पदंत
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**प्रभु नाम कर्म करते विनाश, सूक्ष्मत्व सुगुण करते प्रकाश।**
**जिन पुष्पदन्त जग में महान, हम पूज रहे जिन पद प्रधान।।6।।**

ॐ ह्रीं नाम कर्म रहित सूक्ष्मत्व गुण युक्त श्री पुष्पदंत
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**ना गोत्र कर्म का रहा काम, गुण पाए अगुरु-लघु रहा नाम।**
**जिन पुष्पदन्त जग में महान, हम पूज रहे जिन पद प्रधान।।7।।**

ॐ ह्रीं गोत्र कर्म रहित अगुरु-लघुत्व गुण युक्त श्री पुष्पदंत
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**प्रभु अन्तराय करके विनाश, जिन वीर्यानन्त में करें वास।**
**जिन पुष्पदन्त जग में महान, हम पूज रहे जिन पद प्रधान।।8।।**

ॐ ह्रीं अन्तराय कर्म रहित अनंतवीर्य युक्त श्री पुष्पदंत
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दोहा – अष्ट कर्म को नाशकर, पाए शिवपुर वास।**
**अर्चा करते हम यहाँ, होवे पूरी आस।।**

ॐ ह्रीं अष्ट कर्म रहित अष्ट गुण युत श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

# तृतिय वलयः

**दोहा – द्वादश तप धारी हुए, पुष्पदन्त भगवान।**
**कर्म निर्जरा कर विशद, पाएँ पद निर्वाण।।**

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

## द्वादश तप के अर्घ्य

(सखी छन्द)

**जिनने अनशन तप धारा, वे त्याग करें आहारा।**
**हम सुविधिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।1।।**

ॐ ह्रीं अनशन तप धारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**तप ऊनोदर के धारी, होते हैं अल्पाहारी।**
**हम सुविधिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।2।।**

ॐ ह्रीं ऊनोदर तप धारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**तप व्रत संख्यान के धारी, संकल्प करें अनगारी।**
**हम सुविधिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।3।।**

ॐ ह्रीं व्रत परिसंख्यान तप धारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**रस त्याग सुतप के धारी, जो छोड़ें हो अविकारी।**
**हम सुविधिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।4।।**

ॐ ह्रीं रस परित्याग तप धारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तप विविक्त शैय्यासनधारी, हों अनाशक्त अनगारी।**
**हम सुविधिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।5।।**

ॐ ह्रीं विविक्त शैय्यासन तप धारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तप कायोत्सर्ग के धारी, तजते ममत्व गुणधारी।**
**हम सुविधिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।6।।**

ॐ ह्रीं कायोत्सर्ग तप धारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**तप प्रायश्चित जो पाते, वे अपने दोष नशाते।**
**हम सुविधिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।7।।**

ॐ ह्रीं प्रायश्चित तप धारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**जिन विनय सुतप के धारी, इस जग में मंगलकारी।**
**हम सुविधिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।8।।**

ॐ ह्रीं विनय तप धारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**तप वैय्यावृत्ती धारें, वे संयम रत्न सम्हारें।**
**हम सुविधिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।9।।**

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्ति तप धारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तप स्वाध्याय के धारी, चिन्तन करते अनगारी।**
**हम सुविधिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।10।।**
ॐ ह्रीं स्वाध्याय तप धारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
**व्युत्सर्ग सुतप जो पावें, वे तन से नेह घटावें।**
**हम सुविधिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।11।।**
ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग तप धारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
**हैं ध्यान सुतप के धारी, चिन्ता रोधी अविकारी।**
**हम सुविधिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।12।।**
ॐ ह्रीं ध्यान तप धारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
**यह द्वादश तप जो पावें, वे अपने कर्म नशावें।**
**हम सुविधिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।13।।**
ॐ ह्रीं द्वादश तप धारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।
**जाप्य :-** ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः मम सर्व कार्य
सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

# जयमाला

**दोहा – दिव्य देशना दे प्रभू, जग को किए निहाल।**
**भाव सहित जिनकी यहाँ, गाते हैं जयमाल।।**
(वीर छन्द)
**पुष्पदन्त जिनराज आज हम, द्वार आपके आये हैं।**
**पूजा सुविधि रचाकर हमने, तुमरे गुण प्रभु गाये हैं।।**
**तुम्हें छोड़ किसको देखे, किसको पाएँ इस जगती पर।**
**हो आप अलौकिक दुनियाँ में, प्रभु हृदय बसाएँ जगती पर।।**

दर्श किया जिस पल हे भगवन् !, उस पल अति आनन्द मिला।
हृदय सरोवर में उस पल शुभ, भक्ती रस का सुमन खिला।।
पुष्पदन्त जिनराज आपका, जिन मन्दिर में वास रहा।
हृदय बनेगा मंदिर उसका, जो प्रभु पद का दास रहा।।
तुम हो सुख के सागर भगवन्, अक्षय सौख्य प्रदान करो।
भक्त आपके आस लगाएँ, अक्षय सुख का दान करो।।
अहो जिनालय ! अहो जिनेश्वर !, पावन श्रेष्ठ कहाते हैं।
अतः चित्त से प्रमुदित होकर, जिन महिमा को गाते हैं।।
चैत्यालय ही सिद्धालय का, पथ दर्शाने वाला है।
चिदानन्द चिन्मय शुभ चेतन, कृतकृत्य बनाने वाला है।।
पाप राशि भव-भव से संचित, क्षण में भस्म हुआ करती।
पुष्पदन्त जिनराज की भक्ती, भव-भव के दुख को हरती।।
जिनबिम्ब अचेतन होकर भी, जीवों को वांछित फल देते।
जो पूज रहे हैं भक्ती से, उनके सब संकट हर लेते।।
जय-जय जिनदेव अमंगल हर, जग में मंगल करने वाले।
जय 'विशद' ज्ञान के ईश आप, सब दोषों को हरने वाले।।

दोहा - पुष्पदंत भगवान हैं, जग के पालन हार।
हम को भी आशीष दो, जाएँ भव से पार।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - पुष्पांजलि करते यहाँ, पाने भव का कूल।
यही भावना है विशद, होवें सब अनुकूल।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

# श्री पुष्पदंत चालीसा

दोहा – अर्हत् सिद्धागम धरम, आचार्योपाध्याय संत।
जिन मंदिर जिनबिम्ब को, नमन अनन्तानंत।।
कुन्द पुष्प सम रूप शुभ, पुष्पदन्त है नाम।
चरण-कमल द्वय में विशद, बारम्बार प्रणाम।।

चौपाई

जय-जय पुष्पदन्त जिन स्वामी, करुणानिधि हे अन्तर्यामी।।1।।
तुम हो सब देवों के देवा, इन्द्र करें तव पद की सेवा।।2।।
महिमा है इस जग से न्यारी, सारी जगती बनी पुजारी।।3।।
महिमा सारा जग ये गाए, पद में सादर शीश झुकाए।।4।।
प्राणत स्वर्ग से चयकर आए, काकन्दी नगरी कहलाए।।5।।
पिता श्री सुग्रीव कहाए, माताश्री जयरामा पाए।।6।।
फाल्गुन कृष्ण नौमी कहलाए, मूल नक्षत्र गर्भ में आए।।7।।
प्रातः काल का समय बताए, इक्ष्वाकु कुल नन्दन गाए।।8।।
मगसिर शुक्ला एकम जानो, प्रभु ने जन्म लिया यह मानो।।9।।
मगर चिन्ह प्रभु का बतलाया, इन्द्रों ने पद शीश झुकाया।।10।।
धवल रंग प्रभु जी शुभ पाए, धनुष एक सौ ऊँचे गाए।।11।।
उल्कापात देख के स्वामी, बने आप मुक्ती पथगामी।।12।।
मगसिर कृष्णा एकम पाए, अनुराधा नक्षत्र कहाए।।13।।
अपरान्ह् काल दीक्षा का गाया, तृतिय भक्त प्रभु ने पाया।।14।।
दीक्षा वृक्ष पुष्प कहलाए, शाल वृक्ष तल ध्यान लगाए।।15।।

सहस्र भूप संग दीक्षा पाए, निज आतम का ध्यान लगाए।।16।।
कार्तिक शुक्ला तीज बखानी, हुए प्रभु जी केवलज्ञानी।।17।।
काकन्दी नगरी फिर आए, अक्षतरु वन पुष्प कहाए।।18।।
समवशरण वसु योजन पाए, सुन्दर आके देव रचाए।।19।।
एक महीने पूर्व से स्वामी, योग निरोध किए जगनामी।।20।।
यक्ष आपका ब्रह्म कहाए, काली श्रेष्ठ यक्षणी पाए।।21।।
गणधर आप अठासी पाए, उनमें नाग प्रथम कहलाए।।22।।
आयू लाख पूर्व दो पाए, चार वर्ष छद्मस्थ बिताए।।23।।
सर्व ऋषी दो लाख बताए, समवशरण में प्रभु के गाए।।24।।
घोषा प्रथम आर्यिका जानो, छियालिस गुण के धारी मानो।।25।।
गिरि सम्मेद शिखर पर आए, निज आतम का ध्यान लगाए।।26।।
सुप्रभ कूट रहा शुभकारी, हरा भरा जो है मनहारी।।27।।
भादों शुक्ल अष्टमी जानो, एक हजार मुनि संग मानो।।28।।
मूल नक्षत्र प्रभु जी पाए, अपराह्न काल में मोक्ष सिधाए।।29।।
शुक्रारिष्ट ग्रह जिन्हें सताए, पुष्पदंत प्रभु को वह ध्याये।।30।।
पूजा और विधान रचाए, भावसहित चालीसा गाए।।31।।
करे आरती मंगलकारी, शुक्रवार के दिन मनहारी।।32।।
जीवन में सुख-शांति पावे, भक्त भाव से जो गुण गावे।।33।।
प्रभु की महिमा रही निराली, है सौभाग्य जगाने वाली।।34।।
महिमा सुनकर के हम आए, भाव सुमन अपने उर लाए।।35।।
कृपा करो तुम हे त्रिपुरारी, रोग शोक भय कष्ट निवारी।।36।।
मम जीवन हो मंगलकारी, विघ्न व्याधि नश जाए हमारी।।37।।

तव प्रतिमा के दर्शन पाएँ, हर्ष-हर्ष करके गुण गाएँ।।38।।
पद में सादर शीश झुकाएँ, अपने सारे कर्म नशाएँ।।39।।
भव सिन्धू से मुक्ति पाएँ, हम भी अब शिव पदवी पाएँ।।40।।

दोहा - चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
सुख-शांती आनन्द पा, बने श्री के नाथ।।
विधि सहित पूजा करें, करके 'विशद' विधान।
पाते हैं सौभाग्य वह, अन्त में हो निर्वाण।।

---

# प्रायश्चित पाठ

तर्ज - दिन रात मेरे.....

अपराध क्षम्म होवें, आशीष विशद पाएँ।
सब दोष दूर करने, जिन पद में सिर झुकाएँ।।1।।
तन से वचन से मन से, अपराध जो किए हैं।
कृत कारितानुमत से, दुख क्लेश जो दिए हैं।।2।।
चारों कषाय करके, स्वभाव को भुलाया।
आलस प्रमाद द्वारा, जीवों को बहु सताया।।3।।
भोजन शयन गमन में, कई पाप बन्ध कीन्हें।
अज्ञान भाव द्वारा, पर को जो कष्ट दीन्हें।।4।।
दिन रात हम से क्षण-क्षण अपराध हो रहे हैं।
कर्मों के बोझ से दब, पापों को ढो रहे हैं।।5।।
जिन देव गुरु शरण में, प्रायश्चित्त लेने आए।
मुक्ती श्री को पाके, भव रोग विनश जाएँ।।6।।

# श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान

## माण्डला

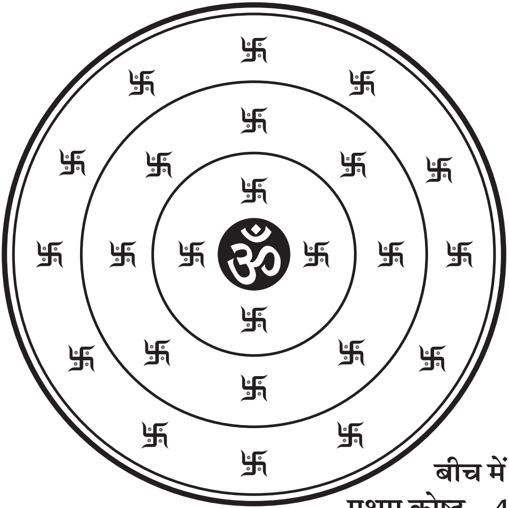

बीच में – ॐ

प्रथम कोष्ठ – 4 अर्घ्य

द्वितीय कोष्ठ – 8 अर्घ्य

तृतीय कोष्ठ – 12 अर्घ्य

कुल – 24 अर्घ्य

रचयिता :

प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

# श्री मुनिसुव्रत जिन स्तवन

दोहा – भूमण्डल के ज्योति प्रभू, तीन लोक के नाथ।
वन्दन कर ज्ञानोदय के, चरण झुकाएँ माथ।।

ज्ञानोदय

हे नाथ ! आपने जग बन्धन, तजकर के व्रत को धार लिया।
जो पथ पाया था सिद्धों ने, उसको तुमने स्वीकार किया।।
यह तीन लोक में पावन पथ, इसके हम राही बन जावें।
हम शीश झुकाते चरणों में, प्रभु सिद्धों की पदवी पावें।।1।।
शुभ तीर्थंकर सम पुण्य पदक, यह पूर्व पुण्य से पाये हैं।
सब कर्म घातिया नाश किए, अरु केवल ज्ञान जगाये हैं।।
शुभ ज्ञान की महिमा अनुपम है, यह द्रव्य चराचर ज्ञाता हैं।
इस ज्ञान को पाने वाला तो, निश्चय मुक्ती को पाता है।।2।।
जिनको यह ज्ञान प्रकट होता, वह अर्हत् पद के धारी हों।
वह सर्व लोक में पूज्य रहे, अरु स्व पर के उपकारी हों।।
वे दिव्य देशना के द्वारा, जग जीवों का कल्याण करें।
करते सद् ज्ञान प्रकाश अहा, भवि जीवों का अज्ञान हरें।।3।।
यह प्रभु का पद ऐसा पद है, जग में कोई और समान नहीं।
हम तीन लोक में खोज लिए, पर पाया नहीं है और कहीं।।
उस पद का मन में भाव जगा, जिसको तुमने प्रभु पाया है।
यह भक्त जगत की माया तज, प्रभु आप शरण में आया है।।4।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

# श्री मुनिसुव्रत नाथ पूजा विधान (लघु)

स्थापना

**सुव्रत के धारी मुनिसुव्रत, मोक्ष मार्ग पर किए प्रयाण।**
**जिनकी अर्चा करके होवे, भवि जीवों का भी कल्याण।।**
**भव्य जीव सौभाग्य जगाएँ, करके प्रभु का आराधन।**
**विशद हृदय में आज यहाँ पर, करते हैं हम आह्वानन्।।**

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(विष्णुपद छन्द)

**हम रहते हैं तैय्यार, क्रोधित होने को।**
**यह जल लाए हे नाथ !, आतम धोने को।।**
**हे मुनिसुव्रत भगवान !, तुमको ध्याते हैं।**
**मम कष्ट हरो हे नाथ !, महिमा गाते हैं।।1।।**

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**कर्मों की भारी मार, भव-भव में खाई।**
**निज गुण पाने की याद, हमको अब आई।।**
**हे मुनिसुव्रत भगवान !, तुमको ध्याते हैं।**
**मम कष्ट हरो हे नाथ !, महिमा गाते हैं।।1।।**

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

**हे अक्षय निधि भण्डार !, अक्षय पद धारी।**
**दो अक्षय पद दातार, हमको त्रिपुरारी !।।**
**हे मुनिसुव्रत भगवान !, तुमको ध्याते हैं।**
**मम कष्ट हरो हे नाथ !, महिमा गाते हैं।।3।।**

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

**उपवन में खिलते फूल, मुरझा जाते हैं।**
**हो काम रोग निर्मूल, महिमा गाते हैं।।**
**हे मुनिसुव्रत भगवान !, तुमको ध्याते हैं।**
**मम कष्ट हरो हे नाथ !, महिमा गाते हैं।।4।।**

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**नैवेद्य बनाकर आज, पूज रहे स्वामी।**
**अब क्षुधा रोग हो नाश, हे अन्तर्यामी !।।**
**हे मुनिसुव्रत भगवान !, तुमको ध्याते हैं।**
**मम कष्ट हरो हे नाथ !, महिमा गाते हैं।।5।।**

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जग में कहलाए दीप, मोह तिमिर नाशी।**
**हम भी बन जाएँ नाथ !, शिवपुर के वासी।।**
**हे मुनिसुव्रत भगवान !, तुमको ध्याते हैं।**
**मम कष्ट हरो हे नाथ !, महिमा गाते हैं।।6।।**

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम चढ़ा रहे हैं धूप, कर्मों का क्षय हो।
अब हमकोभी संप्राप्त, पद प्रभु अक्षय हो।।
हे मुनिसुव्रत भगवान !, तुमको ध्याते हैं।
मम कष्ट हरो हे नाथ !, महिमा गाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

तन-मन-करने संतुष्ट, फल कई खाते हैं।
फल सरस लिये यह आज, यहाँ चढ़ाते हैं।।
हे मुनिसुव्रत भगवान !, तुमको ध्याते हैं।
मम कष्ट हरो हे नाथ !, महिमा गाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पाकर के पद निर्वाण, शिवपुर जाते हैं।
पाने शिव पद भगवान, अर्घ्य चढ़ाते हैं।।
हे मुनिसुव्रत भगवान !, तुमको ध्याते हैं।
मम कष्ट हरो हे नाथ !, महिमा गाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - नीर भराया कूप से, देते हैं जल धार।
भक्ति भाव से पूजते, पाने शिव का द्वार।।

(शान्तये शांतिधारा)

दोहा - पुष्पांजलि करते यहाँ, भक्ति भाव के साथ।
मोक्ष मार्ग पर हम बढ़ें, हे त्रिभुवन के नाथ ! ।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत)

# पंचकल्याणक के अर्घ्य

**सावन वदि द्वितिया शुभकारी, मुनिसुव्रत जिन मंगलकारी।**
**माँ के गर्भ में चयकर आए, रत्नवृष्टि कर सुर हर्षाए।।1।।**

ॐ ह्रीं श्रावण कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दशें कृष्ण वैशाख बखानी, जन्म लिए मुनिसुव्रत स्वामी।**
**इन्द्र देव सेना ले आए, जन्मोत्सव पर हर्ष मनाए।।2।।**

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अस्थिर भोग जगत के गाए, जान प्रभू जी दीक्षा पाए।**
**घोर सुतप कर कर्म नशाए, दशें कृष्ण वैशाख सुहाए।।3।।**

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां तपकल्याणक प्राप्त श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**नमी कृष्ण वैशाख सुहानी, हुए प्रभू जी केवल ज्ञानी।**
**जगमग-जगमग दीप जलाए, सुरनर दीपावली मनाए।।4।।**

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा नवम्यां ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**फागुन वदि बारस शुभकारी, मुक्ती पाए जिन त्रिपुरारी।**
**निर्जर कूट से शिवपद पाए, शिवपुर अपना धाम बनाए।।5।।**

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्णा द्वादश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

# जयमाला

दोहा – महिमा जिनकी है अगम, गुण का है ना पार।
मुनिसुव्रत जिनराज की, जयमाला शिवकार।।

(शम्भू छन्द)

मुनिसुव्रत व्रत के धारी हो, मोक्ष मार्ग पर गमन किए।
रत्नत्रय का पालन करके, निज आतम का मनन किए।।
द्वादश तप के द्वारा स्वामी, अपने कर्म विनाश किए।
कर्म घातिया नाशन हारे, केवल ज्ञान प्रकाश किए।।1।।
तीन लोक की पुण्य प्रकृतियाँ, जिनने अतिशय पाई हैं।
इस जग की सारी बाधायें, क्षण में आप नशाई हैं।।
अतिशय गुण इस जग के सारे, पाकर दोष विनाश किए।
रहकर के संसार में प्रभु जी, सुखानन्त में वास किए।।2।।
जिनके चरण कमल की अर्चा, सारे विघ्न विनाश करे।
भूत प्रेत व्यन्तर की बाधा, रोग शोक का नाश करे।।
हृदय रोग ज्वर कुष्ट की बाधा, रक्त चाप हो पक्षाघात।
अन्य कोई तन मन की पीड़ा, से मुक्ती होवे पश्चात।।3।।
पिता पुत्र भाई परिजन भी, करें शत्रुता का व्यवहार।
करें परिश्रम पूरा लेकिन, चले नहीं उसका व्यापार।।
मन अशान्त रहता हो भारी, मन में पाये शांति न लेश।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करके, जीवन में हो शांति विशेष।।4।।

भव्य जीव जिन अर्चा करके, पा लेते हैं पुण्य निधान।
जिससे सुख शांती को पाते, प्राप्त करें जग में सम्मान।।
तीन लोक में पुण्य प्रदायक, जिन अर्चा है अपरम्पार।
भव्य जीव भक्ती कर पाते, कर्म नाशकर मुक्ती द्वार।।5।।

दोहा – सुव्रत पाएँ जीव जो, मुनिसुव्रत के द्वार।
उनका होवे शीघ्र ही, इस भव से उद्धार।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – तीन लोक में पूज्य हैं, मुनिसुव्रत भगवान।
सुख शांती पाएँ विशद, करते हम गुणगान।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

# प्रथम वलयः

दोहा – कर्म घातिया नाशकर, पाए केवलज्ञान।
पुष्पांजलि करते चरण, हे सुव्रत भगवान ! ।।

(अथ प्रथम वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्)

## अनन्त चतुष्टय के अर्घ्य

(नरेन्द्र छन्द)

ज्ञानावरणी कर्म के द्वारा, ढका ज्ञान मेरा।
जीवन में अज्ञान दशा ने, डाला है डेरा।।

**कर्म विनाशक मुनिसुव्रत के, गुण अनन्त गाएँ।**
**गुणानन्त धारी जिनवर के, गुण गा हर्षाएँ।।1।।**

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणी कर्म रहित अनन्त ज्ञान सहित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**कर्म दर्शानावरणी से मम, दर्शन गुण खोता।**
**दर्शन करना चाह रहे पर, ना दर्शन होता।।**
**कर्म विनाशक मुनिसुव्रत के, गुण अनन्त गाएँ।**
**गुणानन्त धारी जिनवर के, गुण गा हर्षाएँ।।2।।**

ॐ ह्रीं दर्शनावरणी कर्म रहित अनन्त दर्शन सहित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**मोहनीय मोहित कर जग में, हमें भ्रमाता है।**
**ज्ञान स्वभावी मम स्वरूप है, उसे भुलाता है।।**
**कर्म विनाशक मुनिसुव्रत के, गुण अनन्त गाएँ।**
**गुणानन्त धारी जिनवर के, गुण गा हर्षाएँ।।3।।**

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म रहित अनन्त सुख सहित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**कर्मान्तराय के कारण कोई, लाभ नहीं पाते।**
**मनोकामना पूर्ण होय ना, पल-पल पछताते।।**
**कर्म विनाशक मुनिसुव्रत के, गुण अनन्त गाएँ।**
**गुणानन्त धारी जिनवर के, गुण गा हर्षाएँ।।4।।**

ॐ ह्रीं अन्तराय कर्म रहित अनन्त वीर्य सहित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**दोहा – कर्म घातिया नाश कर, बने आप अर्हन्त।**
**गुण गाते हम भाव से, हो कर्मों का अन्त।।**

ॐ ह्रीं घातियाँ कर्म रहित अनन्त चतुष्टय युक्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

# द्वितिय वलयः

**दोहा – प्रातिहार्य से युक्त हैं, तीर्थंकर भगवान।**
**पुष्पांजलि कर पूजते, करते हम गुणगान।।**

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

## अष्ट प्रातिहार्य के अर्घ्य

(त्रोटक छन्द)

**तरुवर अशोक शुभकारी है, जो सारे शोक निवारी है।**
**जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिन की महिमा दर्शाता है।।1।।**

ॐ ह्रीं तरु अशोक प्रातिहार्य संयुक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सिंहासन रत्न जड़ित जानो, जिस पे आसन जिन का मानो।**
**जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिन की महिमा दर्शाता है।।2।।**

ॐ ह्रीं दिव्य सिंहासन प्रातिहार्य संयुक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**त्रय क्षत्र आपके शीश रहे, त्रिभुवन के स्वामी आप कहे।**
**जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिन की महिमा दर्शाता है।।3।।**

ॐ ह्रीं त्रय छत्र प्रातिहार्य संयुक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

**भामण्डल आभा दर्शाए, जो सप्त भवों को दिखलाए।**
**जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिन की महिमा दर्शाता है।।4।।**

ॐ ह्रीं भामण्डल प्रातिहार्य संयुक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**हो दिव्य ध्वनि ॐकार मयी, जो गाई पावन कर्म क्षयी।**
**जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिन की महिमा दर्शाता है।।5।।**

ॐ ह्रीं दिव्य ध्वनि प्रातिहार्य संयुक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शुभ दिव्य दुन्दुभि वाद्य बजें, जहाँ अतिशयकारी साज सजें।**
**जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिन की महिमा दर्शाता है।।6।।**

ॐ ह्रीं दुन्दुभि प्रातिहार्य संयुक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सुर चँवर ढौरते हैं भाई, प्रभु की दर्शाते प्रभुताई।**
**जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिन की महिमा दर्शाता है।।7।।**

ॐ ह्रीं चतुषष्ठी चंवर प्रातिहार्य संयुक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सुर पुष्प वृष्टि कर हर्षाएँ, जिनवर की महिमा दर्शाएँ।**
**जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिन की महिमा दर्शाता है।।8।।**

ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य संयुक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वसु प्रातिहार्य शुभकारी हैं, जिनकी महिमा अतिभारी है।**
**जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिन की महिमा दर्शाता है।।9।।**

ॐ ह्रीं अष्ट प्रातिहार्य युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

# तृतिय वलयः

**दोहा – द्वादश तप को धारकर, करें निर्जरा घोर।**
**अष्ट कर्म को नाश कर, बढ़ें मोक्ष की ओर।।**

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

## बारह तप के अर्घ्य

(सखी छन्द)

**आहार तजें जो प्राणी, वे अनशन तप धर ज्ञानी।**
**वे शिव पदवी को पाएँ, हम जिन पद पूज रचाएँ।।1।।**

ॐ ह्रीं अनशन तप युक्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कम इच्छा से जो खावें, ऋषि ऊनोदरी कहावें।**
**वे शिव पदवी को पाएँ, हम जिन पद पूज रचाएँ।।2।।**

ॐ ह्रीं ऊनोदर तप प्राप्त श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**वस्तू के संख्याकारी, हों व्रत संख्यान के धारी।**
**वे शिव पदवी को पाएँ, हम जिन पद पूज रचाएँ।।3।।**

ॐ ह्रीं व्रत परिसंख्यान तप धारी श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**एकादिक रस परिहारी, हों रस परित्याग के धारी।**
**वे शिव पदवी को पाएँ, हम जिन पद पूज रचाएँ।।4।।**

ॐ ह्रीं रस परित्याग तप धारी श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शैय्या विविक्त जो पावें, इस तप के धारि कहावें।**
**वे शिव पदवी को पाएँ, हम जिन पद पूज रचाएँ।।5।।**

ॐ ह्रीं विविक्त शैय्यासन तप धारी श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जो काय सुक्लेश उठाएँ, वे काय क्लेश धर गाएँ।**
**वे शिव पदवी को पाएँ, हम जिन पद पूज रचाएँ।।6।।**

ॐ ह्रीं काय क्लेश तप धारी श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**तप प्रायश्चित्त जो धारें, सब अपने दोष निवारें।**
**वे शिव पदवी को पाएँ, हम जिन पद पूज रचाएँ।।7।।**

ॐ ह्रीं प्रायश्चिततप धारी श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**है विनय सुतप शुभकारी, धारण करते अनगारी।**
**वे शिव पदवी को पाएँ, हम जिन पद पूज रचाएँ।।8।।**

ॐ ह्रीं विनय तप धारक श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**हों साधू सेवाकारी, वैय्यावृत्ती तप धारी।**
**वे शिव पदवी को पाएँ, हम जिन पद पूज रचाएँ।।9।।**

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्ति तप धारी श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**स्वाध्याय सुतप ऋषि धारें, अपना अज्ञान निवारें।**
**वे शिव पदवी को पाएँ, हम जिन पद पूज रचाएँ।।10।।**

ॐ ह्रीं स्वाध्याय तप धारक श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**जो तन से ममत्व निवारें, व्युत्सर्ग सुतप ऋषि धारें।**
**वे शिव पदवी को पाएँ, हम जिन पद पूज रचाएँ।।11।।**

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग तप धारक श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**मन का जो रोध कराएँ, वे ध्यान सुतप को पाएँ।**
**वे शिव पदवी को पाएँ, हम जिन पद पूज रचाएँ।।12।।**

ॐ ह्रीं ध्यान तप धारक श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**तप बाह्याभ्यन्तर गाए, छह-छह शुभ भेद बताए।**
**वे शिव पदवी को पाएँ, हम जिन पद पूज रचाएँ।।13।।**

ॐ ह्रीं द्वादश तप धारक श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**जाप्यः ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत नाथ जिनेन्द्राय नमः मम सर्व कार्य सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।**

# समुच्चय जयमाला

**दोहा - सुव्रत के धारी हुए, मुनिसुव्रत भगवान।**
**जयमाला गाते यहाँ, पाने शिव सोपान।।**

चौपाई

**मुनिसुव्रत जी व्रत के धारी, भवि जीवों के करुणाकारी।**
**जन-जन के हैं भाग्य विधाता, जो हैं परम शांति के दाता।।1।।**

स्वर्गों के सुख जिन्हें ना भाए, राजगृही को धन्य बनाए।
माँ पद्मा के गर्भ में आए, रत्नवृष्टि तब देव कराए।।2।।
अन्तिम जन्म प्रभू जी पाए, मेरू पे सुर न्हवन कराए।
सुर-नर किन्नर महिमा गाते, नृत्य गान कर हर्ष मनाते।।3।।
कछुआ लक्षण पग में पाए, नील सुमणि सम सुन्दर गाए।
पद युवराज आपने पाया, निष्पृह होके राज्य चलाया।।4।।
जाति स्मरण आपको आया, मन में तब वैराग्य समाया।
नमः सिद्धेभ्या बोल के भाई, मुनिवर की शुभ दीक्षा पाई।।5।।
तेरह विधि चारित के धारी, परिग्रह त्याग हुए अविकारी।
निज आतम का ध्यान लगाए, प्रभु जी केवल ज्ञान उपाय।।6।।
दिव्य देशना आप सुनाए, जीव कई तब बोध जगाए।
समवशरण हो अतिशयकारी, हो सुभिक्षता मंगलकारी।।7।।
रहें कोई भी ना बाधाएँ, प्राणी अतिशय शांती पाएँ।
दीन दरिद्री रहे ना कोई, बीमारी ना तन में होई।।8।।
रोग शोक ना कोई आवें, तन मन की बाधाएँ जावें।
रहे कोई भी ना अज्ञानी, सुने जीव जो भी जिनवाणी।।9।।
मित्र सभी हो जग के प्राणी, महिमा प्रभु की जग कल्याणी।
भाव सहित हम महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।10।।

दोहा - मुनिसुव्रत जिनराज का, किया यहाँ गुणगान।
यही भावना है 'विशद', पाएँ पद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - भाव सहित जो भी करें, मुनिसुव्रत गुणगान।
अल्प समय में हो 'विशद', उसका भी कल्याण।।
।। इत्यादि आशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

# मुनिसुव्रत छियालिसा

दोहा - अरहंतों को नमन् कर, सिद्धों का धर ध्यान।
उपाध्याय आचार्य अरु, सर्व साधु गुणवान।।
जैन धर्म आगम 'विशद', चैत्यालय जिनदेव।
मुनिसुव्रत जिनराज को, वंदन करूँ सदैव।।

चौपाई

मुनिसुव्रत जिनराज हमारे, जन-जन के हैं तारण हारे।।1।।
प्रभू हैं वीतरागता धारी, तीन लोक में करुणा कारी।।2।।
भाव सहित उनके गुण गाते, चरण कमल में शीश झुकाते।।3।।
जय जय जय छियालिस गुणधारी, भविजन के तुम हो हितकारी।।4।।
देवों के भी देव कहाते, सुरनर पशु तुमरे गुण गाते।।5।।
तुम हो सर्व चराचर ज्ञाता, सारे जग के आप हि त्राता।।6।।
प्रभू तुम भेष दिगम्बर धारे, तुमसे कर्म शत्रु भी हारे।।7।।
क्रोध मान माया के नाशी, तुम हो केवलज्ञान प्रकाशी।।8।।
प्रभू की प्रतिमा कितनी सुंदर, दृष्टि सुखद जमी नासा पर।।9।।
खड्गासन से ध्यान लगाया, तुमने केवलज्ञान जगाया।।10।।

मध्यलोक पृथ्वी का मानो, उसमें जम्बूद्वीप सुहानो।।11।।
अंग देश उसमें कहलाए, राजगृही नगरी मन भाए।।12।।
भूपति वहाँ सुमित्र कहाए, माता पदमा के उर आए।।13।।
यादव वंश आपने पाया, कश्यप गोत्र वीर ने गाया।।14।।
प्राणत स्वर्ग से चयकर आये, गर्भ दोज सावन सुदि पाए।।15।।
वहाँ पे सुर बालाएँ आईं, माँ की सेवा करें सुभाई।।16।।
वैशाख वदी दशमी दिन आया, जन्म राजगृह नगरी पाया।।17।।
इन्द्र सभी मन में हर्षाए, ऐरावत ले द्वारे आये।।18।।
पांडुकशिला अभिषेक कराया, जन-जन का तब मन हर्षाया।।19।।
पग में कछुआ चिन्ह दिखाया, मुनिसुव्रत जी नाम कहाया।।20।।
जन्म से तीन ज्ञान के धारी, क्रीड़ा करते सुखमय भारी।।21।।
बल विक्रम वैभव को पाए, जग में दीनानाथ कहाए।।22।।
बीस धनुष तन की ऊँचाई, तन का रंग कृष्ण था भाई।।23।।
कई वर्षों तक राज्य चलाया, सर्व प्रजा को सुखी बनाया।।24।।
उल्का पतन प्रभू ने देखा, चिंतन किए द्वादश अनुप्रेक्षा।।25।।
सुर लौकान्तिक स्वर्ग से आए, प्रभू के मन वैराग्य जगाए।।26।।
देव पालकी अपराजित लाए, उसमें प्रभू जी को पधराए।।27।।
भूपति कई प्रभू को ले चाले, देवों ने की स्वयं हवाले।।28।।
वैशाख वदी दशमी दिन आया, नील सु वन चंपक तरु पाया।।29।।
मुनिव्रतों को तुमने पाया, प्रभू ने सार्थक नाम बनाया।।30।।

पंचमुष्टि से केश उखाड़े, आकर देव सामने ठाड़े।।31।।
केश क्षीर सागर ले चाले, भक्तिभाव से उसमें डाले।।32।।
बेला के उपवास जो धारे, तीजे दिन राजगृही पधारे।।33।।
वृषभसेन पड़गाहन कीन्हा, खीर का शुभ आहार जो दीन्हा।।34।।
वैशाख कृष्ण नौमी दिन आया, प्रभू ने केवलज्ञान जगाया।।35।।
देव सभी दर्शन को आए, समवशरण सुंदर बनवाए।।36।।
गणधर प्रभू अठारह पाए, उनमें प्रमुख सुप्रभ कहलाए।।37।।
तीस हजार मुनि संग आए, समवशरण में शोभा पाए।।38।।
इकलख श्रावक भी आए भाई, तीन लाख श्राविकाएँ आई।।39।।
संख्यातक पशु वहाँ आए, असंख्यात सुर गण भी आये।।40।।
प्रभू सम्मेद शिखर को आए, खड्गासन से ध्यान लगाए।।41।।
पूर्व दिशा में दृष्टि पाए, निर्जर कूट से मोक्ष सिधाए।।42।।
फाल्गुन वदी बारस दिन जानो, श्रवण नक्षत्र मोक्ष का मानो।।43।।
प्रदोष काल में मोक्ष सिधाये, मुनि अनेक सह मुक्ति पाये।।44।।
शनि अरिष्ट गृह जिन्हें सताए, मुनिसुव्रत जी शांति दिलाएँ।।44।।
इह पर भव के सुख हम पाएँ, मुक्तिवधु को हम पा जाएँ।।45।।
विशद भावना हम ये भाते, पद में सादर शीश झुकाते।।46।।

दोहा – पाठ करें चालीस दिन, नित छियालिसों बार।
मुनिसुव्रत के चरण में, खेय सुगंध अपार।।
मित्र स्वजन अनुकूल हों, योग्य होय संतान।
दीन दरिद्री होय जो, 'विशद' होय धनवान।।

# मुनिसुव्रत जिनराज की आरती

(तर्ज:- इह विधि मंगल आरती कीजे...)

**मुनिसुव्रत की आरति कीजे,**
**अपना जन्म सफल कर लीजे।।टेक।।**

**नृप सुमित्र के राजदुलारे, माँ श्यामा की आँख के तारे।**
**मुनिसुव्रत...।।1।।**
**राजगृही के नृप कहलाए, कछुआ लक्षण पग में पाए।**
**मुनिसुव्रत...।।2।।**
**तीस हजार वर्ष की भाई, श्री जिनवर ने आयु पाई।**
**मुनिसुव्रत...।।3।।**
**श्रावण वदी दोज को स्वामी, गर्भ में आए अन्तर्यामी।**
**मुनिसुव्रत...।।4।।**
**दशें वदी वैशाख को स्वामी, जन्म लिए त्रिभुवनपति नामी।**
**मुनिसुव्रत...।।5।।**
**वैशाख वदी दसमी दिन आया, जिन प्रभु ने संयम को पाया।**
**मुनिसुव्रत...।।6।।**
**वैशाख वदी नौमी दिन गाया, प्रभु ने केवलज्ञान उपाया।**
**मुनिसुव्रत...।।7।।**
**फाल्गुन वदी बारस को भाई, कर्म नाशकर मुक्ती पाई।**
**मुनिसुव्रत...।।8।।**
**गिरि सम्मेद शिखर शुभ गाया, 'विशद' मोक्षपद प्रभु ने पाया।**
**मुनिसुव्रत...।।9।।**

# श्री नेमिनाथ विधान

## माण्डला

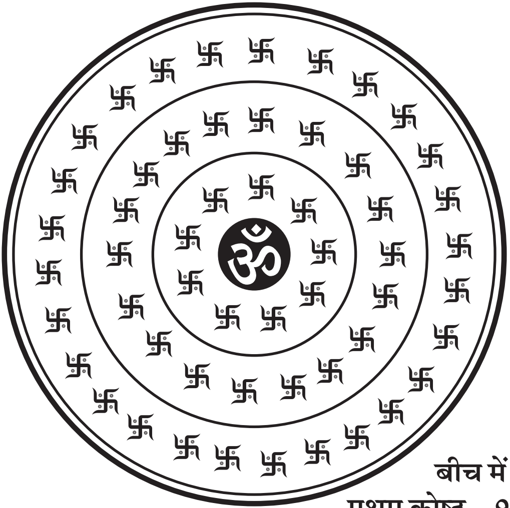


बीच में – ॐ

प्रथम कोष्ठ – 9 अर्घ्य

द्वितीय कोष्ठ – 18 अर्घ्य

तृतीय कोष्ठ – 27 अर्घ्य

कुल – 54 अर्घ्य

रचयिता :

प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

# श्री नेमिनाथ स्तवन

दशचापसमुत्सेधः, सहस्राब्दायुरन्वितः।
सिद्धिकांतापतिर्नेमिः, मे स्यात् सवार्थ सिद्धये।।1।।
अनित्यो हि जीवस्तथा नित्य एव।
क्रिया तर्हिं मुक्त्यै न कस्यापि भूयात्।।
कथंचित्तव न्यायशैलीं श्रितानां।
त्वरं त्वत्पदं स्यान्न मिथ्यादृशां तत्।।2।।
रविर्व्याप्तभूमंडलोंऽशुप्रसारैः।
जगत्तापकृच् - चन्द्रमास्तापहृच्च।।
यमातापहृच् - नेमिनाथस्त्वमेव।
ऋषीणां सदः कैरवोत्फुल्लताकृत्।।3।।
शरीरेन्द्रियाद्या धराभूपराद्याः।
कृता बुद्धिमद्धेतुका सद्मवत् स्युः।।
प्रसाध्येत कार्यत्वतःसृष्टिकर्त्ता।
न तच्चारु यद्विश्व-माद्यंतशून्यं।।4।।
कलैकापि कालस्य न त्वद्विना स्यात्।
विभो ! कालचक्राद्विमुक्तस्त्वमेव।।
कलासर्वपूर्णास्त्रिलोकैकचंद्रः।
मया स्तूयसे निष्कलः क्षीरवर्णः।।5।।
नेमिनाथं जिनं नत्वा, शिवादेवि सुतंवरं।
पश्वाक्रन्दनंपश्यंतु विशद तपःधारिणः।।6।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

# श्री नेमिनाथ विधान

स्थापना

**दोहा– धर्म ध्वज धारे प्रभू, नेमिनाथ भगवान।**
**महिमा गाने आपकी, करते हैं आह्वान।।**
**गुण अतिशय हैं आपके, महिमा का ना पार।**
**अर्चा करते आपकी, अनुपम मंगलकार।।**

ॐ ह्रीं श्री नेमीनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(पाइता छन्द)

**जल हम यह प्रासुक लाए, शिव सुख पाने को आए।**
**हम नेमिनाथ को ध्याएँ, जिन गुण गाके हर्षाएँ।।1।।**

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**भव ताप नशाने आए, शुभ गंध चढ़ाने लाए।**
**हम नेमिनाथ को ध्याएँ, जिन गुण गाके हर्षाएँ।।2।।**

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

**अक्षय पद हम भी पाएँ, अक्षत यह चरण चढ़ाएँ।**
**हम नेमिनाथ को ध्याएँ, जिन गुण गाके हर्षाएँ।।3।।**

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

**हम काम रोग विनशाएँ, यह पुष्प चढ़ा हर्षाएँ।**
**हम नेमिनाथ को ध्याएँ, जिन गुण गाके हर्षाएँ।।4।।**
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
**हम क्षुधा से मुक्ती पाएँ, शुभ चरु से पूज रचाएँ।**
**हम नेमिनाथ को ध्याएँ, जिन गुण गाके हर्षाएँ।।5।।**
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
**हम मोह से मुक्ती पाएँ, प्रजलित शुभ दीप चढ़ाएँ।**
**हम नेमिनाथ को ध्याएँ, जिन गुण गाके हर्षाएँ।।6।।**
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
**कर्मों से मुक्ती पाएँ, अग्नी में धूप जलाएँ।**
**हम नेमिनाथ को ध्याएँ, जिन गुण गाके हर्षाएँ।।7।।**
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
**हम मोक्ष महाफल पाएँ, फल चरणों सरस चढ़ाएँ।**
**हम नेमिनाथ को ध्याएँ, जिन गुण गाके हर्षाएँ।।8।।**
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।
**हम पद अनर्घ्य प्रगटाएँ, पद पावन अर्घ्य चढ़ाएँ।**
**हम नेमिनाथ को ध्याएँ, जिन गुण गाके हर्षाएँ।।9।।**
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
**दोहा – शांती धारा दे रहे, लेकर पावन नीर।**
**यही कामना है विशद, पाएँ भव का तीर।।**
(शान्तये शान्तीधारा)

दोहा – पाएँ पद अविकार हम, पाए जो तीर्थेश।
पुष्पांजलि करते चरण, भक्ति सहित विशेष।।
(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

## पंचकल्याणक के अर्घ्य

(चाल छन्द)

**भूलोक पूर्ण हर्षाया, गर्भागम प्रभु ने पाया।**
**कार्तिक सुदि षष्ठी पाए, प्रभु स्वर्ग से चयकर आए।।1।।**

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्ल षष्ठ्याँ गर्भ कल्याणक प्राप्त श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**श्रावण सुदि षष्ठी स्वामी, जन्मे जिन अन्तर्यामी।**
**भू पे छाई उजियारी, पा दिव्य दिवाकर लाली।।2।।**

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्ल षष्ठ्याँ जन्म कल्याणक प्राप्त श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**श्रावण सुदि षष्ठी गाई, नेमी जिन दीक्षा पाई।**
**बाड़े में पशु रंभाएँ, उनके बन्धन खुलवाए।।3।।**

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्ल षष्ठ्याँ तप कल्याणक प्राप्त श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आश्विन सुदि एकम जानो, प्रभु ज्ञान जगाए मानो।**
**शिव पथ की राह दिखाए, जीवों को अभय दिलाए।।4।।**

ॐ ह्रीं आश्विन शुक्ल एकम केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आठें आषाढ़ सुदि गाई, भव से प्रभु मुक्ती पाई।**
**नश्वर शरीर यह छोड़े, कर्मों के बन्धन तोड़े।।5।।**

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्ल अष्टयां मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

# जयमाला

**दोहा – जिन अर्चा जो भी करें, वे हों मालामाल।**
**नेमिनाथ भगवान की, महिमा बड़ी विशाल।।**

तर्ज – करम के खेल कैसे........

**करम के खेल कैसे हैं, नहीं हम जान पाते हैं।**
**मिले संसार से मुक्ती, अतःपूजा रचाते हैं।।टेक।।**
**स्वर्ग अपराजित से चयकर, गर्भ में माँ के प्रभु आए।**
**शौरीपुर में प्रभु जन्में, हर्ष त्रय लोक में छाए।।**
**इन्द्र मेरू पे ले जाके, न्हवन प्रभु का कराते हैं।।**
**मिले संसार....।।1।।**
**जन्म से आपके जग में, धन्य शुभ हो गया यदुकुल।**
**नेमि जी दूल्हा बनकर के, ब्याहने को चले राजुल।।**
**बँधे बाड़े में हो व्याकुल, पशू दुख में रंभाते हैं।**
**मिले संसार....।।2।।**
**देख पशुओं की पीड़ा को, नेमि करुणा से भर आते।**
**धार वैराग्य अन्तर में, सुगिरि गिरनार को जाते।।**

बनी दुल्हन हुई व्याकुल, नेमि जब वन को जाते हैं।।
मिले संसार...।।3।।

गई समझाने को राजुल, नाथ ! वन को नहीं जाओ।
प्रीति नौ भव की तोड़ी क्यों, राज हमको ये बतलाओ।।
सार संसार में नाहीं, अतः संयम को पाते हैं।।
मिले संसार...।।4।।

कर्म घाती प्रभु नाशे, ज्ञान केवल जगाया है।
सुगिरि गिरनार से प्रभु ने, सुपद निर्वाण पाया है।।
जिनालय में प्रभू राजें, महत् अतिशय दिखाते हैं।।
मिले संसार....।।5।।

दोहा – जिन मंदिर में नेमि की, महिमा का ना पार।
अर्चा करें जो भाव से, होवें भव से पार।।

ॐ ह्रीं श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – चेतन से सब भिन्न हैं, तन मन धन गृह ग्राम।
सत्य विशद यह जानिए, यही श्रेष्ठ है काम।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

# प्रथम वलयः

दोहा – क्षायिक पाए लब्धियाँ, कर्म घातिया नाश।
स्व पर उपकारी बने, कीन्हे शिवपुर वास।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

# क्षायिक नव लब्धियों के अर्घ्य

(चाल छन्द)

**क्षायिक 'सम्यक्त्व' जगाए, जो मोक्षमार्ग अपनाए।**
**हम नेमिनाथ को ध्याते, जिन पद में शीश झुकाते।।1।।**

ॐ ह्रीं क्षायिक सम्यक्त्व लब्धी प्राप्त श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**क्षायिक 'चारित' के धारी, जो हुए कर्म विनिवारी।**
**हम नेमिनाथ को ध्याते, जिन पद में शीश झुकाते।।2।।**

ॐ ह्रीं क्षायिक चारित लब्धी प्राप्त श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**प्रभु क्षायिक 'ज्ञान' जगाए, निज घाती कर्म नशाए।**
**हम नेमिनाथ को ध्याते, जिन पद में शीश झुकाते।।3।।**

ॐ ह्रीं क्षायिक ज्ञान लब्धी प्राप्त श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जिन क्षायक 'दर्शन' पाए, जो कर्मावरण नशाए।**
**हम नेमिनाथ को ध्याते, जिन पद में शीश झुकाते।।4।।**

ॐ ह्रीं क्षायिक दर्शन लब्धी प्राप्त श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**हैं क्षायक 'दान' के धारी, जन-जन के करुणाकारी।**
**हम नेमिनाथ को ध्याते, जिन पद में शीश झुकाते।।5।।**

ॐ ह्रीं क्षायिक दान लब्धी प्राप्त श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**प्रभु क्षायक 'लाभ' को पाए, जो अन्तराय विनशाए।**
**हम नेमिनाथ को ध्याते, जिन पद में शीश झुकाते।।6।।**

ॐ ह्रीं क्षायिक लाभ लब्धी प्राप्त श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जिन भोगान्तराय नशाए, प्रभु क्षायक 'भोग' जगाए।**
**हम नेमिनाथ को ध्याते, जिन पद में शीश झुकाते।।7।।**

ॐ ह्रीं क्षायिक भोग लब्धी प्राप्त श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**क्षायक 'उपभोग' के धारी, प्रभु हैं पावन उपकारी।**
**हम नेमिनाथ को ध्याते, जिन पद में शीश झुकाते।।8।।**

ॐ ह्रीं क्षायिक उपभोग लब्धी प्राप्त श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**प्रभु वीर्यान्तराय नशाए, क्षायक 'वीर्यत्व' जगाए।**
**हम नेमिनाथ को ध्याते, जिन पद में शीश झुकाते।।9।।**

ॐ ह्रीं क्षायिक वीर्य लब्धी प्राप्त श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

**प्रभु 'नव लब्धी' प्रगटाये, अर्हन्त अवस्था पाये।**
**हम नेमिनाथ को ध्याते, जिन पद में शीश झुकाते।।10।।**

ॐ ह्रीं क्षायिक नव लब्धी प्राप्त श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## द्वितीय वलय:

**दोहा – दोष अठारह से रहित, नेमिनाथ भगवान।**
**भाव सहित जिनका यहाँ, करते हम गुणगान।।**

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

## अष्टादश दोष विरहित जिन के अर्घ्य

**जो ''क्षुधा'' दोष को पाए, वह भारी कष्ट उठाए।**
**प्रभु हैं यह दोष निवारी, अर्हत् पदवी के धारी।।1।।**

ॐ ह्रीं क्षुधा दोष रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जो ''तृषा'' दोष धर गाए, वह दुखमय जीवन पाए।**
**प्रभु हैं यह दोष निवारी, अर्हत् पदवी के धारी।।2।।**

ॐ ह्रीं तृषा दोष रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**हो 'जन्म' दोष के धारी, दुख पाए भव-भव भारी।**
**प्रभु हैं यह दोष निवारी, अर्हत् पदवी के धारी।।3।।**

ॐ ह्रीं जन्म दोष रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जो 'जरा' दोष को पाते, लाचार स्वयं हो जाते।**
**प्रभु हैं यह दोष निवारी, अर्हत् पदवी के धारी।।4।।**

ॐ ह्रीं जरा दोष रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जो होते 'विस्मयकारी', दुख पाएँ जिन्दगी सारी।**
**प्रभु हैं यह दोष निवारी, अर्हत् पदवी के धारी।।5।।**

ॐ ह्रीं विस्मय दोष रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जो 'अरति' दोष उर लावें, न चैन कहीं वे पावें।**
**प्रभु हैं यह दोष निवारी, अर्हत् पदवी के धारी।।6।।**

ॐ ह्रीं अरति दोष रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कोई 'खेद' करें अज्ञानी, भव भ्रमण की रही निशानी।**
**प्रभु हैं यह दोष निवारी, अर्हत् पदवी के धारी।।7।।**

ॐ ह्रीं खेद दोष रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**है 'रोग' दोष भयकारी, जिससे हो जीव दुखारी।**
**प्रभु हैं यह दोष निवारी, अर्हत् पदवी के धारी।।8।।**

ॐ ह्रीं रोग दोष रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जो 'शोक' हृदय में लावें, वे शांती कहीं ना पावें।**
**प्रभु हैं यह दोष निवारी, अर्हत् पदवी के धारी।।9।।**

ॐ ह्रीं शोक दोष रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**'मद' से जो हों मतवारे, पावें न कहीं सहारे।**
**प्रभु हैं यह दोष निवारी, अर्हत् पदवी के धारी।।10।।**

ॐ ह्रीं मद दोष रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई

**'मोह' दोष के नाशी गाए, चतुर्गति में भ्रमण कराए।**
**रहे दोष के प्रभु परिहारी, तीर्थंकर जिन हैं अविकारी।11।।**

ॐ ह्रीं मोह दोष रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भय' से होते जो भयकारी, होते रहते सदा दुखारी।
रहे दोष के प्रभु परिहारी, तीर्थंकर जिन हैं अविकारी।12।।
ॐ ह्रीं भय दोष रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'निद्रा' से जो होंय प्रमादी, करते वे निज की बरबादी।
रहे दोष के प्रभु परिहारी, तीर्थंकर जिन हैं अविकारी।13।।
ॐ ह्रीं निद्रा दोष रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'चिन्ता' भाई चिता कहाए, सद् गुण निज के पूर्ण नशाए।
रहे दोष के प्रभु परिहारी, तीर्थंकर जिन हैं अविकारी।14।।
ॐ ह्रीं चिन्ता दोष रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'स्वेद' देह में पीड़ाकारी, बहे निरन्तर दुख हो भारी।
रहे दोष के प्रभु परिहारी, तीर्थंकर जिन हैं अविकारी।15।।
ॐ ह्रीं स्वेद दोष रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'राग' आग सम जानो भाई, फैली जिसकी जग प्रभुताई।
रहे दोष के प्रभु परिहारी, तीर्थंकर जिन हैं अविकारी।16।।
ॐ ह्रीं राग दोष रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मन में जिसके 'द्वेष' समाए, पर को भारी जीव सताए।
रहे दोष के प्रभु परिहारी, तीर्थंकर जिन हैं अविकारी।17।।
ॐ ह्रीं द्वेष दोष रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'मरण' दोष के हैं जो नाशी, वे होते हैं शिवपुर वासी।
रहे दोष के प्रभु परिहारी, तीर्थंकर जिन हैं अविकारी।18।।
ॐ ह्रीं मरण दोष रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अष्टादश यह दोष बताए, जो संसार के कारण गाए।**
**रहे दोष के प्रभु परिहारी, तीर्थंकर जिन हैं अविकारी।19।।**

ॐ ह्रीं अष्टादश दोष रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

# तृतीय वलय:

**दोहा – सर्व परिग्रह से रहित, तीनों योग निवार।**
**किए कर्म की निर्जरा, पाये शिव उपहार।।**

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

## परिग्रह एवं योग निवारक

चौपाई

**'मिथ्याभाव' जगावें प्राणी, वे ना होते सत् श्रद्धानी।**
**होते जो मिथ्यातम नाशी, वे हो जाते शिवपुर वासी।।1।।**

ॐ ह्रीं मिथ्यात्व परिग्रह रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**'क्रोध' कषाय को पूर्ण नशाएँ, वे पावन शिव पदवी पायें।**
**होते जो मिथ्यातम नाशी, वे हो जाते शिवपुर वासी।।2।।**

ॐ ह्रीं क्रोध कषाय रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**'मान' से हो जाते जो मानी, जग में स्वयं उठावें हानी।**
**होते जो मिथ्यातम नाशी, वे हो जाते शिवपुर वासी।।3।।**

ॐ ह्रीं मान कषाय रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**करते हैं जो 'मायाचारी', दुख सहते हैं वे भी भारी।**
**होते जो मिथ्यातम नाशी, वे हो जाते शिवपुर वासी।।4।।**

ॐ ह्रीं मायाचारी कषाय रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

**'लोभ' करें जो जग के प्राणी, दुखी रहें कहती जिनवाणी।**
**होते जो मिथ्यातम नाशी, वे हो जाते शिवपुर वासी।।5।।**

ॐ ह्रीं लोभ कषाय रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

## नौ कषाए

(मोतियादाम छन्द)

**करें जो प्राणी 'हास्य' कषाय, चतुर्गति में जो भ्रमण कराय।**
**करें इसका जो भी परिहार, प्राप्त वे करें मोक्ष का द्वार।।6।।**

ॐ ह्रीं हास्य कषाय रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

**जीव जो होते हैं रति वान, करें ना निज आतम कल्याण।**
**करें इसका जो भी परिहार, प्राप्त वे करें मोक्ष का द्वार।।7।।**

ॐ ह्रीं रति कषाय रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

**'अरति' का जिनके मन में वास, करें निज गुण वे स्वयं विनाश।**
**करें इसका जो भी परिहार, प्राप्त वे करें मोक्ष का द्वार।।8।।**

ॐ ह्रीं अरति कषाय रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

**'शोक' जो करते जग के जीव, कर्म का करते बन्ध अतीव।**
**करें इसका जो भी परिहार, प्राप्त वे करें मोक्ष का द्वार।।9।।**

ॐ ह्रीं शोक कषाय रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**जीव जो रहते हैं 'भयभीत', रहें ना उनके कोई मीत।**
**करें इसका जो भी परिहार, प्राप्त वे करें मोक्ष का द्वार।।10।।**

ॐ ह्रीं भय कषाय रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**रहें जो जीव 'जुगुप्सा' वान, कभी ना कर पावें कल्याण।**
**करें इसका जो भी परिहार, प्राप्त वे करें मोक्ष का द्वार।।11।।**

ॐ ह्रीं जुगुप्सा कषाय रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**रहा जो 'स्त्री वेदी' जीव, मोक्ष की पावें ना वे नींव।**
**करें इसका जो भी परिहार, प्राप्त वे करें मोक्ष का द्वार।।12।।**

ॐ ह्रीं स्त्रीवेद कषाय रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वेद 'पुल्लिंग' पा करते पाप, भ्रमण ना मैट सकें वे आप।**
**करें इसका जो भी परिहार, प्राप्त वे करें मोक्ष का द्वार।।13।।**

ॐ ह्रीं पुल्लिंगवेद कषाय रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**'नपुंसक' पाते हैं जो वेद, भोग में रत हो करते खेद।**
**करें इसका जो भी परिहार, प्राप्त वे करें मोक्ष का द्वार।।14।।**

ॐ ह्रीं नपुंसकवेद कषाय रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## बाह्य परिग्रह

(चौपाई)

**'क्षेत्र' परिग्रह जो भी पाएँ, चिंतित हो कई दुःख उठाएँ।**
**सर्व परिग्रह के परिहारी, होते विशद ज्ञान के धारी।।15।।**

ॐ ह्रीं क्षेत्र परिग्रह रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**'वास्तु' परिग्रह जो भी पाते, दुखी निरन्तर वे हो जाते।**
**सर्व परिग्रह के परिहारी, होते विशद ज्ञान के धारी।।16।।**

ॐ ह्रीं वास्तु परिग्रह रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**होते 'स्वर्ण' परिग्रह धारी, चोरों से रहते भयकारी।**
**सर्व परिग्रह के परिहारी, होते विशद ज्ञान के धारी।।17।।**

ॐ ह्रीं स्वर्ण परिग्रह रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**'चाँदी' की जो आस लगाएँ, उसकी चिंता में दुख पाएँ।**
**सर्व परिग्रह के परिहारी, होते विशद ज्ञान के धारी।।18।।**

ॐ ह्रीं रजत परिग्रह रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**'धन' परिजन धर जगत भ्रमाते, पाकर चैन कहीं ना पाते।**
**सर्व परिग्रह के परिहारी, होते विशद ज्ञान के धारी।।19।।**

ॐ ह्रीं धन परिग्रह रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**'धान्य' परिग्रह पाते भाई, जिसकी चिंता है दुखदायी।**
**सर्व परिग्रह के परिहारी, होते विशद ज्ञान के धारी।।20।।**

ॐ ह्रीं धान्य परिग्रह रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**सेवा हेतू 'दास' बुलाए, जिसकी चिन्ता बहुत सताए।**
**सर्व परिग्रह के परिहारी, होते विशद ज्ञान के धारी।।21।।**
ॐ ह्रीं दास परिग्रह रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
**होते 'दासी' परिग्रह धारी,उनसे दुखी होय लाचारी।**
**सर्व परिग्रह के परिहारी, होते विशद ज्ञान के धारी।।22।।**
ॐ ह्रीं दासी परिग्रह रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
**जोड़े कपड़े अतिशय भारी, 'कुप्य' परिग्रह के हों धारी।**
**सर्व परिग्रह के परिहारी, होते विशद ज्ञान के धारी।।23।।**
ॐ ह्रीं कुप्य परिग्रह रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
**बर्तन भाड़े खूब मंगाएँ, 'भाण्ड' परिग्रह धर कहलाएँ।**
**सर्व परिग्रह के परिहारी, होते विशद ज्ञान के धारी।।24।।**
ॐ ह्रीं भाण्ड परिग्रह रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
(चाल-छन्द)
**हो 'मनोयोग' विनिवारी, प्रभु मन गुप्ती के धारी।**
**हम नेमिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।25।।**
ॐ ह्रीं मनयोग रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
**प्रभु 'वचनयोग' विनशाएँ, शुभ वचन गुप्ति प्रगटाएँ।**
**हम नेमिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।26।।**
ॐ ह्रीं वचनयोग रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
**प्रभु 'काययोग' परिहारी, हों काय गुप्ति के धारी।**
**हम नेमिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।27।।**
ॐ ह्रीं काययोग रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(चौपाई)

**बाह्य परिग्रह दस बतलाए, अन्तरंग चौदह भी गाए।**
**त्रय योगों के प्रभु परिहारी, गाये विशद ज्ञान के धारी।।28।।**

ॐ ह्रीं अन्तरंग बहिरंग परिग्रह एवं त्रययोग रहित श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जाप्य : ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः मम सर्व कार्य सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।**

## जयमाला

**दोहा –नेमिनाथ भगवान हैं, गुण अनन्त की खान।**
**भाव सहित गुणगान कर, करूँ प्रभु का ध्यान।।**

(चामर–छन्द)

**नेमि जिन के दर्श से, यह कमाल हो गया।**
**अर्च के पादारविन्द, मैं निहाल हो गया।।**
**धन्य यह घड़ी हुई है, धन्य जन्म हो गया।**
**धन्य नेत्र हो गये हैं, धन्य शीश हो गया।।1।।**
**पूज्य नाथ आप हैं, मैं पुजारी हो गया।**
**देशना से आपकी, मोह दूर हो गया।।**
**धन्य आत्म तत्त्व का, ज्ञान प्राप्त हो गया।**
**मोह व मिथ्यात्व नाथ, आज मेरा खो गया।।2।।**
**आत्मा अनन्त है, अनन्त दीप्तिमंत है।**
**गुण अनन्त की निधान, आत्म कीर्तिमंत है।।**

आत्म ज्ञान ध्यान से, सर्व कर्म नाश हो।
एक आत्म ज्ञान से, राग का विनाश हो।।3।।
नाथ! तव पादार विन्द, एक ही है चाहना।
मोक्ष मार्ग प्राप्त हो, और कोई चाह ना।।
कर रहे हैं आप से, नाथ! यही प्रार्थना।
कर विधान आप की, कर रहे हम अर्चना।।4।।
बार-बार हाथ जोड़, कर रहे हम वन्दना।
अष्ट कर्म का प्रभु, होय मेरे बन्ध ना।।
हे जिनेन्द्र देव! शीघ्र, पूर्ण मेरी आश हो।
मोक्ष महल में जिनेश !, अब मेरा निवास हो।।5।।

दोहा - नेमिनाथ भगवान का, किया 'विशद' गुणगान।
यही भावना मम रही, पावें पद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - पूजा की है भाव से, अष्ट द्रव्य के साथ।
पूरी होवे कामना, झुका रहा मैं माथ।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

# श्री नेमिनाथ चालीसा

दोहा - अरहंतादिक देव नव, का करके शुभ जाप।
चालीसा पढ़ते विशद, कट जाएँ सब पाप।।

(चौपाई)

जय जय नेमिनाथ जिन स्वामी, करुणाकर हे अन्तर्यामी।।1।।
अपराजित से चयकर आए, शौरीपुर नगरी शुभ पाए।।2।।
कार्तिक शुक्ला षष्ठी जानो, गर्भ कल्याणक प्रभु का मानो।।3।।
राजा समुद्र विजय के प्यारे, शिवा देवी के राज दुलारे।।4।।
श्रावण शुक्ला षष्ठी स्वामी, जन्म लिए प्रभु अन्तर्यामी।।5।।
अनहद बाजे देव बजाए, सुर नर पशु भारी हर्षाए।।6।।
इन्द्र स्वर्ग से चलकर आया, पाण्डुक शिला पे न्हवन कराया।।7।।
शंख चिन्ह पग में शुभ गाया, नेमिनाथ सुर नाम बताया।।8।।
आयु सहस्त्र वर्ष की पाई, चालिस हाथ रही ऊँचाई।।9।।
श्याम वर्ण तन का शुभकारी, प्रभुजी पाए मंगलकारी।।10।।
पैर की उँगली से जिन स्वामी, चक्र चलाए शिवपथ गामी।।11।।
नाक के स्वर से शंख बजाया, जिससे तीन लोक थर्राया।।12।।
कृष्ण तभी मन में घबड़ाए, शादी की तब बात चलाए।।13।।
जूनागढ़ की राजकुमारी, नाम रहा राजुल सुकुमारी।।14।।
हुई ब्याह की तब तैय्यारी, हर्षित थे सारे नर-नारी।।15।।
श्रीकृष्ण तब युक्ति लगाए, मांसाहारी नृप बुलवाए।।16।।
समुद्र विजय अति हर्ष मनाए, ले बरात जूनागढ़ आए।।17।।
नेमिनाथ दुल्हा बन आए, छप्पन कोटि बराती लाए।।18।।
बाड़े में जब पशू रंभाए, करुणा से नेमी भर आए।।19।।
पूछा क्यों ये पशू बंधाएँ, श्री कृष्ण यह बात सुनाए।।20।।
इन पशुओं का माँस पकेगा, इन लोगों को हर्ष मनेगा।।21।।
नेमिनाथ का मन घबड़ाया, करुणा भाव हृदय में छाया।।22।।

उनके मन वैराग्य समाया, पशुओं का बन्धन खुलवाया।।23।।
रथ को मोड़ चले गिरनारी, मन से होकर के अविकारी।।24।।
कंगन तोड़े वस्त्र उतारे, नेमीश्वर जी दीक्षा धारे।।25।।
मन में परिजन दुःख मनाए, नेमि कुँवर को सब समझाए।।26।।
राजुल सुनकर के घबड़ाई, दौड़ प्रभू के चरणों आई।।27।।
उसने भी प्रभु को समझाया, नहिं माने तो साथ निभाया।।28।।
केश लुंचकर दीक्षा पाई, बनी आर्यिका राजुल भाई।।29।।
श्रावण शुक्ला षष्ठी पाए, प्रभुजी संयम को अपनाए।।30।।
एक सहस नृप दीक्षा धारे, द्वारावति में लिए अहारे।।31।।
श्रावण सुदि नौमी दिन गाया, वरदत्त ने ये अवसर पाया।।32।।
आश्विन सुदि एकम को स्वामी, केवलज्ञान पाए जग नामी।।33।।
समवशरण तव देव रचाए, प्रभू की जय जयकार लगाए।।34।।
ग्यारह गणधर प्रभु के गाए, गणधर प्रथम वरदत्त कहाए।।35।।
चित्रा शुभ नक्षत्र बताया, मेघश्रृंग तरु का तल पाया।।36।।
सर्वाह्ण यक्ष प्रभू का भाई, यक्षी कुष्मांडनी कहलाई।।37।।
ऋषी अठारह सहस बताए, चार सौ पूरब धारी गाए।।38।।
ग्यारह सहस आठ सौ भाई, शिक्षक बतलाए शिवदायी।।39।।
पन्द्रह सौ थे अवधिज्ञानी, डेढ़ सहस थे केवलज्ञानी।।40।।
ग्यारह सौ विक्रिया के धारी, नौ सौ विपुलमती अनगारी।।41।।
आठ सौ वादी मुनिवर गाये, पाँच सौ छत्तिस संग शिव पाए।।42।।
आषाढ़ शुक्ल सातें जिन स्वामी, पद्मासन से शिवपद गामी।।43।।
उर्जयन्त से शिव पद पाए, 'विशद' चरण में शीश झुकाएँ।।44।।

सोरठा - चालीसा चालीस, पढ़े भाव से जो 'विशद'।
चरण झुकाकर शीश, अर्चा करते जीव जो।।
शांति में हो वास, रोग शोक चिन्ता मिटे।
पाप शाप हो नाश, विशद मोक्ष पदवी मिले।।

# श्री नेमिनाथ की आरती

तर्ज - भक्ति बेकार है.......

नेमिनाथ दरबार है, प्रभु की जय जयकार है।
आरति करने आये स्वामी, आज तुम्हारे द्वार हैं।।टेक।।
शौरीपुर में जन्म लिए प्रभु, घर-घर मंगल छाया जी।
इन सुरेन्द्र महेन्द्र सभी ने, प्रभु का न्हवन कराया जी।।
नेमिनाथ दरबार है...।।1।।
नेमिकुंवर जी ब्याह रचाने, जूनागढ़ को आये जी।
पशुओं का आक्रन्दन लखकर, उनको तुरत छुड़ाए जी।।
नेमिनाथ दरबार है...।।2।।
मन में तब वैराग्य समाया, देख दशा संसार की।
राह पकड़ ली तभी प्रभु ने, महाशैल गिरनार की।।
नेमिनाथ दरबार है...।।3।।
पंच मुष्टि से केशलुंच कर, भेष दिगम्बर धारे जी।
कठिन तपस्या के आगे सब, कर्म शत्रु भी हारे जी।।
नेमिनाथ दरबार है...।।4।।
केवलज्ञान जगाकर प्रभु ने, जग को राह दिखाई जी।
भवसागर को पार करूँ यह, 'विशद' भावना भाई जी।।
नेमिनाथ दरबार है...।।5।।

# श्री महावीर स्वामी पूजा विधान

# माण्डला

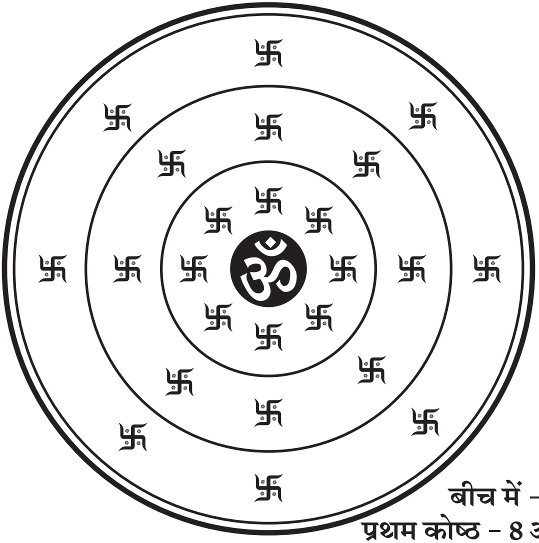


बीच में – ॐ
प्रथम कोष्ठ – 8 अर्घ्य
द्वितीय कोष्ठ – 8 अर्घ्य
तृतीय कोष्ठ – 8 अर्घ्य
कुल – 24 अर्घ्य

रचयिता :

प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

# श्री महावीर स्तवन

दोहा- माँ त्रिशला सिद्धार्थ सुत, महावीर भगवान।
जिनकी अर्चा कर मिले, शिवपद का सोपान।।

(ज्ञानोदय छन्द)

नगर विशाल रहा कुण्डलपुर, नर सुरेन्द्र आदिक से मान्य।
कामरूप हाथी के मर्दन, करने हेतु सिंह समान।।
सिंह चिन्ह से शोभित हैं जो, ऐसे वीर श्री वर्द्धमान।
सबके द्वारा वन्दनीय हैं, जन्मे महावीर भगवान।।1।।
जिन भगवान वीर का पावन, धर्म पवित्र रहा अभिराम।
अर्थ काम सुख देने वाला, स्वर्ग मोक्ष दाता शिवधाम।।
ऐसे श्री देवाधिदेव जिन, अनुपम वीर नाथ भगवान।
के चरणों में नमन हमारा, क्षण में करें जगत कल्याण।।2।।
धर्म अनादि से विदेह में, चलता आया महति महान।
ऋषभ देवजी इस युग में भी, किए प्रवृत्ती जिसकी आन।।
अजितनाथ से पार्श्वनाथ तक, बाईस तीर्थंकर पाते आप।
उसी धर्म का महावीर प्रभु, किए निरूपण नाशे पाप।।3।।
नित्य सनातन रहा धर्म यह, काल अनादी अपरम्पार।
किसी क्षेत्र या किसी काल में, और किसी भी अन्य प्रकार।।
किसी रूप से बदल सके न, धर्म विशद जो मंगलकार।
जैसा है वैसा ही रहेगा, काल अनादी विस्मयकार।।4।।

दोहा- कुण्डलपुर जन्मे प्रभू, पाए राजगृही ज्ञान।
पावापुर से शिव गये, पाए पद निर्वाण।।

।। इत्याशीर्वाद ।।

# श्री महावीर स्वामी पूजा विधान (लघु)

स्थापना

**हे वर्धमान ! हे महावीर !, अतिवीर वीर सन्मति स्वामी।**
**हे शासन नायक ! इस युग के, हे त्रिभुवन पति अन्तर्यामी !**
**हम शीश झुकाते तव चरणों, आशीष आपका पा जाएँ।**
**आह्वानन करते निज उर में, हम महिमा प्रभु जी शुभ गाएँ।।**

**दोहा– वीर वीरता दो हमें, करें कर्म का नाश।**
**यही भावना है विशद, पाएँ शिवपुर वास।।**

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छन्द)

**आतम अनुभव का निर्मल जल, हम निज भावों से लाए हैं।**
**जन्म जरादिक रोग नाश यह, करने तव पद आए हैं।।**
**हे वीर प्रभो ! शासन नायक, तुमने शिवमार्ग दिखाया है।**
**हम भी शिव पदवी को पाएँ, यह भाव हृदय में आया है।।1।।**

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**शुभ आतम अनुभव का चन्दन, हे नाथ ! चढ़ाने लाए हैं।**
**संसारताप का नाश होय प्रभु, पद अर्चा को आए हैं।।**
**हे वीर प्रभो ! शासन नायक, तुमने शिवमार्ग दिखाया है।**
**हम भी शिव पदवी को पाएँ, यह भाव हृदय में आया है।।2।।**

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

**धोकर अक्षत निज अनुभव के, यह पूजा करने लाए हैं।**
**पद अक्षय पाने नाथ चरण, हम भाव बनाकर आए हैं।।**
**हे वीर प्रभो ! शासन नायक, तुमने शिवमार्ग दिखाया है।**
**हम भी शिव पदवी को पाएँ, यह भाव हृदय में आया है।।3।।**

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

**हम शुद्धातम के विविध पुष्प, यह आज चढ़ाने लाए हैं।**
**हो काम रोग विध्वंश शीघ्र, प्रभु चरण शरण में आए हैं।।**
**हे वीर प्रभो ! शासन नायक, तुमने शिवमार्ग दिखाया है।**
**हम भी शिव पदवी को पाएँ, यह भाव हृदय में आया है।।4।।**

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**नैवेद्य बनाए निजगुण के, प्रभु शरण आपकी आए हैं।**
**हो क्षुधारोग उपशांत प्रभो !, सदियों से सतत् सताए हैं।।**
**हे वीर प्रभो ! शासन नायक, तुमने शिवमार्ग दिखाया है।**
**हम भी शिव पदवी को पाएँ, यह भाव हृदय में आया है।।5।।**

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**हम आत्म सुगुण प्रगटित करने, यह दीप जलाकर लाए हैं।**
**मिथ्यातम छाया जीवन में, हम उसे नशाने आए हैं।।**
**हे वीर प्रभो ! शासन नायक, तुमने शिवमार्ग दिखाया है।**
**हम भी शिव पदवी को पाएँ, यह भाव हृदय में आया है।।6।।**

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम कर्म आवरण नाश हेतु, यह धूप जलाने लाए हैं।
है अष्टकर्म का कष्ट हमें, वह कष्ट मिटाने आए हैं।।
हे वीर प्रभो ! शासन नायक, तुमने शिवमार्ग दिखाया है।
हम भी शिव पदवी को पाएँ, यह भाव हृदय में आया है।।7।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम चेतन की विधि भूल रहे, उसको प्रगटाने आए हैं।
हो मोक्ष महाफल प्राप्त हमें, फल सरस चढ़ाने लाए हैं।।
हे वीर प्रभो ! शासन नायक, तुमने शिवमार्ग दिखाया है।
हम भी शिव पदवी को पाएँ, यह भाव हृदय में आया है।।8।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आतम में गुण हैं अनन्त, वह भूल के जग भटकाएँ हैं।
अब अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ा, वह गुण पाने को आए हैं।।
हे वीर प्रभो ! शासन नायक, तुमने शिवमार्ग दिखाया है।
हम भी शिव पदवी को पाएँ, यह भाव हृदय में आया है।।9।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – शांतीधारा दे रहे, विनय भाव के साथ।
विशद भावना भा रहे, बनें श्री के नाथ।।

(शान्तये शान्तीधारा)

दोहा – पुष्पांजलि करते यहाँ, पाने मुक्तीधाम।
होवे पूरी कामना, करते चरण प्रणाम।।

(दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

# पंचकल्याणक के अर्घ्य

(छन्द)

**षष्ठी आषाढ़ सुदि पाए, सुर रत्न की झड़ी लगाए।**
**चहुँ दिश में छाई लाली, मानो आ गई दिवाली।।1।।**

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्ल षष्ठी गर्भकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तेरस सुदि चैत की आई, जन्मोत्सव की घड़ी गाई।**
**प्राणी जग के हर्षाए, खुश हो जयकार लगाए।।2।।**

ॐ ह्रीं चैत्रसुदी तेरस जन्मकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अगहन सित दशमी गाई, प्रभु ने जिन दीक्षा पाई।**
**मन में वैराग्य जगाया, अन्तर का राग हटाया।।3।।**

ॐ ह्रीं मगसिर सुदी दशमी तपकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वैशाख सु दशमी पाए, प्रभु केवल ज्ञान जगाए।**
**सुर समवशरण बनवाए, जिन दिव्य ध्वनि सुनाएँ।।4।।**

ॐ ह्रीं वैशाख शुक्ला दशमी केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**कर्मों की सांकल तोड़े, मुक्ति से नाता जोड़े।**
**कार्तिक की अमावस पाए, शिवपुर में धाम बनाए।।5।।**

ॐ ह्रीं कार्तिक अमावस्यायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

# जयमाला

दोहा – अन्तिम तीर्थंकर हुए, महावीर भगवान।
गाते हैं जयमाल हम, करते शुभ गुणगान।।

(वीर छन्द)

हे वर्तमान शासन नायक ! हे युग दृष्टा ! हे महावीर !
हे जग जीवों के उद्धारक ! पुरुषार्थ साध्य साधक सुधीर।।
महावीर आपकी वाणी का, सर्वत्र गूँजता चमत्कार।
जग जीवों के हे सूत्रधर !, तव चरणों वन्दन बार बार।।1।।
नृप सिद्धारथ के पुत्र रत्न, माता त्रिशला के मुदित भाल।
हे अन्तिम तीर्थंकर पावन, मुक्ती पथ के पंथी विशाल।
हे तीन लोक के अधिनायक ! सर्वज्ञ प्रभो ! हे वीतराग।।
हे परम पिता ! हे परम ईश ! अन्तर में जागे शुभम राग।।2।।
जिन प्रभाव दर्शन करके, सब कर्म पाप कट जाते हैं।
जो भाव सहित अर्चा करते, मन वांछित फल वे पाते हैं।
है वीतराग मुद्रा जिन की, भव्यों के मन को भाती है।
जो ध्यान करे प्रभु का मानो, वो अपने पास बुलाती है।।3।।

दोहा – जिन पद की पूजा करे, मिलकर सकल समाज।
यही भावना है विशद, सफल होंय सब काज।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे जिनवर स्वामी ! त्रिभुवननामी कोटि नमामि जग ख्याता।
हेजग उद्धारक ! पाप निवारक शिव पथ दायक शिवदाता।।

(इत्याशीर्वाद)

# प्रथम वलय

दोहा – छियालिस गुण दश धर्मयुत, रत्नत्रय तपवान।
विघ्न विनाशी शांति कर, पूज रहे भगवान।।

(प्रथम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

सहस्त्राष्ट लक्षण के धारी, अतिशय रूप सुगन्धीवान।
वज्र वृषभ नाराच संहनन, सम चतुस्त्र संस्थान प्रधान।।
बल अतुल्य प्रिय हित वाणी युत, ना पसेव ना रहे निहार।
श्वेत रुधिर तन का दश अतिशय, जन्म समय के मंगलकार।।
तीर्थंकर प्रभु जी यह पावें, तीर्थंकर प्रकृति को धार।
ऐसे प्रभु के चरण कमल में, वन्दन मेरा बारम्बार।।1।।

ॐ ह्रीं दश जन्मातिशय प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

शत् योजन में हो सुभिक्षता, गमनागमन ना कवलाहार।
अदया रहित चतुर्दिक दर्शन, हो उपसर्गों का परिहार।।
सब विद्या के ईश्वर छाया, रहित बढ़े ना ही नख केश।
नाही झलकते पलक नेत्र के, दश अतिशय ये कहे विशेष।।
तीर्थंकर प्रभु जी यह पावें, तीर्थंकर प्रकृति को धार।
ऐसे प्रभु के चरण कमल में, वन्दन मेरा बारम्बार।।2।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानातिशय प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

भाषा अर्ध मागधी निर्मल, दिश आकाश मित्रतावान।
खिलें फूल फल सब ऋतुओं के, पृथ्वी होवे काँच समान।।

चरण कमल तल कमल गगन में, गंधोदक की होवे वृष्टि।
मंद सुगन्ध बयार गगन में, जय-जय हो हर्षित सब सृष्टि।।
कंटकरहित भूमि मंगलद्रव्य, धर्मचक्र हो अग्र गमन।
अतिशय देव रचित ये चौदह, करें भव्य प्रभु का अर्चन।।3।।

ॐ ह्रीं देवकृत चतुर्दश अतिशय प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्श अनन्त ज्ञान सुखधारी, बल अनन्त पावें भगवान।
अनन्त चतुष्टय के धारी हो, पाने वाले केवलज्ञान।।
तीर्थंकर प्रभु जी यह पावें, तीर्थंकर प्रकृति को धार।
ऐसे प्रभु के चरण कमल में, वन्दन मेरा बारम्बार।।4।।

ॐ ह्रीं अनन्त चतुष्टय प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जन्म जरा चिंता विस्मय रुज, क्षुधा तृषा निद्रा या खेद।
राग द्वेष भय मरण मोह मद, शोक अरति अरु जानो स्वेद।।
दोष अठारह रहित जिनेश्वर, जगती पति होते भगवान।
भव्य जीव जिनकी अर्चाकर, पावें पावन पुण्य निधान।।5।।

ॐ ह्रीं अष्टादश दोषरहित श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तरु अशोक त्रय छत्र शोभते, दिव्य ध्वनि हो मंगलकार।
रत्नमयी सिंहासन दुन्दुभि, भामण्डल सोहे मनहार।।
पुष्पवृष्टि हो देवों द्वारा, चौंसठ चँवर ढुराएँ देव।
प्रातिहार्य यह आठ प्रभू के, समवशरण में होंय सदैव।।6।।

ॐ ह्रीं अष्ट प्रातिहार्य प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**उत्तम क्षमा मार्दव आर्जव, शौच सत्य संयम तप जान।**
**त्यागाकिंचन ब्रह्मचर्य धर, ऋषिवर पाते शिव सोपान।।**
**मोक्ष मार्ग के राही बनकर, करते हैं जग का कल्याण।**
**जिनकी अर्चा करते श्रावक, भाव सहित करते गुणगान।।7।।**
ॐ ह्रीं दशधर्म युक्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
**सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित शुभ, रत्नत्रय है मंगलकार।**
**जिसको धारण करके प्राणी, हो जाते हैं भव से पार।।**
**मोक्ष मार्ग के राही बनकर, करते हैं जग का कल्याण।**
**जिनकी अर्चा करते श्रावक, भाव सहित करते गुणगान।।8।।**
ॐ ह्रीं रत्नत्रय युक्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
**दोहा – प्रातिहार्य अतिशय तथा, अनन्त चतुष्टयवान।**
**रत्नत्रय तप धर्म युत, पूजें हम भगवान।।**
ॐ ह्रीं षट्चत्त्वारिंशद मूलगुण दशधर्मरत्नत्रय प्राप्त श्रीमहावीर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि.स्वा.।

# द्वितीय वलय

**दोहा – विविध गुणों के कोषजिन, शिव सुख के दातार।**
**जिनपद में पुष्पांजलि, करते बारम्बार।।**
(द्वितीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)
**अनशन ऊनोदर कर वृत्ति, परिसंख्यान और रस त्याग।**
**विविक्त शैय्यासन कायक्लेश तप, बाह्य सुतप छः में अब लाग।।**
**प्रायश्चित वैय्यावृत्ती स्वाध्याय, विनय और व्युत्सर्ग सुध्यान।**
**द्वादश तपकर कर्म निर्जरा, करके पाते पद निर्वाण।।1।।**
ॐ ह्रीं द्वादश तप युक्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**हम आकांक्षी धन दौलत के, मोहित हो द्रव्य कमाते हैं।**
**है मोक्ष लक्ष्मी शाश्वत् शुभ, हम प्राप्त नहीं कर पाते हैं।।**
**हम धर्म ध्यान शुभ प्राप्त करें, शिव पथ के राही बन जाएँ।**
**जो पद पाया है वीरा ने, उस पदवी को हम भी पाएँ।।2।।**

ॐ ह्रीं शाश्वत् लक्ष्मी प्रदायक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

**पुरुषार्थ करे प्राणी भारी, ना लाभ पूर्णता मिल पाए।**
**अर्चा करके जग जीवों का, लाभान्तराय भी नश जाए।।**
**हम धर्म ध्यान शुभ प्राप्त करें, शिव पथ के राही बन जाए।**
**जो पद पाया है वीरा ने, उस पदवी को हम भी पाएँ।।3।।**

ॐ ह्रीं लाभान्तराय कर्म विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

**चिन्ताएँ सतत् सताती हैं, ना शांती मन में आ पाए।**
**पूजा करने से जिनवर की, चिंता भी पूर्ण विनश जाए।।**
**हम धर्म ध्यान शुभ प्राप्त करें, शिव पथ के राही बन जाएँ।**
**जो पद पाया है वीरा ने, उस पदवी को हम भी पाएँ।।4।।**

ॐ ह्रीं चिन्ताविनाशक चिन्तामणि समान फलदायक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**रहता अशान्त मन मेरा यह, जिससे आकुलता हो भारी।**
**जो रागद्वेष तजकर मन से, हो जाए समता का धारी।।**
**हम धर्म ध्यान शुभ प्राप्त करें, शिव पथ के राही बन जाएँ।**
**जो पद पाया है वीरा ने, उस पदवी को हम भी पाएँ।।5।।**

ॐ ह्रीं मंगल शांति दायक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हो धर्मोत्साह प्राप्त मन में, लक्ष्मी होवे वृद्धीकारी।
जिनराज की पूजा अर्चा से, यह जीवन हो मंगलकारी।।
हम धर्म ध्यान शुभ प्राप्त करें, शिव पथ के राही बन जाएँ।
जो पद पाया है वीरा ने, उस पदवी को हम भी पाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं धर्म वृद्धि लक्ष्मीदायक श्री महावीर जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो ज्ञान ध्यान तप लीन रहें, वे निज अज्ञान नशाते हैं।
वाचस्पति सम विद्या को पावें, अतिशय सद्ज्ञान जगाते हैं।।
हम धर्म ध्यान शुभ प्राप्त करें, शिव पथ के राही बन जाएँ।
जो पद पाया है वीरा ने, उस पदवी को हम भी पाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं वाचस्पतिसमान विद्या प्रदायक श्री महावीर जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ पुण्य योग से पुत्र वंश, सुख प्राप्त करें संसारी जीव।
धर्म के फल से उभय लोक सुख, प्राप्त करें शुभ सौख्य अतीत।।
हम धर्म ध्यान शुभ प्राप्त करें, शिव पथ के राही बन जाएँ।
जो पद पाया है वीरा ने, उस पदवी को हम भी पाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं पुत्रवंश सुख प्रदायक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – जिन अर्चा करके सभी, होते विघ्न विनाश।
मनोकामना पूर्ण हो, होवे पूरी आस।।

ॐ ह्रीं सर्व मनोरथ प्रदायक श्री महावीर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

# तृतीय वलय

**दोहा – विघ्न विनाशी आप हैं, महावीर तीर्थेश।**
**अर्चा को पुष्पांजलि, करते यहाँ विशेष।।**

(तृतीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

''चौपाई''

**मन- वच-तन के पड़े हैं फेरे, अतः कर्म रहते हैं घेरे।**
**वीर प्रभु को जो भी ध्याए, संकट से वह मुक्ती पाए।।1।।**

ॐ ह्रीं संसारदु:ख नाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**कर्मोदय ने हमको घेरा, दरिद्रता ने डाला डेरा।**
**वीर प्रभु को जो भी ध्याए, संकट से वह मुक्ती पाए।।2।।**

ॐ ह्रीं सर्वदरिद्रता नाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**कर्मोदय में खोते आए, जलोदरादिक रोग सताए।**
**वीर प्रभु को जो भी ध्याए, संकट से वह मुक्ती पाए।।3।।**

ॐ ह्रीं जलोदरादिक रोग नाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

**टी. बी. शुगर आदिक बीमारी, सदा सताए सबको भारी।**
**वीर प्रभु को जो भी ध्याए, संकट से वह मुक्ती पाए।।4।।**

ॐ ह्रीं टी.बी शुगरादि रोग नाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**नेत्र कर्ण के रोग कहाए, भारी उससे सदा सताएँ।**
**वीर प्रभु को जो भी ध्याए, संकट से वह मुक्ति पाए।।5।।**

ॐ ह्रीं नेत्र कर्णादिक रोगनाशक श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

**वात पित्त ज्वर आदिक भाई, रहे लोक में ये दुखदायी।**
**वीर प्रभु को जो भी ध्याए, संकट से वह मुक्ति पाए।।6।।**

ॐ ह्रीं वात पित्त कफ जलोधर उदरादि सर्वरोग नाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जल थल नभचर प्राणी भाई, कृत उपसर्ग रहे दुखदायी।**
**वीर प्रभु को जो भी ध्याए, संकट से वह मुक्ति पाए।।7।।**

ॐ ह्रीं तिर्यंचकृत उपद्रव नाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पिता पुत्र भाई जो गाए, राग द्वेष कर सभी सताए।**
**वीर प्रभु को जो भी ध्याए, संकट से वह मुक्ति पाए।।8।।**

ॐ ह्रीं कुटुम्ब दुःख क्लेश नाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

**दोहा - जिन अर्चा कर जीव को, ऋद्धि सिद्धि हो प्राप्त।**
**इस भव के सुख प्राप्तकर, बनें स्वयंभू आप्त।।**

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री महावीर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मूलगुणों के धारी अर्हत्, रत्नत्रय तप धर्मोंवान।**
**विघ्न विनाशक शांति प्रदायक, करने वाले जग कल्याण।।**
**अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते, वीर प्रभू पद अपरम्पार।**
**'विशद' भावना भाते हैं हम, प्राप्त करें प्रभु शिव का द्वार।।**

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

**जाप्य : ॐ ह्रीं श्री अर्हं महावीर जिनेन्द्राय नमः।**

# समुच्चय जयमाला

दोहा – जिनको ध्याते भाव से, जग के बालाबाल।
महावीर भगवान की, गाते हम जयमाल।।

(सुवीर छन्द)

हे वीर प्रभु ! हम द्वार आपके, आके करें पुकार।
चरण शरण दो हमको स्वामी, करो शीघ्र उद्धार।।
भक्तों पर दृष्टी डालो प्रभु, रहे सदा श्रद्धान।
विशद भावना भाते हैं हम, पाएँ सम्यक् ज्ञान।।1।।
इतना साहस रहे हृदय में, देवागम ऋषिराज।
सदा रहे इनके श्रद्धानी, रहे मेरे सरताज।।
श्री जिन की वाणी को सुनकर, पालें निज कर्तव्य।
हृदय बसे जिनवाणी नितप्रति, स्याद्वाद मय भव्य।।2।।
सप्त तत्त्व का ज्ञान जगे उर, बीज पदों का ध्यान।
तत्त्व अर्थ को हृदय धारकर, पाएँ भेद विज्ञान।।
शिव पथ के राही गुरु गाए, पालें पंचाचार।
भव्यों को सन्मार्ग प्रदायक, होते जग हितकार।।3।।
अर्ज हमारी इतनी सी है, हे प्रभु ! कृपा निधान।
अर्चा करें आपकी मेरा, घटे पाप अभिमान।।
दिया आपने भक्तों को प्रभु, मुँह माँगा वरदान।
योग्य समझकर भर दो झोली, हे प्रभु ! कृपा निधान।।4।।
जिन शासन जयवन्त रहे प्रभु, जिनवाणी जिन संत।
व्रत का पालन करें भाव से, पाएँ भव का अंत।।

**दोहा – वर्धमान सन्मति प्रभो ! वीरातिवीर महावीर।**
**अर्चा की है भाव से, मैटो भव की पीर।।**

ॐ ह्रीं सर्व संकटहारी श्री महावीर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

**दोहा – पूजा करते आपकी, हे त्रिभुवन के ईश !**
**पुष्पांजलि करते विशद, झुका रहे पद शीश।।**

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

# आरती महावीर प्रभु की तर्ज – इह विध.....

**वीर प्रभू की आरति कीजे, अपना जन्म सफल कर लीजे।**
**श्री सिद्धार्थ पिता कहलाए, माता त्रिशला देवी पाए।।**
**मगध देश वैशाली गाया, जन्म नगर कुण्डलपुर पाया।।1।।**
**षष्टी शुक्ला आषाढ़ कहाए, गर्भ में चयकर स्वर्ग से आए।।2।।**
**चैत शुक्ल तेरस दिन आया, जन्म प्रभु ने अतिशय पाया।।3।।**
**मगसिर दशमी तिथि को भाई, परं दिगम्बर दीक्षा पाई।।4।।**
**दशें शुक्ल वैशाख बखानी, हुए प्रभु जी केवल ज्ञानी।।5।।**
**कार्तिक कृष्ण अमावश पाए, पावापुर से मोक्ष सिधाए।।6।।**
**वर्धमान सन्मति कहलाए, वीर और अतिवीर कहाए।।7।।**
**महावीर प्रभू नाम के धारी, हुए लोक में मंगलकारी।।8।।**
**स्वर्ण रंग तन का प्रभु पाए, सात हाथ ऊँचे कहलाए।।9।।**
**वर्ष बहत्तर आयू पाए, विशद लोक में पूज्य कहाए।।10।।**
**जो भी प्रभु की आरति गाए, वह अपना सौभाग्य जगाए।।11।।**
**तीन योग से जिन पद ध्याएँ, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ।।12।।**

# लघु णमोकार मंत्र विधान
# माण्डला

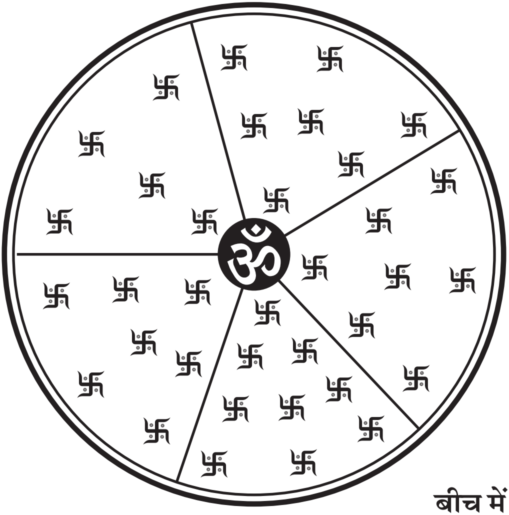


बीच में – ॐ

प्रथम कोष्ठ – 7 अर्घ्य, द्वितीय कोष्ठ – 5 अर्घ्य

तृतीय कोष्ठ – 7 अर्घ्य, चतुर्थ कोष्ठ – 9 अर्घ्य

पंचम कोष्ठ – 9 अर्घ्य

कुल – 35 अर्घ्य

रचयिता :

प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

# स्तवन

**महामंत्र नवकार की, नव कोटि के साथ।**
**ध्यान जाप कर पूजते, झुका रहे हैं माथ।।**

(तांटक छन्द)

छियालिस मूलगुणों के धारी, पाने वाले केवलज्ञान।
दोष अठारह रहित जिनेश्वर, तीन लोक में रहे महान।।
दिव्य देशना जिनकी पावन, भविजीवों की करुणाकार।
मोक्ष मार्ग दर्शाने वाली, अतिशय कारी अपरम्पार।।1।।
अष्ट कर्म का नाश करें, जो होते सिद्ध शिला के ईश।
अष्ट गुणों के धारी पावन, सिद्धों के पद धरते शीश।।
दर्शज्ञान चारित्र सुतप शुभ, पालन करते वीर्याचार।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, पावन परमेष्ठी आचार्य।।2।।
ग्यारह अंग पूर्व चौदह, के धारी उपाध्याय ऋषिराज।
सम्यक्ज्ञान प्राप्ति हेत, हम उपाध्याय पद पूजें आज।।
विषया के त्यागी साधू, हों आरम्भ परिग्रह हीन।
ज्ञान ध्यानलय लीन यतीश्वर, होते सम्यक्ज्ञान प्रवीण।।3।।
णमोकार परमेष्ठी वाचक, मंत्र जहाँ में अतिशय कार।
भव्य जीव ध्याते हैं जिनको, तीन योग से बारम्बार।।
परमेष्ठी को ध्याने वाले, प्राप्त करें शुभ पुण्य अतीव।
'विशद' ज्ञान को पाने वाले, धरते मोक्ष मार्ग की नीव।।4।।

दोहा – महिमा कारी मंत्र है, महामंत्र णवकार।
ध्यान जाप कर जीव सब, पावें सौख्य अपार।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

# लघु णमोकार मंत्र विधान

स्थापना

**दोहा- काल अनादि अनन्त है, महामंत्र नवकार।**
**आह्वानन् करके हृदय, वंदन बारम्बार।।**

ॐ ह्रीं अनादि निधन पंचनमस्कार मन्त्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चाल छन्द)

**है जल की महिमा न्यारी, त्रय रोग निवारण कारी।**
**हम णमोकार को ध्याते, त्रियोग से महिमा गाते।।1।।**

ॐ ह्रीं अनादि निधन पंचनमस्कार मन्त्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**चन्दन है खुशबूकारी, भव रोग प्रणाशन कारी।**
**हम णमोकार को ध्याते, त्रियोग से महिमा गाते।।2।।**

ॐ ह्रीं अनादि निधन पंचनमस्कार मन्त्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

**अक्षत अक्षय पद दायी, अक्षत की पूजा भाई।**
**हम णमोकार को ध्याते, त्रियोग से महिमा गाते।।3।।**

ॐ ह्रीं अनादि निधन पंचनमस्कार मन्त्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

**यह पुष्प लिए मनहारी, जो काम रोग विनिवारी।**
**हम णमोकार को ध्याते, त्रियोग से महिमा गाते।।4।।**

ॐ ह्रीं अनादि निधन पंचनमस्कार मन्त्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**नैवेद्य सरस शुभकारी, है क्षुधा रोग क्षय कारी।**
**हम णमोकार को ध्याते, त्रियोग से महिमा गाते ।।5।।**
ॐ ह्रीं अनादि निधन पंचनमस्कार मन्त्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
**है दीप प्रकाशन कारी, जो मोह महातम हारी।**
**हम णमोकार को ध्याते, त्रियोग से महिमा गाते ।।6।।**
ॐ ह्रीं अनादि निधन पंचनमस्कार मन्त्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
**है धूप दशांगी न्यारी, जो अष्ट कर्म क्षयकारी।**
**हम णमोकार को ध्याते, त्रियोग से महिमा गाते ।।7।।**
ॐ ह्रीं अनादि निधन पंचनमस्कार मन्त्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
**फल सरस लिए अघहारी, है मोक्ष सुपद कर्तारी।**
**हम णमोकार को ध्याते, त्रियोग से महिमा गाते ।।8।।**
ॐ ह्रीं अनादि निधन पंचनमस्कार मन्त्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।
**यह अर्घ्य अनर्घ्य प्रदायी, हम चढ़ा रहे हैं भाई।**
**हम णमोकार को ध्याते, त्रियोग से महिमा गाते ।।9।।**
ॐ ह्रीं अनादि निधन पंचनमस्कार मन्त्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
**दोहा – शांति प्रदायक नीर है, कर्मों का क्षयकार।**
**विशद भाव से दे रहे, जिन पद शांतीधार।।**
शान्तये शांतिधारा
**दोहा – पुष्पांजलि करके विशद, पाएँ शिव सोपान।**
**भाव सहित करते यहाँ, श्री जिन का गुणगान।।**
पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

# णमो अरहंताणं

(चाल छन्द)

**ण-बीज वर्ण तम नाशी, है केवल ज्ञान प्रकाशी।**
**हम अरहंतों को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।1।।**

ॐ ह्रीं 'ण' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मो-बीज है मोक्ष प्रदायी, जो अनुपम शिव सुखदायी।**
**हम अरहंतों को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।2।।**

ॐ ह्रीं 'मो' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अ-बीजाक्षर अविकारी, पद दायक मंगलकारी।**
**हम अरहंतों को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।3।।**

ॐ ह्रीं 'अ' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**र-बीज रम्य शुभकारी, रवि सम जो आभाकारी।**
**हम अरहंतों को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।4।।**

ॐ ह्रीं 'र' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**हं-बीज वर्ण को ध्याए, मन का कल्मष खो जाए।**
**हम अरहंतों को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।5।।**

ॐ ह्रीं 'हं' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**ता है तामस परिहारी, अन्तश् का मोह निवारी।**
**हम अरहंतों को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।6।।**

ॐ ह्रीं 'ता' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**णं-बीज वर्ण मनहारी, जो राग द्वेष विनिवारी।**
**हम अरहंतों को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।7।।**

ॐ ह्रीं 'णं' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

# णमो सिद्धाणं

**ण-सद्श्रद्धान प्रदायी, मिथ्या तम नाशक भाई।**
**हम परम सिद्ध को ध्याएँ, जिन को निज हृदय बसाएँ।।1।।**

ॐ ह्रीं 'ण' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मो-मोह तिमिर विनशाए, जो भेद ज्ञान प्रगटाए।**
**हम परम सिद्ध को ध्याएँ, जिन को निज हृदय बसाएँ।।2।।**

ॐ ह्रीं 'मो' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सि-बीज है सिद्धि प्रदायी, जिसकी महिमा अतिशायी।**
**हम परम सिद्ध को ध्याएँ, जिन को निज हृदय बसाएँ।।3।।**

ॐ ह्रीं 'सि' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**द्धा-धर्म की धार बहाए, जो अतिशय शांति दिलाए।**
**हम परम सिद्ध को ध्याएँ, जिनको निज हृदय बसाएँ।।4।।**

ॐ ह्रीं 'द्धा' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**णं-बीजाक्षर शिवकारी, है दुर्गति पंथ निवारी।**
**हम परम सिद्ध को ध्याएँ, जिन को निज हृदय बसाएँ।।5।।**

ॐ ह्रीं 'णं' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

# णमो आयरियाणं

**ण-बीज है बोध प्रकाशी, अज्ञान महातम नाशी।**
**आचार्य हैं पंचाचारी, जिनके पद ढोक हमारी।।1।।**

ॐ ह्रीं 'ण' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मो-बीजाक्षर बतलाए, मौनी हो ध्यान लगाए।**
**आचार्य हैं पंचाचारी, जिनके पद ढोक हमारी।।2।।**

ॐ ह्रीं 'मो' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आ-बीज है आनन्दकारी, पददायक जो अविकारी।**
**आचार्य हैं पंचाचारी, जिनके पद ढोक हमारी।।3।।**

ॐ ह्रीं 'आ' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**य-बीज रम्य अतिशायी, है पंचम ज्ञान प्रदायी।**
**आचार्य हैं पंचाचारी, जिनके पद ढोक हमारी।।4।।**

ॐ ह्रीं 'य' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**रि-बीजाक्षर शुभ जानो, पापों का नाशी मानो।**
**आचार्य हैं पंचाचारी, जिनके पद ढोक हमारी।।5।।**

ॐ ह्रीं 'रि' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**या-बीज है शांतीकारी, इस जग में विस्मयकारी।**
**आचार्य हैं पंचाचारी, जिनके पद ढोक हमारी।।6।।**

ॐ ह्रीं 'या' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**णं-पाप पंक परिहारी, सद् संयम के आचारी।**
**आचार्य हैं पंचाचारी, जिनके पद ढोक हमारी।।7।।**

ॐ ह्रीं 'णं' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

# णमो उवज्झायाणं

(चौपाई)

**ण-बीजाक्षर बोध प्रदायी, भवि जीवों को शिव सुखदायी।**
**उपाध्याय को जो भी ध्याते, प्राणी वे सद्ज्ञान जगाते।।1।।**

ॐ ह्रीं 'ण' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मो-है बीज वर्ण तमनाशी, अनुपम सम्यक्ज्ञान प्रकाशी।**
**उपाध्याय को जो भी ध्याते, प्राणी वे सद्ज्ञान जगाते।।2।।**

ॐ ह्रीं 'मो' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**उ-है उत्तम मार्ग प्रदायी, जो है उभय लोक सुखदायी।**
**उपाध्याय को जो भी ध्याते, प्राणी वे सद्ज्ञान जगाते।।3।।**

ॐ ह्रीं 'उ' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**व-है बीज विरोध निवारी, तन मन में शुभ शांतीकारी।**
**उपाध्याय को जो भी ध्याते, प्राणी वे सद्ज्ञान जगाते।।4।।**

ॐ ह्रीं 'व' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**ज्झा-बीजाक्षर लक्ष्य प्रदायी, जो पुरुषार्थ कराए भाई।**
**उपाध्याय को जो भी ध्याते, प्राणी वे सद्ज्ञान जगाते।।5।।**

ॐ ह्रीं 'ज्झा' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**या–बीजाक्षर यत्न कराए, मुक्ती पथ की राह दिखाए।**
**उपाध्याय को जो भी ध्याते, प्राणी वे सद्ज्ञान जगाते।।6।।**

ॐ ह्रीं 'या' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**णं–है बीज कर्म संहारी, ध्याने वाले हों शिवकारी।**
**उपाध्याय को जो भी ध्याते, प्राणी वे सद्ज्ञान जगाते।।7।।**

ॐ ह्रीं 'णं' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

# णमो लोए सव्वसाहूणं

**ण–से अपने कर्म नशाएँ, ध्या के अजर अमर पद पाएँ।**
**साधू रत्नत्रय को ध्याएँ, जिनकी अतिशय महिमा गाएँ।।1।।**

ॐ ह्रीं 'ण' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मो–है बीज वर्ण अतिशायी, भवि जीवों को मोक्ष प्रदायी।**
**साधू रत्नत्रय को ध्याएँ, जिनकी अतिशय महिमा गाएँ।।2।।**

ॐ ह्रीं 'मो' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**लो–बीजाक्षर जग कल्याणी, जिसको ध्याते हैं सद्ज्ञानी।**
**साधू रत्नत्रय को ध्याएँ, जिनकी अतिशय महिमा गाएँ।।3।।**

ॐ ह्रीं 'लो' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**ए–एकत्व ध्यान करवाए, अन्य का जो परिहार कराए।**
**साधू रत्नत्रय को ध्याएँ, जिनकी अतिशय महिमा गाएँ।।4।।**

ॐ ह्रीं 'ए' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**स-संसार भावना कारी, तीन योग से हो अविकारी।**
**साधू रत्नत्रय को ध्याएँ, जिनकी अतिशय महिमा गाएँ।।5।।**

ॐ ह्रीं 'स' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**व्व-बीजाक्षर बोध जगाए, पर का जो परिहार कराए।**
**साधू रत्नत्रय को ध्याएँ, जिनकी अतिशय महिमा गाएँ।।6।।**

ॐ ह्रीं 'व्व' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सा-शुभ साधु समाधि दिलाए, अल्प समय में शिव पहुँचाए।**
**साधू रत्नत्रय को ध्याएँ, जिनकी अतिशय महिमा गाएँ।।7।।**

ॐ ह्रीं 'सा' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**हू-बीजाक्षर संवर कारी, कर्म निर्जरा कर शिवकारी।**
**साधू रत्नत्रय को ध्याएँ, जिनकी अतिशय महिमा गाएँ।।8।।**

ॐ ह्रीं 'हू' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**णं-बीजाक्षर मद परिहारी, अशुचि देह चेतन चित्कारी।**
**साधू रत्नत्रय को ध्याएँ, जिनकी अतिशय महिमा गाएँ।।9।।**

ॐ ह्रीं 'णं' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अक्षर पद मात्राएँ जानो, पैंतिस पाँच अट्ठावन मानो।**
**णमोकार को पूजें ध्याएँ, विशद जाप कर पुण्य कमाएँ।।10।।**

ॐ ह्रीं पंच त्रिंशत बीजाक्षर युत णमोकार महामन्त्राय नमः
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जाप्य : ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यो नमः।**

# जयमाला

दोहा – पूज्य अनादि अनन्त है, तीनों लोक त्रिकाल।
महामंत्र णमोकार की, गाते हैं जयमाल।।

(राधिका–छन्द)

णमोकार महामंत्र, जगत में भाई–2।
भवि जीवों को है, उभय लोक सुखदायी–2।
जो लाख चौरासी, मंत्रों का है राजा।
जिसको ध्याते हैं, सुर नर मुनि अधिराजा।।1।।
जो सर्व मंगलों में शुभ, प्रथम कहाए।
जग के सब मंगल जिसमें आन समाए।।
है सर्वश्रेष्ठ उत्तम, इस जग में भाई।
जो उभय लोक जीवों को, सौख्य प्रदायी।।2।।
शुभ तीन लोक में अनुपम, शरण कहाए।
ना अन्य शरण कोई भी, प्राणी पाए।।
अरहंत घातिया कर्मों, के है नाशी।
हैं अनन्त चतुष्टय धारी, ज्ञान प्रकाशी।।3।।
प्रभु दोष अठारह रहित, कहे अविनाशी।
हैं सिद्ध आठ गुण, धारी शिवपुर वासी।।
आचार्य लोक में गाए, पंचाचारी।
शुभ शिक्षा दीक्षा दाता, संयम धारी।।4।।

श्रुत अंग पूर्व के ज्ञाता, पाठक जानो।
मुनियों को ज्ञान प्रदायी, पावन मानो।।
हैं विषयाशा के त्यागी, मुनि अनगारी।
शुभ रत्नत्रय धर ज्ञान, ध्यान तप धारी।।5।।
सुन महामंत्र को श्वान, ऋषभ फण धारी।
गज अज आदिक पशु, हुए देव पद धारी।।
पैंतिस सोलह छह पंच, चार दो भाई।
इक अक्षर कृत जो ध्याएँ, मोक्ष प्रदायी।।6।।
पैंतिस अक्षर के पैंतिस, व्रत हों जानो।
पाँचे सातें नौमी, चौदस के मानो।।
शुभ महामंत्र यह विष का, अमृतकारी।
है ऋद्धि सिद्धि सौभाग्य, 'विशद' कर्तारी।।7।।

दोहा – महिमा जिसकी है अगम, गरिमा रही विशाल।
महामंत्र णवकार को, वन्दन करो त्रिकाल।।

ॐ ह्रीं अनादि निधन पंचनमस्कार मन्त्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा – मंगल उत्तम है शरण, महामंत्र णवकार।
पूजें ध्याएँ जीव सब, जिसको बारम्बार।।

इत्याशीर्वादः

# श्री णमोकार चालीसा

दोहा– तीन लोक से पूज्य हैं, अर्हंतादि नव देव।
मन वच तन से पूजते, उनको विनत सदैव।।
णमोकार महामंत्र है, काल अनादि अनन्त।
श्रद्धा भक्ती जाप से, बनें जीव अर्हन्त।।

चौपाई

णमोकार शुभ मंत्र कहाया, काल अनादि अनन्त बताया।।1।।
मंत्रराज जानो शुभकारी, अपराजित अनुपम मनहारी।।2।।
परमेष्ठी वाचक यह जानो, महिमाशाली जो पहिचानो।।3।।
जिनने कर्म घातिया नाशे, अनुपम केवलज्ञान प्रकाशे।।4।।
छियालिस मूलगुणों के धारी, मंगलमय पावन अविकारी।।5।।
सर्व चराचर के हैं ज्ञाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।।6।।
दोष अठारह रहित बताए, चौंतिस अतिशय जो प्रगटाए।7।।
अनन्त चतुष्टय जिनने पाए, प्रातिहार्य आ देव रचाए।।8।।
सारा जग ये महिमा गाए, पद में सादर शीश झुकाए।।9।।
समवशरण आ देव बनाते, शत् इन्द्रों से पूजे जाते।।10।।
कल्याणक शुभ पाने वाले, सारे जग में रहे निराले।11।।
अष्ट कर्म जिनके नश जाते, जीव सिद्धपद अनुपम पाते।।12।।
जो शरीर से रहित बताए, सुख अनन्त के भोगी गाए।।13।।
फैली है जग में प्रभुताई, अनुपम सिद्धों की शुभ भाई।।14।।

आठ मूलगुण जिनके गाए, सिद्धशिला पर धाम बनाए॥15॥
सिद्ध सुपद हम पाने आए, अतः सिद्ध गुण हमने गाए॥16॥
आचार्यों के हम गुण गाते, पद में नत हो शीश झुकाते॥17॥
पंचाचार के धारी गाए, इस जग को सन्मार्ग दिखाए॥18॥
शिक्षा-दीक्षा देने वाले, जिन शासन के हैं रखवाले॥19॥
आवश्यक पालन करवाते, प्रायश्चित दे दोष नशाते॥20॥
छत्तिस मूलगुणों के धारी, नग्न दिगम्बर हैं अविकारी॥21१॥
द्रव्य भाव श्रुत के जो ज्ञाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता॥22॥
ज्ञानाभ्यास करें अतिशायी, संतों को शिक्षा दें भाई॥23॥
द्वादशांग के ज्ञाता जानो, पच्चिस गुणधारी पहिचानो॥24॥
रत्नत्रय धारी कहलाए, मुक्ती पथ के नेता गाए॥25॥
दर्शन-ज्ञान-चारित के धारी, साधू होते हैं अनगारी॥26॥
विषयाशा के त्यागी जानो, संगारम्भ रहित पहिचानो॥27॥
ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जो उपसर्ग परीषह सहते॥28॥
हैं अट्ठाईस मूलगुणधारी, करें साधना मंगलकारी॥29॥
पंचमहाव्रत धारी जानो, पंचसमितियाँ पाले मानो॥30॥
पंचेन्द्रिय जय करने वाले, आवश्यक के हैं रखवाले॥31॥
णमोकार में इनकी भाई, अतिशयकारी महिमा गाई॥32॥
महामंत्र को जिसने ध्याया, उसने ही अनुपम फल पाया॥33॥
अंजन बना निरंजन भाई, नाग युगल सुर पदवी पाई॥34॥

सेठ सुदर्शन ने भी ध्याया, सूली का सिंहासन पाया॥35॥
सीता सती अंजना नारी, ने पाया इच्छित फल भारी॥36॥
श्वानादिक पशु स्वर्ग सिधाए, णमोकार को मन से ध्याए॥37॥
महिमा इसकी को कह पाए, लाख चौरासी मंत्र समाए॥38॥
भाव सहित इसको जो ध्याए, इस भव के सारे सुख पाए॥39॥
अपने सारे कर्म नशाए, अन्त में शिव पदवी को पाए॥40॥

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
'विशद' गुणों को प्राप्त कर, बने श्री का नाथ॥
धूप अग्नि में होमकर, करें मंत्र का जाप।
अन्त समय में जीव के, कटते सारे पाप॥

## णमोकार मंत्र की आरती

(तर्ज : आज मंगलवार है...)

महामंत्र नवकार है, मुक्ती का यह द्वार है।
ध्यान जाप आरति कर प्राणी, होता भव से पार है।।
होता भव से पार है।। टेक।।
महामंत्र के पंच पदों में, परमेष्ठी को ध्याया है।
अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु गुण गाया है।।
महामंत्र नवकार..... ।। 1 ।।

मूलमंत्र अपराजित आदिक, मंत्रराज कई नाम रहे।
श्रेष्ठ अनादिऽनिधन मंत्र के, और अनेकों नाम कहे।।
महामंत्र नवकार..... ।। 2 ।।
महामंत्र को जपने वाले, अतिशय पुण्य कमाते हैं।
सुख शांति आनन्द प्राप्त कर, निज सौभाग्य जगाते हैं।।
महामंत्र नवकार..... ।। 3 ।।
काल अनादी से जीवों ने, सत् श्रद्धान जगाया है।
महामंत्र का ध्यान जापकर, स्वर्ग मोक्ष पद पाया है।।
महामंत्र नवकार..... ।। 4 ।।
सुनकर नाग नागिनी जिसको, पद्मावति धरणेन्द्र भये।
अंजन हुए निरंजन पढ़कर, अन्त समय में मोक्ष गये।।
महामंत्र नवकार..... ।। 5 ।।
प्रबल पुण्य के उदय से हमने, महामंत्र को पाया है।
अतिशय पुण्य कमाने का शुभ, हमने भाग्य जगाया है।।
महामंत्र नवकार..... ।। 6 ।।
महामंत्र का ध्यान जाप कर, आरति करने आए हैं।
'विशद' भाव का दीप जलाकर, आज यहाँ पर लाए हैं।।
महामंत्र नवकार..... ।। 7 ।।

# चौंसठ ऋद्धि विधान

## माण्डला

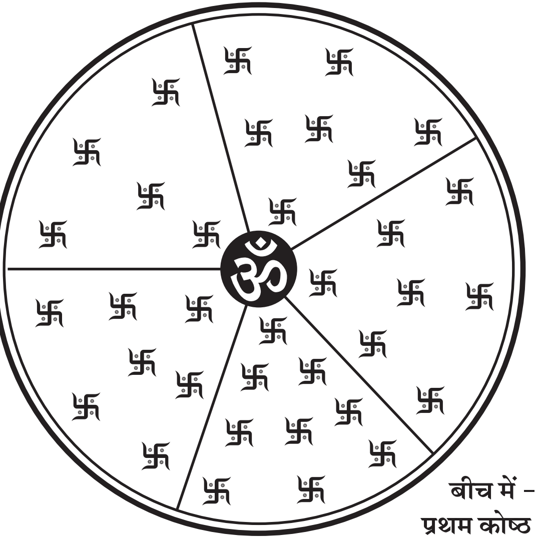


बीच में – ॐ

प्रथम कोष्ठ – 7

द्वितीय कोष्ठ – 5, तृतीय कोष्ठ – 7

चतुर्थ कोष्ठ – 9, पंचम कोष्ठ – 9

कुल – 35 अर्घ्य

रचयिता : प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

# 64 ऋद्धि का माहात्म्य, लक्षण व फल

दोहा– मंगलमय मंगल करण, मंगल जिन अर्हन्त।
चौंसठ ऋद्धीधर मुनी, तीन काल के संत।।

(शम्भू छन्द)

श्रेष्ठ तपस्या करने वाले, संत ऋद्धियाँ पाते हैं।
करने से एकाग्र ध्यान शुभ, मंत्र सिद्ध हो जाते हैं।।
मिथ्यावादी श्रावक कोई, मंत्र की सिद्धी करते हैं।
किन्तु ऋद्धी परम तपस्वी, जैन मुनी ही धरते हैं।।1।।
सिद्धी सर्व शुभाशुभ करने, वाली जग में कही विशेष।
ऋद्धी सबका हित करती है, ऐसा कहते वीर जिनेश।।
मुनिवर निज के हेतु कभी न, करते ऋद्धी का उपयोग।
जन-जन को सुख देने वाली, ऋद्धी मेटे भव का रोग।।2।।
गणधर त्रेसठ श्रेष्ठ ऋद्धियाँ, पाने वाले कहे ऋशीष।
केवल ऋद्धी पाते अर्हत्, होते जगती पति जगदीश।।
श्रेष्ठ ऋद्धी की शक्ति पाकर, भी न करते मान कभी।
परमेष्ठी को ध्याने वाले, करते जिन का ध्यान सभी।।3।।
ऋद्धीधारी मुनिवर जग में सर्व सिद्धियाँ पाते हैं।
उस भव में या अन्य भवों में, परम मोक्ष को जाते हैं।।

बहुविधि सिद्धी पाने वाले, का कुछ निश्चित नहीं कहा।
मुक्ती पावें या न पावें, ऐसा निश्चित नहीं रहा।।4।।
जानके ऋद्धी की महिमा का, विशद हृदय श्रद्धान करें।
ऋद्धीधारी जिन संतों का, हृदय कमल में ध्यान करें।।
मोक्ष मार्ग के राही हैं जो, उनकी महिमा हम गाएँ।
चरण-कमल में वंदन की शुभ, विशद भावना हम भाएँ।।5।।

(इति पुष्पांजलि क्षिपेत्)

## आचार्य श्री 108 विशदसागर जी का अर्घ्य

गुरुवर की हम महिमा गाते हैं, अपने हम सौभाग्य जगाते हैं।
चरणों में आते हैं, अर्घ चढ़ाते हैं, करते हैं गुरुपद नमन।।
क्योंकि, बड़े पुण्य से अवसर आया है,
गुरुवर का शुभ आशिष पाया है।।

ॐ हूँ प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विशदसागर यतिवरेभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामिती स्वाहा।

# चौंसठ ऋद्धि पूजा

स्थापना

**बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, चारण ऋद्धी के नौ भेद।**
**ऋद्धि विक्रिया ग्यारह भेदी, तप्त ऋद्धी के सप्त प्रभेद।।**
**अष्ट भेद औषधि ऋद्धी के, बल ऋद्धी है तीन प्रकार।**
**भेद कहे छह रस ऋद्धी के, अक्षीण ऋद्धियाँ दो शुभकार।।**

**दोहा– पुण्य प्रदायी ऋद्धियाँ, चौंसठ हैं अभिराम।**
**आह्वानन् को हम यहाँ, करते विशद प्रणाम।।**

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धि धारक सर्व ऋषि समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं, अत्र मम् सन्निहितौ भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चाल छन्द)

**यह नीर है मंगलकारी, जन्मादिक रोग निवारी।**
**हम चौंसठ ऋद्धी ध्यायें, ऋषिवर पद पूज रचाएँ।।1।।**

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः जलं निर्व. स्वाहा।

**चंदन भवताप निवारी, जो अतिशय खुसबूकारी।**
**हम चौंसठ ऋद्धी ध्यायें, ऋषिवर पद पूज रचाएँ।।2।।**

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः चंदनं निर्व.स्वाहा।

**अक्षत अक्षय फलकारी, हैं मोती के उन्हारी।**
**हम चौंसठ ऋद्धी ध्यायें, ऋषिवर पद पूज रचाएँ।।3।।**

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अक्षतं निर्व.स्वाहा।

**ये पुष्प हैं खुशबूकारी, जो काम रोग विनिवारी।**
**हम चौंसठ ऋद्धी ध्यायें, ऋषिवर पद पूज रचाएँ।।4।।**

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः पुष्पं निर्व.स्वाहा।

**नैवेद्य सरस मनहारी, है क्षुधा रोग परिहारी।**
**हम चौंसठ ऋद्धी ध्यायें, ऋषिवर पद पूज रचाएँ।।5।।**

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

**यह दीपक तिमिर विनाशी, है मोह महातम नाशी।**
**हम चौंसठ ऋद्धी ध्यायें, ऋषिवर पद पूज रचाएँ।।6।।**

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः दीपं निर्व.स्वाहा।

**सुरभित है धूप निराली, जो कर्म नशाने वाली।**
**हम चौंसठ ऋद्धी ध्यायें, ऋषिवर पद पूज रचाएँ।।7।।**

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः धूपं निर्व.स्वाहा।

**फल ताजे रस मय भाई, हैं मोक्ष महाफलदाई।**
**हम चौंसठ ऋद्धी ध्यायें, ऋषिवर पद पूज रचाएँ।।8।।**

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः फलं निर्व.स्वाहा।

यह अर्घ्य विशद मनहारी, है शाश्वत पद कर्त्तारी।
हम चौंसठ ऋद्धी ध्यायें, ऋषिवर पद पूज रचाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

सोरठा– देते शांती धार, शांती पाने हम यहाँ।
पा के पद अनगार, मोक्ष महाफल पाएँ हम।।

।। शान्त्ये शांतिधारा ।।

सोरठा– पुष्पांजलि मनहार, करते भक्ती भाव से।
वन्दन बारम्बार, देव शास्त्र गुरु के चरण।।

।। पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

## जयमाला

दोहा– चौंसठ ऋद्धी पूजते, जो भवि चित्त लगाए।
धन सम्पत्ती घर बसे, सकल विघ्न नश जाय।।

(चौपाई)

जय जय चौंसठ ऋद्धीधारी, तव पूजा करते नर नारी।
मुनि ने रत्नत्रय को धारा, शत्-शत् वंदन नमन हमारा।।1।।
पुण्यकर्म से नर भव पाया, जिसने जैन धर्म अपनाया।
मुनिवर सम्यक् तप बलधारी, शिवपथ के गणधर अधिकारी।।2।।
चौंसठ ऋद्धी धारें कोई, ताको आवागमन न होई।
बुद्धि ऋद्धि धारें मुनि सोई, उनके ज्ञान वृद्धि नित होई।।3।।

विक्रिया ऋद्धी बहु तन धारें, उसकी भक्ती हृदय उतारें।
चारण मुनि को पूजें भाई, भव- भव के आताप नशाई।।4।।
चारण मुनि करुणा नित पालें, जल पर चलते जल ना हालें।
तप करके सब करम खिपावें, तप से शुक्ल ध्यान उपजावें।।5।।
कर्म निर्जरा तप से होई, तप से शिव सुख संपद सोई।
बलधारी मुनि भव दुखहारी, अनुपम सुखकर मुनि बल धारी।।6।।
जय जय औषधि ऋद्धी धारी, सकल व्याधि क्षण में तुम हारी।
जो भी नाम तिहारे गावें, शिव स्वरूपमय हो सुख पावें।।7।।
रोग-क्षुधा रस ऋद्धि निवारें, सब प्रकार अमृत बरसावें।
मुनि अक्षीण महानस धारें, भव सागर से पार उतारें।।8।।
मुनि की भक्ति सदा हम गाएँ, भव-भव के सब पाप नशाएँ।
मन वच तन मुनिवर को ध्याएँ, सुख संपद जय सौख्य कराएँ।।9।।
सम्यक् दर्शन ज्ञान जगाएँ, सम्यक् तप जीवन में पाएँ।
यही भावना रही हमारी, पूर्ण करो तुम हे त्रिपुरारी!।।10।।
पूजा करके जिनगुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।
'विशद' ज्ञान हम भी प्रगटाएँ, कर्म नाश कर शिव पुर जाएँ।।11।।

दोहा- चौंसठ ऋद्धीधर मुनी, तीन लोक सुखदाय।
तिनको पूजें अर्घ्य ले, केवल ज्ञान जगाय।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धिधारक मुनीभ्य: जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**दोहा- चौंसठ ऋद्धीधर ऋषी, संयम तप के ईश।**
**उनके गुण पाने विशद, चरण झुकाते शीश।।**

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत ।।

# चौंसठ ऋद्धि अर्घ्यावली

**दोहा- तपकर चौंसठ ऋद्धियाँ, पाते हैं ऋषिराज।**
**करके जिनकी वन्दना, होंय सफल सब काज।।**

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(चौपाई)

**अवधिज्ञान ऋद्धीधर ज्ञानी, होते जग-जन के कल्याणी।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।1।।**

ॐ ह्रीं अवधिज्ञान ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**ऋद्धि मनःपर्यय जो पाते, पर के मन की बात बताते।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।2।।**

ॐ ह्रीं मनःपयर्य ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**केवलज्ञान ऋद्धि के धारी, अनन्त चतुष्टय धर शिवकारी।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।3।।**

ॐ ह्रीं केवलज्ञान ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**बीज भूत मुनि ऋद्धि जगावें, सर्व ग्रन्थ का सार बतावें।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।4।।**

ॐ ह्रीं बीजभूत ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**रत्न कोष्ठ में भिन्न दिखावें, कोष्ठ बुद्धि मुनिवर त्यों पावें।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।5।।**

ॐ ह्रीं कोष्ठ बुद्धि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**पदानुसारिणी ऋद्धी पावें, पद सुन ग्रन्थ का सार बतावें।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।6।।**

ॐ ह्रीं पदानुसारिणी ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**संभिन्न संश्रोत ऋद्धी धारी, होते सब ध्वनि के उच्चारी।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।7।।**

ॐ ह्रीं संभिन्न संश्रोत ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**दूर स्पर्श ऋद्धि मुनि पाएँ, दूर स्पर्श की शक्ति जगाएँ।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।8।।**

ॐ ह्रीं दूर स्पर्श ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**दूरास्वाद ऋद्धि प्रगटावें, स्वाद दूर वस्तू का पावें।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।9।।**

ॐ ह्रीं दूरास्वाद ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**दूर घ्राण ऋद्धी जो पावें, दूर घ्राण की शक्ति जगावें।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।10।।**

ॐ ह्रीं दूर घ्राण ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**दूर श्रवण ऋद्धी धर जानो, दूर वस्तु के श्रोता मानो।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।11।।**

ॐ ह्रीं दूर श्रवण ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**दूरावलोकन ऋद्धि जगावें, दूर वस्तु अवलोकन पावें।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।12।।**

ॐ ह्रीं दूरावलोकन ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**अष्टांग महानिमित्त के ज्ञाता, अष्ट निमित्त के अर्थ प्रदाता।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।13।।**

ॐ ह्रीं अष्टांग महानिमित्त ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**प्रज्ञा श्रमण ऋद्धि के धारी, सूक्ष्मत्व ऋद्धि के रहे प्रचारी।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।14।।**

ॐ ह्रीं प्रज्ञा श्रमण ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**ऋषि प्रत्येक बुद्धि के धारी, संयम ज्ञान निरूपणकारी।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।15।।**

ॐ ह्रीं प्रत्येक बुद्धि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**दश पूर्वित्व ऋद्धि धर ज्ञानी, साधू कहे अटल श्रद्धानी।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।16।।**

ॐ ह्रीं दश पूर्वित्व ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**ऋषी चतुर्दश पूर्वी जानो, अंग पूर्व श्रुतधारी मानो।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।17।।**

ॐ ह्रीं चतुर्दश पूर्वी ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**ऋषी प्रवादित्व ऋद्धी पाएँ, वाद कुशल की शक्ति जगाएँ।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।18।।**

ॐ ह्रीं प्रवादित्व ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**अणिमा ऋद्धीधर ऋषि जानो, अणु सम देह बनावे मानो।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।19।।**

ॐ ह्रीं अणिमा ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**महिमा ऋद्धी जो ऋषि पावें, उच्च मेरु सम देह बनावें।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।20।।**

ॐ ह्रीं महिमा ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**ऋषिवर लघिमा ऋद्धि जगावें, आक तूल सम देह बनावें।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।21।।**

ॐ ह्रीं लघिमा ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**मुनिवर गरिमा ऋद्धी धारी, देह बनाते हैं जो भारी।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।22।।**

ॐ ह्रीं गरिमा ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**आप्ति ऋद्धि धर भूपर होवें, सूर्य चंद को भी जो छूवें।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।23।।**

ॐ ह्रीं आप्ति ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**ऋषि प्राकम्य ऋद्धि प्रगटावें, जल पे भू सम चलते जावें।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।24।।**

ॐ ह्रीं प्राकम्य ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**ऋषि ईशत्व ऋद्धि जो पावें, वे त्रैलोक्य अधिपति हो जावें।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।25।।**

ॐ ह्रीं ईशत्व ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**ऋषिवर ऋद्धि वशित्व जगावें, प्राणी सब वश में हो जावें।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।26।।**

ॐ ह्रीं वशित्व ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**अप्रतिघात ऋद्धि जो पावें, घुसकर गिरि के बाहर जावें।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।27।।**

ॐ ह्रीं अप्रतिघात ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**अन्तर्धान ऋद्धि ऋषि पाते, क्षण में ही अदृश हो जाते।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।28।।**

ॐ ह्रीं अन्तर्धान ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**कामरूप ऋद्धी के धारी, रूप बनावें कई प्रकारी।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।29।।**

ॐ ह्रीं कामरूप ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**नभ चारण ऋद्धी के धारी, ऋषिवर होते गगन विहारी।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।30।।**

ॐ ह्रीं नभ चारण ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**जल चारण शुभ ऋद्धि जगावें, हिंसा बिन जल पर चल जावें।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।31।।**

ॐ ह्रीं जल चारण ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**जंघा चारण ऋद्धि जगावें, जांघ उठाए बिन चल जावें।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।32।।**

ॐ ह्रीं जंघा चारण ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**अग्नि शिखा ऋद्धी प्रगटावें, अग्नि शिखा पर चलते जावें।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।33।।**

ॐ ह्रीं अग्नि शिखा ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**पुष्प चारण ऋद्धी मुनि पाते, फूल पे हल्के हो चल जाते।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।34।।**

ॐ ह्रीं पुष्प चारण ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**मेघ चारण ऋद्धी मुनि पाएँ, मेघ पर गमन शक्ति जगावें।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।35।।**

ॐ ह्रीं मेघ चारण ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**तन्तू चारण ऋद्धी धारी, तन्तू पे चलते अविकारी।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।36।।**

ॐ ह्रीं तन्तू चारण ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**ज्योतिष चारण ऋद्धी धारी, गगन गमन करते अविकारी।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।37।।**

ॐ ह्रीं ज्योतिष चारण ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**मरुचारण ऋद्धीधर ज्ञानी, चलें वायु पे हो ना हानी।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।38।।**

ॐ ह्रीं मरुचारण ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**दीप्त ऋद्धि जो मुनिवर पावें, देह कांति ऋषिवर विकशावें।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।39।।**

ॐ ह्रीं दीप्त ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**तप्त ऋद्धि ऋषिवर प्रगटाते, उनके धातू मल छय जाते।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।40।।**

ॐ ह्रीं तप्त ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**महा उग्र तप ऋद्धी पावें, घोर सुतप की शक्ति जगावें।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।41।।**

ॐ ह्रीं उग्र तप ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**ऋद्धि घोर तप पाने वाले, विशद घोर तपि ऋषी निराले।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।42।।**

ॐ ह्रीं घोर तप ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**घोर पराक्रम ऋद्धि जगावें, भू को ऊपर ऋषी उठावें।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।43।।**

ॐ ह्रीं पराक्रम ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**महोपवास की शक्ति प्रदायी, परम घोर तप ऋद्धि बताई।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।44।।**

ॐ ह्रीं महोपवास ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**घोर बह्मचर्य तप धर होवें, स्वप्न में भी बह्मचर्य ना खोवें।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।45।।**

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्य तप ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**मनबल ऋद्धी धर अनगारी, द्वादशांग श्रुत चिन्तनकारी।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।46।।**

ॐ ह्रीं मन बल ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**ऋषी वचन बल ऋद्धी पावें, सब श्रुत पाठ की शक्ति जगावें।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।47।।**

ॐ ह्रीं वचन बल ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**ऋषी काय बल पाएँ ऋद्धी, तन में होवे बल की वृद्धी।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।48।।**

ॐ ह्रीं काय बल ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**आमर्षौषधि ऋद्धी धारी, जन-जन के हों रोग निवारी।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।49।।**

ॐ ह्रीं आमर्षौषधि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**क्ष्वेलौषधि धर का कफ आदी, का स्पर्श नशाए व्याधी।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।50।।**

ॐ ह्रीं क्ष्वेलौषधि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**जलौषधी ऋद्धी के धारी, का जल्ल गाया रोग निवारी।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।51।।**

ॐ ह्रीं जल्लौषधी ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**मलौषधि ऋद्धी ऋषि पावें, उनका मल सब रोग नशावें।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।52।।**

ॐ ह्रीं मलौषधि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**विडौषधि ऋषि का मल जानो, रोग नशाए ऐसा मानो।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।53।।**

ॐ ह्रीं विडौषधि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**सर्वौषधि ऋद्धी मुनि पावें, वायु स्पर्श से रोग बिलावें।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।54।।**

ॐ ह्रीं सर्वौषधि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**आशीर्विष ऋद्धी प्रगटावें, वचन बोलते जहर चढ़ावें।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।55।।**

ॐ ह्रीं आशीर्विष ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**दृष्टी निर्विष ऋद्धी पावें, दृष्टि डालते रोग नशावें।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।56।।**

ॐ ह्रीं दृष्टि निर्विष ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**आश्र्याविष औषधि के धारी, जिनके वचन हैं रोग निवारी।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।57।।**

ॐ ह्रीं आश्र्याविष ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**दृष्टी विष ऋद्धी जो पाते, दृष्टि डालते जहर चढ़ाते।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।58।।**

ॐ ह्रीं दृष्टी विष ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**क्षीर स्रावि ऋद्धी प्रगटावें, नीरस भोजन क्षीर सा पावें।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।59।।**

ॐ ह्रीं क्षीर स्रावि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**घृत स्रावी रस ऋद्धी भाई, घृत सम भोजन हो सुखदायी।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।60।।**

ॐ ह्रीं घृत स्रावी रस ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**कर में मधु स्रावी के जानो, भोजन मधु सम होवे मानो।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।61।।**

ॐ ह्रीं मधु स्रावी ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**अमृतस्रावी ऋद्धि जगावें, अमृत सा भोजन ऋषि पावें।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।62।।**

ॐ ह्रीं अमृतस्रावी ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**अक्षीण संवास ऋद्धी पावें, चक्रवर्ति की सैन्य समावें।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।63।।**

ॐ ह्रीं अक्षीण संवास ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**अक्षीण महानस ऋद्धि उपावें, सेना चक्री की जिम जावें।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी॥64॥**

ॐ ह्रीं अक्षीण महानस ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

**चौंसठ ऋद्धि भावना भायें, विशद शांति सुख प्राणी पाएँ।**
**ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी॥65॥**

ॐ ह्रीं चौंसठ ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

# जयमाला

**दोहा- मंगलमय मंगल परम, मंगलमयी त्रिकाल।**
**चौंसठ हैं शुभ ऋद्धियाँ, गाते हैं जयमाल।।**

।। शम्भू छन्द ।।

**श्रेष्ठ तपस्या करने वाले, संत ऋद्धियाँ पाते हैं।**
**करने से एकाग्र ध्यान शुभ, मंत्र सिद्ध हो जाते हैं।।**
**मिथ्यावादी श्रावक कोई, मंत्र की सिद्धी करते हैं।**
**किन्तु ऋद्धी परम तपस्वी, जैन संत ही धरते हैं।।1।।**
**सिद्धी सर्व शुभाशुभ करने, वाली बड़ी विशेष कही।**
**ऋद्धी सबका हित करती है, मंगलमय जो श्रेष्ठ रही।।**
**मुनिवर निज के हेतु कभी न, करते ऋद्धी का उपयोग।**
**जन-जनको सुख देने वाली, ऋद्धी मैटे भव का रोग।।2।।**

**गणधर त्रेसठ श्रेष्ठ ऋद्धियाँ, पाने वाले कहे ऋशीष।**
**केवल ऋद्धी पाते अर्हत्, होते जगती पति जगदीश।।**
**श्रेष्ठ ऋद्धि की शक्ती पाकर, भी न करते मान कभी।**
**परमेष्ठी को ध्याने वाले, करते जिनका ध्यान सभी।।3।।**
**ऋद्धीधारी मुनिवर जग में, सर्व सिद्धियाँ पाते हैं।**
**उस भव में या अन्य भवों में, परम मोक्ष को जाते हैं।।**
**बहुविधि सिद्धी पाने वाले, का कुछ निश्चित नहीं कहा।**
**मुक्ती पावें या न पावें, ऐसा निश्चित नहीं रहा।।4।।**
**जानके ऋद्धी की महिमा का, विशद हृदय श्रद्धान करें।**
**ऋद्धीधारी जिन संतों का, हृदय कमल में ध्यान करें।।**
**मोक्ष मार्ग के राही हैं जो, उनकी महिमा हम गाएँ।**
**चरण-कमल में वंदन की शुभ, विशद भावना हम भाएँ।।5।।**

**दोहा- पूज्य हैं तीनों लोक में, ऋषिवर ऋद्धीवान।**
**भाव सहित जिनका 'विशद', करते हैं गुणगान।।**

ॐ ह्रीं चतुः षष्ठी ऋद्धि धारक मुनीश्वरेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दोहा- सम्यक् तप से जीव यह, पाए ऋद्धि प्रधान।**
**जिनकी अर्चा कर मिले, हमको शिव सोपान।।**

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

# चौंसठ ऋद्धि चालीसा

दोहा- नवदेवों को नमन कर, नव कोटी के साथ।
तीर्थंकर चौबीस के, चरण झुकाते माथ।।
चौंसठ ऋद्धी का विशद, चालीसा शुभकार।
गाते हैं हम भाव से, नत हो बारम्बार।।

।। चौपाई ।।

पुण्योदय प्राणी का आवे, पावन मानव जीवन पावे।।1।।
देव-शास्त्र-गुरु का श्रद्धानी, होवे अनुपम सम्यक् ज्ञानी।।2।।
संयम धार बने अनगारी, अन्तर बाह्य सुतप का धारी।।3।।
साधक अपने कर्म खिपावें, पावन केवलज्ञान जगावें।।4।।
अवधिज्ञान ऋद्धी के धारी, मनःपर्यय ज्ञानी अविकारी।।5।।
केवलज्ञान ऋद्धि मुनि पाएँ, कोष्ठ ऋद्धि अनुपम प्रगटाएँ।।6।।
ऋषिवर बीज ऋद्धि जो पावें, सर्व शास्त्र का सार बतावें।।7।।
संभिन्न संश्रोत ऋद्धी धारी, होते सब ध्वनि के उच्चारी।।8।।
पदानुसारणी ऋद्धी भाई, दूर स्पर्श ऋद्धि शुभ गाई।।9।।
दूर श्रवण ऋद्धी के धारी, ऋषिवर दूरास्वादन कारी।।10।।
दूर घ्राणत्व ऋद्धि मुनि पावें, दूरावलोकन ऋद्धि जगावें।।11।।
प्रज्ञा श्रमण ऋद्धि शुभ गाई, प्रत्येक बुद्धि ऋद्धि बतलाई।।12।।
ऋषि प्रत्येक बुद्धि के धारी, सम्यक् ज्ञान निरूपण कारी।।13।।
दश पूर्वित्व ऋद्धिधर ज्ञानी, साधू कहे अटल श्रद्धानी।।14।।

ऋषी चतुर्दश पूर्वी जानो, अंग पूर्व श्रुत धारी मानो।।15।।
ऋषी प्रवादित्व ऋद्धी, पाएँ, वाद कुशल की शक्ति जगाएँ।।16।।
अष्टांग महानिमित्त के ज्ञाता, अष्ट निमित्त के अर्थ प्रदाता।।17।।
जंघा चारण ऋद्धी धारी, अग्नि शिखा चारण शुभकारी।।18।।
श्रेणी चारण ऋद्धी पावें, ऋषि फल चारण ऋद्धि जगावें।।19।।
जल चारण जल पे चल जावें, तन्तू चारण तन्तु पे जावें।।20।।
पुष्प ऋद्धिधर पुष्प विहारी, बीजांकुर शुभ ऋद्धि धारी।।21।।
नभ चारण ऋषि नभ में जावें, अणिमा से लघु रूप बनावें।।22।।
ऋषि महिमा धर महिमा शाली, लघिमा ऋद्धि हल्की वाली।।23।।
गरिमा ऋद्धी से हों भारी, मन वच काय ऋद्धि बल धारी।।24।।
कामरूपणी है कई रूपी, अन्तर्धान से होय अरूपी।।25।।
ईशत्व ऋद्धी ईश बनाए, वश में ऋद्धि वाशित्व कराए।।26।।
ऋद्धि प्राकाम्य है इच्छाकारी, आप्ति ऋद्धि है उच्च प्रकारी।।27।।
अप्रतिघात घात परिहारी, तप्त ऋद्धि मल मूत्र निवारी।।28।।
दीप्त ऋद्धि शुभ दीप्ति बढ़ावे, महा उग्र तप शक्ति जगावे।।29।।
ऋद्धि घोर तप क्लेश निवारी, घोर पराक्रम ऋद्धी धारी।।30।।
परम घोर तप ऋद्धि जगावें, घोर ब्रह्मचर्य ऋद्धी पावें।।31।।
आमर्षौषधि ऋद्धि जगावें, सर्वौषधि ऋद्धी ऋषि पावें।।32।।
आशीर्विष ऋद्धि के धारी, मुनि दृष्टि निर्विष अविकारी।।33।।
क्ष्वेलौषधि ऋद्धी प्रगटावें, विडौषधी ऋद्धि मुनि पावें।।34।।

जल्लौषधि मल्लौषधि धारी, आशीर्विष ऋषिवर अनगारी।।35।।
दृष्टीविष रस ऋद्धि जगावें, क्षीर स्रावि रस ऋद्धी पावें।।36।।
घृत स्रावी मधु स्रावी जानो, अमृत स्रावी ऋषिवर मानो।।37।।
अक्षीण संवास ऋद्धि जगाएँ, अक्षीण महानस ऋद्धि पावें।।38।।
मुनिवर उत्तम संयम धारी, कहे ऋद्धियों के अधिकारी।।39।।
जो भी ऋषियों के गुण गावें, 'विशद' ऋद्धियों का फल पावें।।40।।

दोहा–चालीसा चालीस यह, पढ़े सुने जो पाठ।
जीवन मंगलमय बने, होवें ऊँचे ठाठ।।
दुख दारिद्र को नाशकर, जीवन होय निरोग।
ऋद्धि–सिद्धि सौभाग्य मय, पाए 'विशद' शिव भोग।।

जाप्य : ॐ ह्रीं चतुषष्ठी ऋद्धीभ्यो नमः।

# चौंसठ ऋद्धि आरती

तर्ज– ॐ जय......

ॐ जय चौंसठ ऋद्धि महाँ, स्वामी चौंसठ ऋद्धि महाँ।
आरति करते हम मुनियों की, होवें जहाँ – जहाँ।।
ॐ जय चौंसठ ऋद्धि महाँ
प्रथम आरती बुद्धि ऋद्धिधर, की करने आए।
स्वामी ........

ऋद्धि विक्रिया की करने को, दीप जला लाए।
ॐ जय चौंसठ ऋद्धि महाँ

मुनि चारण ऋद्धी धारी के, चरणों सिर नाते।
स्वामी ........
तप ऋद्धीधारी मुनियों के, अतिशय गुण गाते।।
ॐ जय चौंसठ ऋद्धि महाँ

बल ऋद्धीधारी मुनियों के, बल का पार नहीं।
स्वामी ........
औषधि ऋद्धीधारी मुनिवर, मिलते कहीं-कहीं।।
ॐ जय चौंसठ ऋद्धि महाँ

रस ऋद्धीधारी मुनियों की, महिमा शुभकारी।
स्वामी ........
अक्षीण महानश ऋद्धीधारी,मुनिवर अविकारी।।
ॐ जय चौंसठ ऋद्धि महाँ

ऋद्धीधर मुनियों की आरति, मंगलरूप कही।
स्वामी ........
'विशद' आरती करने वाले, पावें मार्ग सही।
ॐ जय चौंसठ ऋद्धि महाँ

# श्री सिद्ध परमेष्ठी विधान

## माण्डला

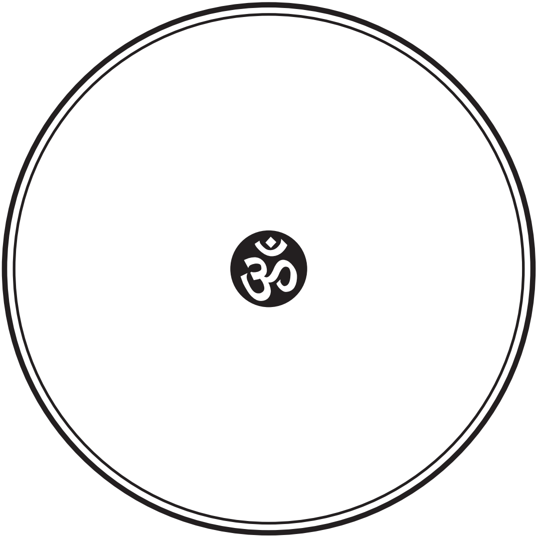

रचयिता : प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

# श्री सिद्ध परमेष्ठी स्तवन

# श्री सिद्ध परमेष्ठी पूजन

## (लघु कर्म दहन विधान पूजा)

स्थापना

**वर्ग सहित दल कमल वसु, सन्धी तत्त्वों वान।**
**स्थापित ह्रीं कार कर, ब्रह्म स्वर वेष्टित मान।।**
**अन्त पत्र की सन्धि में, ॐकार का स्थान।**
**ह्रीं कार युत मंत्र सब, सर्व सिद्धि मय जान।।**
**बड़भागी वे लोक में, ध्यावें जो कर ध्यान।**
**काल रूप गजराज को, हैं जो सिंह समान।।**

ॐ ह्रीं कर्मदहन प्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठीसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं, अत्र मम् सन्निहितौ भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चौबोला छन्द)

**जल से निर्मल हैं गुण मेरे, जिनकी अब याद सताई है।**
**निर्मलता उपमातीत अहः, पाने की बारी आई है।।**
**जो अष्ट कर्म का नाश करें, वे सिद्धों का पद पाते हैं।**
**शिव पथ के राही बन जाते, जो जिन पद शीश झुकाते हैं।।1।।**

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो जन्मजरामृत्यु (ज्ञानावरणीय कर्म) विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

अब शीतलता की चाह नहीं, निज शीतल गुण प्रगटाऐंगे।
हम भाव बनाए निर्मलतम, चन्दन यह श्रेष्ठ चढ़ाऐंगे।।
जो अष्ट कर्म का नाश करें, वे सिद्धों का पद पाते हैं।
शिव पथ के राही बन जाते, जो जिन पद शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो संसारताप (दर्शनावरणीय कर्म)
विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अखण्ड मेरा स्वरूप, खण्डित ना खंजर कर पाए।
पाने अखण्ड वह पद अनुपम, यह चरण चढ़ाने हम आए।।
जो अष्ट कर्म का नाश करें, वे सिद्धों का पद पाते हैं।
शिव पथ के राही बन जाते, जो जिन पद शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अक्षय पद प्राप्तये (मोहनीय कर्म)
विनाशनाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण से सुरभित है चेतन, रागादि विकार ना रह पाएँ।
वे काम रोग का नाश करें, जो पुष्प ले पूजा को आएँ।।
जो अष्ट कर्म का नाश करें, वे सिद्धों का पद पाते हैं।
शिव पथ के राही बन जाते, जो जिन पद शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो कामबाण (अन्तराय कर्म)
विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानामृत रहा सरस व्यंजन, हो तृप्त सदा इससे चेतन।
चेतन में रोग क्षुधादि नहीं, भोजन है इस तन का वेतन।।

**जो अष्ट कर्म का नाश करें, वे सिद्धों का पद पाते हैं।**
**शिव पथ के राही बन जाते, जो जिन पद शीश झुकाते हैं।।5।।**

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो क्षुधारोग (वेदनीय कर्म)
विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**है कोटि सूर्य से दीप्तिमान, चेतन में ना मिथ्यात्व रहे।**
**हम दीप जलाते यह पावन, चेतन से ज्ञान की धार बहे।।**
**जो अष्ट कर्म का नाश करें, वे सिद्धों का पद पाते हैं।**
**शिव पथ के राही बन जाते, जो जिन पद शीश झुकाते हैं।।6।।**

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो मोहान्धकार (नाम कर्म)
विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

**चेतन कर्मों से भिन्न रहा, दोनों रहते न्यारे-न्यारे।**
**ना कर्म नष्ट हो सके पूर्ण, हम धूप जलाकर के हारे।।**
**जो अष्ट कर्म का नाश करें, वे सिद्धों का पद पाते हैं।**
**शिव पथ के राही बन जाते, जो जिन पद शीश झुकाते हैं।।7।।**

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अष्टकर्म (गोत्र कर्म)
विनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**जैसी करनी वैसी भरनी, करनी का फल प्राणी पाते।**
**जो फल से पूजा करते वह, निश्चित ही शिवपुर हैं जाते।।**
**जो अष्ट कर्म का नाश करें, वे सिद्धों का पद पाते हैं।**
**शिव पथ के राही बन जाते, जो जिन पद शीश झुकाते हैं।।8।।**

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो मोक्षफलप्राप्तये (आयु कर्म) विनाशनाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**निज के गुण निज में रहते हैं, फिर भी उनको विसराते हैं।**
**पाते अनर्घ्य पद वे प्राणी, जो जिनपद अर्घ्य चढ़ाते हैं।।**
**जो अष्ट कर्म का नाश करें, वे सिद्धों का पद पाते हैं।**
**शिव पथ के राही बन जाते, जो जिन पद शीश झुकाते हैं।।9।।**

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अनर्घपदप्राप्तये (अष्ट कर्म) विनाशनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## पूर्णार्घ्य (छन्द छप्पय)

**जल से त्रय रुज नशें, त्रास भव मैटे चन्दन।**
**अक्षत अक्षयवान्, पुष्प से काम निकन्दन।।**
**क्षुधा रोग नैवेद्य, दीप मोहान्ध नशावे।**
**धूप जलाए कर्म, मोक्ष फल फल से पावे।।**
**अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, बनाकर जिन का अर्चन।**
**किए भाव से विशद, प्राप्त हो सम्यक् दर्शन।।**

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्ध परमेष्ठिने पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**दोहा- शांतीधारा दे रहे, शांती पाने नाथ!।**
**मुक्ती पथ में आपका, रहे हमेशा साथ।।**

(शान्तये शांतिधारा)

**दोहा- पुष्पांजलि करते विशद, चरण कमल में आज।**
**तव चरणों में आए हम, पाने शिवपद राज।।**

(दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

**नोट : कर्म दहन के आठ अर्घ्य अग्नि में धूपदाने में धूप क्षेपण करते हुए मंत्रोच्चार पूर्वक चढ़ाएं।**

## ज्ञानावरण कर्म (दोहा)

**ज्ञानावरणादिक सभी, मति श्रुत अवधिज्ञान।**
**मनः पर्यय केवल्य को, ढके आवरण जान।।**
**पंचावरण विनाश कर, हो शिवपुर में वास।**
**अर्चा कर जिन सिद्ध की, से हो पूरी आस।।1।।**

ॐ ह्रीं मतिज्ञानावरण कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानावरण कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अवधिज्ञानावरण कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं मन:पर्ययज्ञानावरण कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं केवलज्ञानावरण कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मम ज्ञानावरण कर्म निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## दर्शनावरण कर्म

**चक्षु अचक्षु अवधि तथा, केवल दर्शन चार।**
**कर्म दर्शनावरण है, निद्रा पंच प्रकार।।**

**कर्म दर्शनावरण नश, हो शिवपुर में वास।**
**अर्चा कर जिन सिद्ध की, से हो पूरी आस।।2।।**

ॐ ह्रीं चक्षुदर्शनावरण कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अचक्षुदर्शनावरण कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अवधिदर्शनावरण कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं केवलदर्शनावरण कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं निद्रा कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं प्रचला कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं प्रचला प्रचला कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं स्त्यानगृद्धि कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मम दर्शनावरण कर्म निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

# मोहनीय कर्म

**भेद मोहनीय कर्म के, बतलाए अठबीस।**
**दर्शन मोह के तीन हैं, चारित के पच्चीस।।**
**सोलह भेद कषाय के, नो कषाय सब नाश।**
**अर्चा कर जिन सिद्ध की, से हो पूरी आस।।3।।**

ॐ ह्रीं त्रिविध दर्शन मोहनीय कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं सोलह विधि चारित्र मोहनीय कषाय रहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं नव प्रकार अकषाय मोहनीय कर्म रहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मम मोहनीय कर्म निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## अन्तराय कर्म

**दान लाभ भोगोपभोग, और वीर्य पहिचान।**
**भेद कहे अन्तराय के, करें गुणों की हान।।**
**अन्तराय को नाशकर, हो शिवपुर में वास।**
**अर्चा कर जिन सिद्ध की, से हो पूरी आस।।4।।**

ॐ ह्रीं दानान्तराय कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं लाभान्तराय कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं भोगान्तराय कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं उपभोगान्तराय कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं वीर्यान्तराय कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मम अन्तराय कर्म निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## वेदनीय कर्म (शम्भू छन्द)

**साता असाता कर्म अघाती, वेदनीय के हैं दो भेद।**
**होय कभी उत्साह जीव को, कभी प्राप्त होता है खेद।।**
**वेदनीय के नशते अव्यावाध, सुगुण का होय प्रकाश।**
**अर्चा कर जिन सिद्ध की, से हो पूरी आस।।5।।**

ॐ ह्रीं साता वेदनीय कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं असाता वेदनीय कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मम वेदनीय कर्म निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## आयु कर्म

**आयुकर्म के भेद चार हैं, नरक-पशु-नर-देव विशेष।**
**रोके निश्चित काल जीव को, निज आयू पर्यन्त अशेष।।**
**आयु कर्म का नाश किए जिन, अवगाहन गुण में हो वास।**
**अर्चा कर जिन सिद्ध की, से हो पूरी आस।।6।।**

ॐ ह्रीं मनुष्य आयु कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं तिर्यंच आयु कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री नरक आयु कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं देव आयु कर्म कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मम आयु कर्म निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

## नाम कर्म

**रही प्रकृतियाँ नाम कर्म की, जैन धर्म आगम अनुसार।**
**पिण्ड रूप अठ्टाइस हैं चौदह, अपिण्ड प्रकृति के रहे प्रकार।।**
**नाम कर्म का नाश किए फिर, गुण सूक्ष्मत्व में होवे वास।**
**अर्चा कर जिन सिद्ध की, से हो पूरी आस।।7।।**

ॐ ह्रीं नाम कर्म अष्टविंशति अपिण्ड प्रकृति रहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं नाम कर्म नामा चतुर्दश पिण्ड प्रकृति मध्य पंचषष्ठी प्रकृति रहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मम नाम कर्म निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

# गोत्र कर्म

**उच्च-नीच दो गोत्र कर्म के, भेद बताए हैं तीर्थेश।**
**इनका नाश करे जो प्राणी, अगुरुलघु गुण पाए विशेष।।**
**शिवपथ का राही बन जाए, नही रहे कर्मों का दास।**
**अर्चा कर जिन सिद्ध की, से हो पूरी आस।।8।।**

ॐ ह्रीं उच्च गोत्र कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं नीच गोत्र कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मम गोत्र कर्म निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

# पूर्णार्घ

**ज्ञान दर्शनावरण मोहनीय, अन्तराय है कर्म विशेष।**
**आयु नाम अरु गोत्र वेदनीय, कर्म नाशते सिद्ध अशेष।।**
**अष्ट कर्म के नशते प्राणी, करते है शिवपुर में वास।**
**सिद्ध प्रभु की अर्चा करके, होवे मन की पूरी आस।।9।।**

ॐ ह्रीं घातिकर्म कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं अघातिकर्म कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मम अष्ट कर्म दहनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जाप्य : ॐ ह्रीं सर्व कर्म रहिताय श्री सिद्धाय नमः।**

# जयमाला

**दोहा- कर्म दहन पूजा करें, करने कर्म विनाश।**
**जयमाला गाते विशद, हो शिवपुर में वास।।**

(शम्भू छन्द)

**गुण गाने को सिद्ध प्रभू के, अर्पित है मेरा जीवन।**
**शुद्ध बुद्ध चैतन्य स्वरूपी, सिद्धों के पद में वन्दन।।**
**काल अनादी में कर्मों ने, हमको बहुत सताया है।**
**चतुर्गती में भ्रमण किया बहु, पार नहीं मिल पाया है।।1।।**
**ज्ञानदर्शनावरण वेदनीय, अन्तराय की तुम जानो।**
**त्रिंशत कोड़ा-कोड़ा सागर, स्थिति भाई पहिचानो।।**
**नीच गोत्र की बीस-बीस है, मोहनीय की सत्तर जान।**
**तैंतिस सागर आयु कर्म की, जानो यह उत्कृष्ट प्रधान।।2।।**
**वेदनीय बारह मुहूर्त्त की, नाम गोत्र की जानो आठ।**
**अन्तर्मुहूर्त्त शेष कर्मों की, स्थिति का आता है पाठ।।**

मध्यम के हैं भेद अनेकों, जिसका नहीं है कोई प्रमाण।
बार-बार पाकर दुख भोगे, नहीं हुआ आतम कल्याण।।3।।
रत्नत्रय को पाकर प्रभु ने, तीन योग से करके ध्यान।
पूर्ण नाशकर मोहनीय को, सुख अनन्त पाए भगवान।।
ज्ञानावरणी कर्म नाशकर, प्रकट किया है केवलज्ञान।
कर्म दर्शनावरणी नाशा, केवल दर्शन जगा महान।।4।।
अन्तराय का अन्त किए जिन, वीर्यानन्त प्रकाश किया।
अनन्त चतुष्टय पाकर प्रभु ने, निज आतम में वास किया।।
इन्द्रों द्वारा रचना होती, समवशरण की अपरम्पार।
शीश झुकाकर वन्दन करते, प्राणी चरणों बारम्बार।।5।।
आयु कर्म के साथ नाम अरु, गोत्र वेदनीय करते नाश।
नित्य निरंजन शुभ अविनाशी, करते हैं चेतन में वास।।
अगुरुलघु सूक्ष्मत्व प्राप्त कर, पाते हैं गुण अव्याबाध।
अवगाहन गुण में अवगाहन, करके पाते हैं आह्लाद।।6।।
अन्तिम देह त्याग कर अपनी, क्षण में बन जाते हैं सिद्ध।
लोक शिखर पर प्रभू विराजे, अशरीरी हो जगत प्रसिद्ध।।
भाव बनाकर आये हैं हम, तव पद को पाने हे नाथ!।
'विशद' भाव से वन्दन करते, चरणों झुका रहे हम माथ।।7।।

(छन्दः घत्तानन्द)

**जय-जय अविकारी, आनन्दकारी, मोक्ष महल के अधिकारी।**
**जय-जय मंगलकारी, हे गुणधारी! भव बाधा पीड़ा हारी।।**

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकसम्यक्त्व-अनन्तज्ञान-अनन्तदर्शन-अनन्तवीर्यअगुरु-लघुत्व-अवगाहनत्व-सूक्ष्मत्व-निराबाधत्वगुणसम्पन्न-सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अष्ट कर्म को नाशकर, पाया शिवपुर वास।**
**अर्चा करके आपकी, होवे पूरी आस।।**

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

---

## विशद प्रायश्चित पाठ तर्ज - दिन रात मेरे.....

**अन्जान जानकर के, अपराध जो किए हैं।**
**करके प्रमाद जीवों, का ध्यान न दिए हैं।।1।।**
**समरम्भ समारम्भ, आरम्भ से जो सारे।**
**त्रय योग से हुए जो, वे दोष सब हमारे।।2।।**
**कृत कारितानुमत से, चारों कषाएँ करके।**
**मिथ्याचरण किए हैं, कुत्सित जो भेष धरके।।3।।**
**आसन शयन गमन में, कोई जीव जो सताए।**
**आसक्त इन्द्रियों में, होके अभक्ष्य खाये।।4।।**
**क्षण-क्षण में हमसे भारी, अपराध हो रहे हैं।**
**दुष्कर्म करके पापों, का बोझ ढो रहे हैं।।5।।**
**श्री देव शास्त्र गुरु पद, प्रायश्चित विशद पाएँ।**
**आराधना प्रभू की, कर मोक्ष शीघ्र जाएँ।।6।।**

# 24 तीर्थंकर विधान (लघु)

## माण्डला

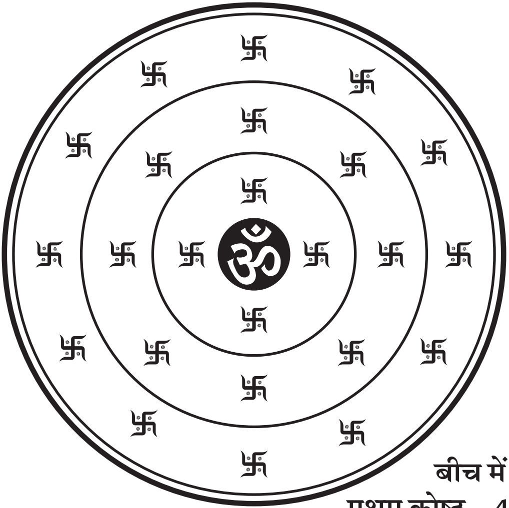


बीच में – ॐ

प्रथम कोष्ठ – 4 अर्घ्य

द्वितीय कोष्ठ – 8 अर्घ्य

तृतीय कोष्ठ – 12 अर्घ्य

कुल – 24 अर्घ्य

रचयिता :

प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

# चौबीस तीर्थंकर स्तवन

तर्ज – नित देव दर्शन.....

वृषभेष दर्शन आपका, करने यहाँ पर आए हैं।
अजितेश के दर्शन से उर में, हर्ष मेरे छाए हैं।।
तव दर्श करके भाग्य जागे, विशद भक्ती उर जगी।
चौबीस जिन की अर्चना कर, लगन चरणों में लगी।।1।।
सम्भव जिनाभिनन्दन पद, पूजते हैं भाव से।
श्री सुमति पद्म सुपार्श्व जिनवर, पूजते हैं चाव से।।
तव दर्श करके भाग्य जागे, विशद भक्ती उर जगी।
चौबीस जिन की अर्चना कर, लगन चरणों में लगी।।2।।
श्री चन्द्रप्रभु जिनपुष्प शीतल, श्रेय जिन गुण गा रहे।
जिन वासुपूज्य विमल अनन्त, धर्म जिन को ध्या रहे।।
तव दर्श करके भाग्य जागे, विशद भक्ती उर जगी।
चौबीस जिन की अर्चना कर, लगन चरणों में लगी।।3।।
श्री शांति कुंथु अरह जिनेश्वर, मल्लि मुनिसुव्रत सभी।
नमि नेमि पारस वीर जिनवर, पूजते मिलकर अभी।।
तव दर्श करके भाग्य जागे, विशद भक्ती उर जगी।
चौबीस जिन की अर्चना कर, लगन चरणों में लगी।।4।।

(पुष्पांञ्जलिं क्षिपेत्)

# चौबीसी विधान

स्थापना

**तीर्थंकर चौबीस हैं, जग में पूज्य महान।**
**जिनकी अर्चा को यहाँ, करते हम आह्वान।।**

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चौपाई)

**यमुना का शुभ नीर चढ़ाएँ, रोग जरादिक पूर्ण नशाएँ।**
**चौबिस जिन पद पूज रचाएँ, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ।।1।।**

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**चन्दन केसर सहित चढ़ाएँ, भवाताप से मुक्ती पाएँ।**
**चौबिस जिन पद पूज रचाएँ, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ।।2।।**

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

**साबुत अक्षत धवल चढ़ाएँ, अक्षय पदवी को हम पाएँ।**
**चौबिस जिन पद पूज रचाएँ, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ।।3।।**

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

**सुरभित पुष्प चढ़ा हर्षाएँ, काम रोग अपना विनशाएँ।**
**चौबिस जिन पद पूज रचाएँ, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ।।4।।**

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**सरस शुद्ध नैवेद्य चढ़ाएँ, क्षुधा रोग से मुक्ती पाएँ।**
**चौबिस जिन पद पूज रचाएँ, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ।।5।।**

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**घृत के पावन दीप जलाएँ, आरति करके मोह नशाएँ।**
**चौबिस जिन पद पूज रचाएँ, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ।।6।।**
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
**अग्नी में यह धूप जलाएँ, अष्ट कर्म से मुक्ती पाएँ।**
**चौबिस जिन पद पूज रचाएँ, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ।।7।।**
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
**फल ताजे हम यहाँ चढ़ाएँ, मोक्ष महा पदवी हम पाएँ।**
**चौबिस जिन पद पूज रचाएँ, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ।।8।।**
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः फलं निर्वपामीति स्वाहा।
**अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, पद अनर्घ्य पाके शिव पाएँ।**
**चौबिस जिन पद पूज रचाएँ, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ।।9।।**
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दोहा- शांती धारा दे रहे, यमुना का ले नीर।**
**भाते हैं यह भावना, पाएँ भव का तीर।।**
शान्तये शांतिधारा

**दोहा- पुष्पांजलि कर पूजते, हैं चौबिस भगवान।**
**अर्चा कर हमको मिले, शिव पद का सोपान।।**
पुष्पांजलिं क्षिपेत्

## अर्घ्यावली

**दोहा- तीर्थंकर पद पाएँ है, चौबीसों जिनराज।**
**पुष्पांजलि कर पूजते, भाव सहित हम आज।।**
(अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

# चौबीसी के अर्घ्य

चाल छन्द

**हैं पावन वृष के धारी, श्री ऋषभ देव अनगारी।**
**हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।1।।**

ॐ ह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**हैं अजित स्वयं के जेता, कर्मों के विशद विजेता।**
**हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।2।।**

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**श्री संभव जिन अनगारी, इस जग में मंगलकारी।**
**हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।3।।**

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**श्री अभिनंदन जिन स्वामी, हैं त्रिभुवन पति अभिरामी।**
**हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।4।।**

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**श्री सुमति सुमति के दाता, हैं जग के भाग्य विधाता।**
**हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।5।।**

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जिन पद्म पद्म सम गाए, प्रभु पद्म चिन्ह शुभ पाए।**
**हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।6।।**

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल छन्द)

**जिनवर सुपार्श्व कहलाए, जो मोक्ष मार्ग दर्शाए।**
**हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।7।।**

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**श्री चन्द्रप्रभ कहलाए, जो धवल कांति फैलाए।**
**हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।8।।**

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जिन पुष्पदन्त अभिरामी, जो हैं त्रिभुवन के स्वामी।**
**हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।9।।**

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शीतल जिन शीतल कारी, हैं अतिशय महिमा धारी।**
**हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।10।।**

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जो श्रेय प्रदाता गाए, जिनवर श्रेयांस कहाए।**
**हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।11।।**

ॐ ह्रीं श्री श्रेंयासनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जिन वासुपूज्य जग नामी, इस जग में अन्तर्यामी।**
**हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।12।।**

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जिन विमल गुणों को पाए, श्री विमलनाथ कहलाए।**
**हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।13।।**

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जिनवर अनन्त गुण धारी, जिनकी महिमा है भारी।**
**हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।14।।**
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
**हैं धर्म ध्वज के धारी, श्री धर्मनाथ अविकारी।**
**हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।15।।**
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
**जो हैं अति शांति प्रदायी, श्री शांतिनाथ शिवदायी।**
**हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।16।।**
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
**हैं कुन्थ्वादि जो प्राणी, उनके भी हैं कल्याणी।**
**हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।17।।**
ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
**श्री अर जिनराज निराले, जग के दुख हरने वाले।**
**हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।18।।**
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
**हैं मल्लिनाथ जगनामी, सब मल्लों के हैं स्वामी।**
**हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।19।।**
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
**श्री मुनिसुव्रत व्रत धारी, शिवपथ गामी अनगारी।**
**हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।20।।**
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**नमिनाथ की महिमा गाएँ, शिव पथ की राह बनाएँ।**
**हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।21।।**
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
**श्री नेमिनाथ अविकारी, हैं पावन संयम धारी।**
**हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।22।।**
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
**श्री पार्श्वनाथ कहलाए, उपसर्गों पे जय पाए।**
**हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।23।।**
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
**श्री महावीर जिन गाए, जो विजय स्वयं पर पाए।**
**हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।24।।**
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
**चौबिस तीर्थंकर जानो, जो जगत पूज्य हैं मानो।**
**हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।25।।**
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः।**

## जयमाला

**दोहा– तीर्थंकर चौबीस हैं, महिमामयी त्रिकाल।**
**पूज रहे जिन पद यहाँ, गाते हैं जयमाल।।**

(ज्ञानोदय छन्द)

**तीन लोक के स्वामी जिनवर, केवलज्ञान के धारी हैं।**
**कर्मघातिया के हैं नाशी, पूर्ण रूप अविकारी हैं।।**

पूर्व भवों के पुण्योदय से, पावन नर भव पाते हैं।
उत्तम कुलवय देह सुसंगति, धर्म भावना भाते हैं।। 1।।
देव शास्त्र गुरु के दर्शन भी, पुण्य योग से मिलते हैं।
सम्यक् दर्शन ज्ञान आचरण, तप के उपवन खिलते हैं।।
केवल ज्ञान के धारी हों या, तीर्थंकर का समवशरण।
तीर्थंकर प्रकृति पाते हैं, भव्य जीव करते दर्शन।। 2।।
सोलहकारण भव्य भावना, भव्य जीव जो भाते हैं।
पावन तीर्थंकर प्रकृति शुभ, बन्ध तभी कर पाते हैं।।
नरक गती का बन्ध ना हो तो, स्वर्गों में प्राणी जावें।
तीर्थंकर प्रकृति के फल से, भव्य जीव भव सुख पावें।। 3।।
गर्भ कल्याणक में सुर आके, दिव्य रत्न बर्साते हैं।
जन्म कल्याणक के अवसर पर, मेरु पे न्हवन कराते हैं।।
दीक्षा ज्ञान कल्याण मनाकर, पूजा पाठ रचाते हैं।
सहसनाम के द्वारा प्रभु पद, जय जयकार लगाते हैं।। 4।।
एक हजार आठ शुभ प्रभु के, सार्थक नाम बताए हैं।
जिनकी अर्चा करके प्राणी, निज सौभाग्य जगाए हैं।
मंत्र कहा प्रत्येक नाम शुभ, उनका करते हैं जो जाप।
विशद भाव से ध्याने वालों, के कट जाते सारे पाप।। 5।।

दोहा- जिनकी पूजा कर मिले, जग में शांति अपार।
अतः पूजते जिन चरण, नत हो बारम्बार।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- अर्चा करते हम यहाँ, 'विशद' भाव के साथ।
मुक्ती पद हम को मिले, झुका रहे पद माथ।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्

# चतुर्विंशति

(अनुष्टुप छन्द)

ऋषभाय नमस्तुभ्य, अजिताजित् कर्मणाः।
नमो संभव नाथाय, नमोऽभिनन्दनस्-तथा।।1।।
नमो सुमति देवाय, पद्म प्रभ जिनेशिनः।
श्री सुपार्श्व जिननाथ, श्री चन्द्राय नमो नमः।।2।।
पुष्पदन्त जिनेन्द्राय, शीतल शीतीभूत नः।
श्रेयस्करो जिनो श्रेयः, वासुपूज्य जिनेशिनः।।3।।
कर्म मुक्तो विमलाय, गुणानन्त गुणार्णवः।
धर्मनाथ नमस्तुभ्य, शांति जिन शांती करः।।4।।
कृत्वा कुन्थु जिनो रक्षां, मोहान्धः अघनाशकः।
कर्म मल्लजितो मल्लिं, सुव्रतो मुनि सुव्रताः।।5।।
मुक्ति रक्तः नमिनाथः नेमिनाथ सिद्धि प्रियः।
उपसर्ग जयः पार्श्वः, वीरः युगे च शासकः।।6।।
चतुर्विंशति तीर्थेशान्, प्राप्त पद तीर्थकरः।
'विशद' ज्ञान लाभाय, भक्त्या तुभ्यं नमो नमः।।7।।

आराधयामि तव पुण्य गुणान् स्मरामि।
स्वमेव नाथ विशदं हृदि धारयामि।।
एवं तदीय चरणाब्ज मुपासमानात्।
मुंचंति मां न कथमद्य स्वकर्म बन्धाः।।8।।

# 24 तीर्थंकर विधान (संस्कृत)

स्थापना (अनुष्टुप छन्द)

**कल्याणातिशयोपतं, प्रातिहार्य समन्वितं।**
**सुरेन्द्रवृन्द वन्द्यांघ्रं, जिनं नौमि जगद्गुरुम्।।**

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यो नम! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(उपजाति छन्द)

**श्रीमज्जिनेन्द्रामल कीर्ति गौरै, मंदाकिनी निर्झर वारिपूरैः।**
**अंभोज किंजल्क रजः पिशंगैर्,-यजे चतुर्विंशति तीर्थनाथान्।।1।।**

ॐ ह्रीं वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**तुषार शीतांशु मरीचि शुभ्र, श्रीचंदनैः कुंकुम युक्तमिश्रैः।**
**संतोष पीयूष शरीरभाजो, यजे चतुर्विंशति तीर्थनाथान्।।2।।**

ॐ ह्रीं वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

**अक्षुण्य सौख्यामल बीजरूपैः, शाल्यक्षतै रिंदु-कलावलक्षैः।**
**अनन्यसाधारण कीर्ति कांतान्, यजे चतुर्विंशति तीर्थनाथान्।।3।।**

ॐ ह्रीं वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

**जाती जपा पाटलिभिर्विराजी, मंदार माला बकुलादि पुष्पैः।**
**श्रेयःश्रियो मंगल हारभूतान्, यजे चतुर्विंशति तीर्थनाथान्।।4।।**

ॐ ह्रीं वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**प्राज्याज्यसिद्धामृत पिंडभक्ष्यैः, शाकै-रनेकैः सुरभि प्रपूतैः।**
**अनंतसौख्यामृतपिन तृप्तान्, यजे चतुर्विंशति तीर्थनाथान्।।5।।**

ॐ ह्रीं वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दृष्टिप्रियैरुज्वलरत्नदीपैः, सुररत्नसिद्धैर्मणिभाजनस्थैः।**
**स्वकीय-दिव्यांग-मरीचिमग्नान्, यजे चतुर्विंशति तीर्थनाथान्।।6।।**

ॐ ह्रीं वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

**कालाहि देहाकृति खांतराले, व्यापत्-सुधूपैः सुरभी कुताशैः।**
**इष्टार्थसिद्धये शिवताति भक्त्या, यजे चतुर्विंशति तीर्थनाथान्।।7।।**

ॐ ह्रीं वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**जंबीर जंबूवर बीज पूर-, द्राक्षाम्र पूगीफल नारिकेलैः।**
**सुरेंद्र चूडांशुविलग्न पादान्, यजे चतुर्विंशति तीर्थनाथान्।।8।।**

ॐ ह्रीं वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**जलादि सद्द्रव्य कृतै-रनर्घ्यैर्-, बलाहकैर्-मंगलमंगलार्घ्यैः।**
**रजो रहस्यं रहसः सुधान्यैः, यजे चतुर्विंशति तीर्थनाथान्।।9।।**

ॐ ह्रीं वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शालिनी छन्द)

**जंबूदीपे भरतक्षेत्रमुख्य-श्रीतीर्थेशामंघ्रिपीठोपकंठे।**
**देवेंद्रार्च्यश्रीपदां संतनोभि, संसारार्तेः शांतये शांतिधारा।।**

(इति शांतिधारा...)

# अर्घ्यावली

**दोहा – चतुर्विंशति तीर्थेश, स्तुति कृत्त्वा सु भक्तितः।**
**विशद ज्ञान योगेन, भक्तिं अर्हत् गुणार्णवम्।।**

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

# 24 तीर्थंकर अर्घ्यावली

(अनुष्टुप छन्द)

**श्रीमंतं मुक्तिं भर्त्तारं, वृषभं वृष नायकम्।**
**धर्म तीर्थंकर ज्येष्ठं, वन्दे नन्त गुणार्णवम्।।1।।**

ॐ ह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**योऽजितो मोह कामाक्षाराति जालैः परिषहैः।**
**एकाकी मिलतै सर्वैः रजितं तं स्तुवे मुदा।।2।।**

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**सम्भवं भव हंतारं, त्रिजगद् भव्य देहिनाम्।**
**कर्त्तारं विश्व सौख्याना–मीडेतद गतयेतिशम्।।3।।**

ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**विश्वविज्ञं विदिर्वेदं, वीरं विराग वैभवम्।**
**संग मुक्तं यजे नित्यं, नौमि जिनाभिनन्दनम्।।4।।**

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**नमामि सुमतिं देवं देवं सुमति दायकम्।**
**भव्यानां सुमति मूर्ध्ना, स्वच्छ सन्मति सिद्धये।।5।।**
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**पद्मप्रभ-महं नौमि, द्विधा पद्माद्यलंकरम्।**
**तद् पद्माप्त्यै सुजन्तूनां, पद्मादं पद्म कांतिकम्।।6।।**
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**नमः सुपार्श्व नाथाय, सुधियां पार्श्व दायिने।**
**अनन्त शर्मणेऽनन्त, गुणायातीत कर्मणे।।7।।**
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**भव ज्वलन संभ्रान्त सत्व शांति सुधार्णवः।**
**नमश्चन्द्रप्रभः पुष्याद्, ज्ञान रत्नाकर श्रियम्।।8।।**
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**सुविधि विधि हन्तारं, भव्यानां विधि देशनम्।**
**स्वर्ग मुक्ति सुखाधारत्यै-मुदेविधिहानये।।9।।**
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**शीतलं भव्य जीवानां, पापाताप विनाशिनम्।**
**दिव्यध्वनि सुधापूरै, नौम्यद्यताप विच्छिदे।।10।।**
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**श्रेयः श्रेयेषु नास्त्यन्यः, श्रेयसः श्रेयसे बुधैः।**
**इति श्रेयोऽर्थिभि श्रेयः, श्रेयांस श्रेयसेस्तु नः।।11।।**
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**वासो रिन्द्रियस्य पूज्योयं, वसु पूज्यस्य वा सुतः।**
**वासुपूज्यः सतां पूज्यः स ज्ञानेन पुनातु नः।।12।।**

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**कल्याणातिशयोपेतं, प्रातिहार्य समन्वितं।**
**सुरेन्द्रवृन्द वन्द्याङ्घ्रिं, विमलनाथ नमाम्यहं।।13।।**

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**अनन्तोनन्त दोषाणां, हन्ताऽहन्त गुणाकरः।**
**हन्तत्व ध्वन्ति संतान-मन्तातीतं जिनः सानः।।14।।**

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**सत् संयम पयः पूर, पवित्रित जगत्-त्रतय्।**
**धर्मनाथ नमस्यामि, विश्व विघ्नौघ शान्तये।।15।।**

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**नमः श्री शांतिनाथाय, जगच्छांति विधापिते।**
**कृत्स्न कर्मोघ शान्ताय, शान्तये सर्व कर्मणाम्।।16।।**

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**यद् दिव्यं ध्वनिना-त्रासीद्, रक्षाकुन्थ्वादि देहिनाम्।**
**कुन्थ्वादौ सदयं कुन्थुं, वन्दे कुन्थु कृपायतम्।।17।।**

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**यद्वचः शस्त्रघातेन्, दुर्धराः कर्म शत्रवः।**
**नश्यन्ति स्वेन्द्रियैः सार्धं, सोऽरोमेस्त्वरिहानये।।18।।**

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**मोह मल्ल ममल्लं यो, त्यजेष्टानिष्ट कारिणम्।**
**करीन्द्र वा हरिः सोऽयं, मल्लिः शल्य हरोस्तु नः।।19।।**

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**ज्ञानलक्ष्मी धनाश्लेश, प्रभवानन्द नंदितम्।**
**निष्ठितार्थ-मजं नौमि, मुनिसुव्रत-मव्ययम्।।20।।**

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**नमीशं नमितारातिं, त्रिजगन्नाथ वंदितम्।**
**हत कर्मारि सन्तानं, तद्गुणाय स्तवीम्यहम्।।21।।**

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**नमः श्री नेमिनाथाय, विश्व विघ्नोपशान्तये।**
**त्रिजगत् स्वामिने मूर्ध्ना, ह्यन्त महिमात्मने।।22।।**

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**जित्त्वा महोपसर्गान्यो, ज्योतिर्देव कृतान् भुवि।**
**स्ववीर्य केवल-व्यक्तं, चक्रे चेडेत-मद्भुतम्।।23।।**

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**वीरं कर्म जये वीरं, सन्मतिं धर्म देशने।**
**उपशार्गाग्निं सम्पाते, महावीर नमामि च।।24।।**

ॐ ह्रीं श्री महावीराय जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**चतुर्विंशति तीर्थेशः, पूर्णार्घ्यं प्रापितास्तरां।**
**शांति श्रियं च कल्याणं, कुर्वन्तु जिन भाषिनां।।**

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

# जयमाला

चतुर्विंशति तीर्थेशां, त्रियोगेन समर्चनात्।
पाठात्स्वस्त्ययनस्याऽपि, मनः पूर्वं प्रसादये ।।

(अनु)

आदिनाथोऽस्तु नः स्वस्ति, स्वस्ति स्या-दजितेश्वरः।
शंभवो भवतु स्वस्ति, भूयात् स्वस्त्-यभिनंदनः ।।1 ।।
अस्तु वः सुमति स्वस्ति, पद्मभः स्वस्ति जायतां।
सुपार्श्वः स्वस्ति भक्त्वां, स्वस्ति स्याच्चंद्रलांछनः ।।2 ।।
सतां स्वस्त्यस्तु सुविधिर्-भवतु स्वस्ति शीतलः।
श्रेयान् संपद्यतां स्वस्ति, स्वस्त्यस्तु वसुपुज्यजः ।।3 ।।
राज्ञोऽस्तु विमलः स्वस्ति, स्वस्ति भूयादनंतजित्।
भूयाद्धर्मजिनः स्वस्ति, शांतेशः स्वस्ति जायतां ।।4 ।।
संघस्य कुंथुः स्वस्त्यस्तु, भवतु स्वस्त्यरप्रभुः।
स्वस्ति मल्लिजिनेन्द्रोऽस्तु, स्वस्त्यस्त्यु मुनिसुव्रतः ।।5 ।।
जगत्यस्तु नमिः स्वस्ति, स्वस्ति स्यान्नेमिनायकः।
स्वस्ति पार्श्वजिनो भूयात्, स्वस्ति सन्मति-रस्तु मे ।।6 ।।
अस्मिन्नमं स्वस्त्ययनमेक-भक्तिभराद्दधे।
स्वस्तिमंतः स्वसं शश्वत्, संतु स्वस्त्ययनं जिनाः ।।7 ।।

**चतुर्विंशति तीर्थेशां, स्मरामि च पुनः पुनः।**
**प्राप्नुयात सर्वतोभद्र, 'विशद' लाभं पदे-पदे।।**

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**परमानन्दसम्पन्नान्, विशद गुण शालिनां।**
**ऋषभादि श्री वीरान्तान्, स्तुति कृत्वा स भक्तितः।।**

इत्याशीर्वादः

# चौबीस जिन की आरती

(तर्ज :- मांई री मांई.....)

**चौबीस जिन की आरती करने, दीप जलाकर लाए।**
**विशद आरती करने के शुभ, हमने भाग्य जगाए।।**
**जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन्।**
**विशद आरती.....।।टेक।।**

**ऋषभ नाथ जी धर्म प्रवर्तक, अजित कर्म के जेता।**
**सम्भव जिन अभिनन्दन स्वामी, अतिशय कर्म विजेता।।**
**सुमति नाथ जिनवर के चरणों, मति सुमति हो जाए।**
**विशद आरती....।।1।।**

पद्म प्रभु जी पद्म हरे हैं, जिन सुपार्श्व जी भाई।
चन्द्र प्रभु अरु पुष्पदन्त की, धवल कांति सुखदाई।।
शीतल जिन के चरण शरण में, शीतलता मिल जाए।
विशद आरती....।।2।।

श्रेयनाथ जिन श्रेय प्रदायक, वासुपूज्य जिन स्वामी।
विमलानन्त प्रभु अविकारी, जग में अन्तर्यामी।।
धर्मनाथ जी धर्म प्रदाता, इस जग में कहलाए।
विशद आरती....।।3।।

शांति कुन्थु अरु अरह नाथ जी, तीन-तीन पद पाए।
चक्र काम कुमार तीर्थंकर, बनकर मोक्ष सिधाए।
मल्लिनाथ जी मोह मल्ल को, क्षण में मार भगाए।
विशद आरती....।।4।।

मुनिसुव्रत जी व्रत को धारे, नमि धर्म के धारी।
नेमिनाथ जी करुणा धारे, पार्श्वनाथ अविकारी।।
वर्धमान सन्मति वीर अति, महावीर कहलाए।
विशद आरती....।।5।।

# आचार्य श्री विशद सागर जी महाराज पूजन

स्थापना

**दोहा– विशद गुणों के कोष हैं, विशद सिन्धु है नाम।**
**विशद करें आह्वान हम, करके चरण प्रणाम।।**

ॐ ह्रूं प. पू. आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

**हम हैं मन वच तन के रोगी, गुरुवर स्वस्थ आत्म के भोगी।**
**जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।1।।**

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**राग द्वेष मद मोह जलाए, दुख संसार के हमने पाए।**
**जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।2।।**

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

**वैभाविक परिणति में आए, शुद्धातम को हम विसराए।**
**जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।3।।**

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

**रहा काम का फूल विषैला, करते हम आतम को मैला।**
**जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।4।।**

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**भोजन की नित चाह बढ़ाए, क्षुधा रोग से ना बच पाए।**
**जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।5।।**
ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
**आँख मीचते होय अंधेरा, जब जागे तब होय सबेरा।**
**जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।6।।**
ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
**धूल धूप की हमें सताए, कर्म पूर्ण मेरे क्षय जायें।**
**जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।7।।**
ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
**फल की आशा सदा बढ़ाई, लेकिन पूर्ण नहीं हो पाई।**
**जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।8।।**
ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! फलं निर्वपामीति स्वाहा।
**विशद अर्घ्य हम यहाँ चढ़ाएँ, पद अनर्घ्य शिवपुर जायें।**
**जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।9।।**
ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दोहा – नीर भराया कूप से, देते शांतीधार।**
**अष्टकर्म को नाश कर, मैट सकें संसार।।**

(शांतीधारा)

**दोहा – पुष्पांजलि को हम यहाँ, लाये सुरभित फूल।**
**मुक्ती पाने के लिए, साधन हों अनुकूल।।**

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

## जयमाला

दोहा – लघुनन्दन तीर्थेश के, जिनवाणी के लाल।
विशद सिन्धु गुरुदेव की, गाते हैं जयमाल।।

(छन्द–तामरस)

जय जय जय गुरुदेव नमस्ते, पूजें चरण सदैव नमस्ते।
विराग सिन्धु के शिष्य नमस्ते, उज्ज्वल भाग्य भविष्य नमस्ते।।
अर्हत् सम स्वरूप नमस्ते, विशद सिन्धु जग भूप नमस्ते।
अतिशय महिमा वान नमस्ते, करते जग कल्याण नमस्ते।।
शब्दों में लालित्य नमस्ते, हितकारी साहित्य नमस्ते।
वाणी जगत हिताय नमस्ते, दर्शन दर्श प्रदाय नमस्ते।।

सोरठा – पत्थर में भगवान, दिखते भक्ती भाव से।
करते हम गुणगान, गुरुवर जो साक्षात् हैं।।

सारा जग यह जिनके चरणों, नत हो शीश झुकाता है।
भाव सहित जिनकी अर्चा कर, अतिशय महिमा गाता है।।
इतनी शक्ति कहाँ हम गुरु को, हृदय में शुभ आह्वान करें।
अल्प बुद्धि से उनके चरणों, का हम भी गुणगान करें।।
है श्मशान सरीखा हे गुरु !, मन मंदिर का देवालय।
आन पधारो हृदय हमारे, तो बन जाये सिद्धालय।।

दोहा – हम दोषों के कोष हैं, हुए विशद मद होश।
दर्शन करके आपका, मन में जागा होश।।

विशद सिन्धु, हे विशद सिन्धु, हम करते हैं चरणों वंदन।
भक्ति सुमन करते हैं अर्पित, भाव सहित करते अर्चन।।
जिनकी चर्चा अर्चा करके, खो जाए मन का क्रन्दन।
ऐसे गुरु के चरण कमल को, करते हैं हम अभिनन्दन।।
करुणामूर्ति परम विरागी, यह जग करता अभिनन्दन।
शिव पद के राही तव चरणों, मेरा बारम्बार नमन।।

दोहा – ज्ञानामृत में भाव से, श्रद्धा का रस घोल।
तीनों योग सम्हाल के, गुरु की जय जय बोल।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय! जयमाला
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – महिमा जिन की हैं अगम, पायें कैसे पार।
करें आरती भाव से, वंदन बारंबार।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

संघस्थ – ब्र. आरती दीदी

# आचार्य श्री का अर्घ

गुरुवर की हम महिमा गाते हैं, अपने हम सौभाग्य जगाते हैं।
चरणों में आते हैं अर्घ चढ़ाते हैं, करते हैं गुरु पद नमन।।
क्योंकि बड़े पुण्य से अवसर आया है,
गुरुवर का शुभ आशिष पाया है।।

ॐ ह्रूँ प.पू. सर्व आचार्य परमेष्ठी यतीवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

# सर्व साधु परमेष्ठी का अर्घ

ज्ञान ध्यान तप में रत रहते हैं, जो उपसर्ग परीषह सहते हैं।
समता जो धारे हैं, मुनिवर हमारे हैं, करते हम गुरु पद नमन।।
क्योंकि, बड़े पुण्य से अवसर आया है,
मुनिवर का शुभ आशिष पाया है।।

ॐ ह्रः श्री साधु परमेष्ठी चरण कमलेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

# समुच्चय महाअर्घ

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन।
जैनागम जिन चैत्य जिनालय, जैन धर्म को शत् वन्दन।।
सोलह कारण धर्म क्षमादिक, रत्नत्रय चौबिस तीर्थेश।
अतिशय सिद्धक्षेत्र नन्दीश्वर, की अर्चा हम करें विशेष।।

**दोहा – अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, 'विशद' भाव के साथ।**
**चढ़ा रहे त्रययोग से, झुका चरण में माथ।।**

ॐ ह्रीं श्रीं अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, सरस्वती देव्यै, सोलहकारण भावना, दशलक्षण धर्म, रत्नत्रय धर्म, त्रिलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, नन्दीश्वर, पंच मेरु सम्बन्धी चैत्य-चैत्यालय, कैलाश गिरि, सम्मेद शिखर, गिरनार, चम्पापुर, पावापुर आदि निर्वाण क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, तीस चौबीसी, तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो नमः / ॐ ह्रीं श्रीं मन्तं भगवन्तं कृपाल संतं श्रीवृषभादि महावीर पर्यंत चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेव आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्य खंडे..... देशे.....प्रान्ते.....नाम्नि नगरे.....मासानामुक्तमे.....मासे.....शुभ पक्षे..... तिथौ.....वासरे.....मुनि आर्यिका श्रावक श्राविकानां सकल कर्म क्षयार्थं अनर्घ्य पद प्राप्तये समुच्चय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पुष्पक्षेपण करते हुए शांति पाठ बोलें)

# शांतिपाठ

**शांतिनाथ शांति के दाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।**
**परम शांत मुद्रा जो धारे, जग जीवों के तारण हारे।।**
**शरण आपकी जो भी आते, वे अपने सौभाग्य जगाते।**
**शांतिपाठ पूजा कर गाएँ, पुष्पांजलि कर शांति जगाएँ।।**
**जिन पद शांती धार कराएँ, जीवन में सुख शांति पाएँ।**
**जीवों को सुख शांति प्रदायी, धर्म सुधामृत के वरदायी।।**
**शांतिनाथ दुख दारिद्र नाशी, सम्यक्दर्शन ज्ञान प्रकाशी।**

**राजा प्रजा भक्त नर-नारी, भक्ति करें सब मंगलकारी।।**
**जैन धर्म जिन आगम ध्यायें, परमेष्ठी पद शीश झुकाएँ।**
**श्री जिन चैत्य जिनालय भाई, विशद बनें सब शांति प्रदायि।।**
(शान्तये शान्तिधारा-3) (दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत) (कायोत्सर्ग करोम्यहं)

# विसर्जन पाठ

**भूल हुई हो जो कोई, जान के या अन्जान।**
**बोधि हीन मैं हूँ विशद, क्षमा करो भगवान।।**
**ज्ञान ध्यान शुभ आचरण, से भी हूँ मैं हीन।**
**सर्व दोष का नाश हो, शुभाचरण हो लीन।।**
**पूजा अर्चा में यहाँ, आए जो भी देव।**
**करूँ विसर्जन भाव से, क्षमा करो जिन देव।।**

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः अर्हंदादि परमेष्ठिनः पूजन विधिं विसर्जनं करोमि। अपराध क्षमावतं भवतु।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।
(ठोने में पुष्पक्षेपण करें)

# 'आशिका लेने का मंत्र'

**पूजा कर आराध्य की, धरे आशिका शीश।**
**विशद कामना पूर्ण हो, पाँए जिन आशीष।।**

**जो मुस्करा कर जिया करते हैं, हँसकर गम पिया करते हैं।**
**वे इंसान के रूप में देवता हैं 'विशद' जो औरों को सहारा दिया करते हैं।।**